हमारे पूर्वज
हमारे हितैषी

संकलन
सुबोध कुमार जैन

संपादन
जुगल किशोर जैन

प्रकाशक
श्री जैन सिद्धान्त भवन
देवाश्रम, आरा (बिहार) 802301

समर्पण

देवाश्रम परिवार में

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० पं० चन्दा माँश्री,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए हैं ।

उन सभी की पावन

स्मृति को यह पुस्तक

'हमारे पूर्वज'

सादर समर्पित है ।

इस पुस्तक का प्रकाशन
श्रीमती शांति देवी निर्मलकुमार जैन स्मृति कोष
के सौजन्य से हो रहा है।

निवेदन

हमारे पूर्वज, परम् पू० दादी माँ आर्यिकारत्न चंदाबाई जी के स्वर्गारोहण के उपरान्त, मुझे उनके द्वारा लिखित दो लेख- एक छोटा और एक कुछ बड़ा, आश्रम से प्राप्त हुआ । जिसका शीर्षक स्वयं, उन्होंने लिखा था- **''हमारे पूर्वज''**

इन दोनों लेखों को पढ़कर हमें ऐसी प्रेरणा मिली कि हमलोग अपने सभी पूर्वजों की जीवनी के संबंध में अब तक -श्री जैन सिद्धांत भास्कर के अंको में, जब-जब जो लेख प्रकाशित हुए हैं, उन्हें इकट्ठा करके अध्ययन किया जाए । किन-किन पूर्वजों के विषय में, श्री जैन सिद्धांत भास्कर में, क्या प्रकाशित हुआ है और क्या प्रकाशित नहीं हुआ है। यह अध्ययन कर, उसी आधार पर प्रकाशित लेखों को इकट्ठा किया गया, लेख तैयार किए गए ।

अब वह पुस्तक-''हमारे पूर्वज'' प्रकाशित होकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है ।

इसमें हर उन लेखों का जो श्री जैन सिद्धांत भास्कर से उद्धृत किए जा रहे हैं, उल्लेख किया गया है ।

इसके अतिरिक्त, श्री जैन सिद्धांत भास्कर में समय-समय पर प्रकाशित श्रद्धाँजलियाँ मिली हैं जिनमें कि पूर्वजों के विषय में उल्लेख है, उसे भी प्रकाशित किया जा रहा है ।

देवाश्रम आरा-अभी भी परिवार का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। पूज्य पिताजी और चाचाजी के जीवन काल के उत्तरार्द्ध में विश्व युद्ध के कारण, उनके द्वारा जो भारत में प्रथमाप्रथम अल्यूमीनियम उत्पादन के लिए आसनसोल के पास विदेश से मशीनरी और तकनीकी ज्ञान मंगाकर फैक्ट्री खोली गई थी, विश्व युद्ध अचानक आरंभ हो जाने के कारण, मशीनों के महत्वपूर्ण हिस्से यूरोप से नहीं पहुँचने की वजह से बहुत बड़ी आर्थिक कठिनाइयाँ खड़ी हो गई थीं । तदुपरान्त भारत की नई सरकार ने 'जमींदारी-उन्नमूलन' भी कर दिया, जिससे कि अपने परिवार की बहुत बड़ी जमीन्दारी सरकार के हाथ में चली गई ।

इन कारणों से, परिवार वाले आरा के बाहर पटना-हथुआ-दिल्ली आदि स्थानों में व्यापार हेतु बिखर गए । पू० पिता जी ने भी बंगाल में कैलिम्पौंग

नामक हिल- स्टेशन पर कोठी बनवा ली तथा तिब्बत से व्यापार करने हेतु एक गद्दी भी खोल दी और मुझे साथ लेकर कई वर्षों तक हमलोग वहाँ रहे । परन्तु तभी चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया जिसके कारण भारत-तिब्बत का व्यापार लगभग समाप्त हो गया । दुर्भाग्यवश पूज्य पिता जी को बम्बई से आरा आते वक्त लकवा का दौरा पड़ा जिसके कारण कैलिम्पौंग में जो अनेक कोठियाँ बनवाई गई थीं और जो व्यापार चल रहे थे, सबको समेट दिया गया और हमलोगों का परिवार आरा वापस आ गया ।

अब स्थिति सौभाग्यवश ठीक चल रही है । जो नवयुवक आरा के बाहर गए है, वे सब अपना-अपना काम करते हुए परिवार का यश सम्वर्द्धन कर रहे हैं ।

श्री जैन सिद्धांत भवन, श्री जैन सिद्धांत भास्कर, श्री जैन बाला विश्राम, श्री जैन कन्या पाठशाला, आरा मूक-वधिर विद्यालय, श्री आदिनाथ नेत्र विहीन विद्यालय आदि जो परिवार द्वारा स्थापित कुछ संस्थाएं हैं तथा परिवार द्वारा प्रतिष्ठित जितने भी "जैन मंदिर" हैं, उन सभी की देखभाल और संरक्षण संतोषजनक चल रहा है ।

इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में, हमने कुछ लेख तैयार करके यह प्रयत्न किया है कि हमलोगों के परिवार के जितने भी प्रमुख मित्र और सहयोगी रहे हैं, उनके बारे में भी योग्य परिचय प्रकाशित किया जाए ।

इस परिवार ने एक "वट-वृक्ष" का रूप ले लिया है । परिवार में सभी को अपने पूर्वजों तथा इष्ट -मित्रों के विषय में जानकारी प्राप्त होने से अवश्य प्रसन्नता होगी और ऐसा सभी का प्रयत्न रहेगा कि यथासंभव सभी का आपस में मित्रवत्-भाव बना रहे ।

भाई युगल किशोर ने इस पुस्तक के संपादन में जिस उत्साह से सहयोग दिया है उसके लिए हम आभारी रहेंगे ।

हमारे पुत्र अजय कुमार के द्वितीय पुत्र पराग जैन ने **वंश वृक्ष चार्ट** भी तैयार किया है, उसे भी वे प्रकाशित कर रहे हैं । चि० पराग जैन ने इस पुस्तक के प्रकाशन में बहुत सहयोग दिया है, इसके लिए मैं उन्हें आशीर्वाद देता हूँ । हमारी शुभकामना है कि यह युवक श्री जैन सिद्धांत भास्कर / श्री जैन सिद्धांत भवन को अपना योगदान देता रहे । उसमें उत्साह और लगन है ।

अन्त में, मैं इस पुस्तक के संयोजन और प्रकाशन में जो कुछ भी अशुद्धियाँ हुई हों उसके लिए पाठकों से क्षमायाचना करता हूँ । हमारा प्रयत्न रहेगा कि पुस्तक का जब पुनः प्रकाशन हो, उस समय अशुद्धियों को दूर किया जा सके ।

इति शुभम्

10 जुलाई 1999

- सुबोध कुमार जैन

प्रकाशकीय

मुझे बचपन से ही अपने पूर्वजों के बारे में तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों को जानने की उत्सुकता रही थी। जब कभी मैं फुर्सत में होता, दादा जी से उनके बारे में पूछता। सभी बातें जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती और गर्व होता। मैं कितना भाग्यवान् हूँ, मेरा जन्म इस महान् परिवार में हुआ।

पूज्या दादी जी आर्यिकारत्न चंदा माँश्री के लेखों की पुरानी फाईल में से एक लेख, जिसका शीर्षक उन्होंने हमारे पूर्वज ही दिया था, के मिलते ही इसके प्रकाशन की योजना बन गई।

देवाश्रम परिवार ने अब वट-वृक्ष का रूप ले लिया है। हमने एक वंश-वृक्ष तैयार किया है तथा साथ ही परिवार के सभी सदस्यों का पता भी इस पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं। त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

आज के दौर में सभी अपने आप में व्यस्थ हैं यहाँ तक कि अपने निकट रिस्तेदारों से भी हमारा मिलना कम ही हो पाता है। ऐसे में इस पुस्तक के द्वारा परिवारजनों को परिवार के अनेक तथ्य एवं सूचनाएं जानने को मिलेंगी।

श्री जैन सिद्धान्त भवन के तत्वावधान में इस पुस्तक का प्रकाशन कराते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

अपने महान् पूर्वजों को हमारी सादर वंदना समर्पित है।

पराग जैन
सं० सचिव
श्री जैन सिद्धान्त भवन

15 जुलाई 1999

विषय - सूची

* देवाश्रम परिवार के हितैषी

हमारे पूर्वज

हमारे पूर्वज

♦ ब्र० पं० चन्दाबाई जी

वैश्य-कुल गोयल गोत्रोत्भव बाबू गणेशी लाल के पुत्र पं० प्रभुदास, अरहंतदास, जिनेश्वरदास एवं मुनेश्वरदास ये चारों ही हमारे ददिया ससुर थे। अरहंतदास एवं जिनेश्वरदास की कोई संतान नहीं थी। मुनेश्वरदास को एक लड़की थी जो विधवा होकर मर गयीं। प्रभुदासजी के दो विवाह हुए थे। पहले से एक लड़की हुई, उनका नाम कुन्दन बीबी था। उनको एक लड़का हुआ बलदेवदास उनके ही वंशज अब तक चले आ रहे हैं। जगदीपा बीबी आदि से और नाम मालूम हो सकते हैं।

प्रभुदास जी के दूसरे विवाह से एक पुत्र चन्द्र कुमार हुए तथा तीन लड़कियाँ, कन्नो बीबी, मन्नो बीबी तथा धन्नो बीबी हुईं । दो पुत्रियों के संतान न थीं । धन्नो बीबी को एक पुत्र महावीर बाबू थे, उनको भी अब कोई नहीं है। चन्द्र कुमार जी का विवाह बच्चूलालजी की चचेरी बहन चेंगन बीबी से हुआ था, जो कि हमारी सास लगती थीं। वह रिश्ता श्री देव कुमारजी, धर्मकुमार जी, नेमसुन्दरी और प्रेमसुन्दरी से है। श्री देव कुमारजी के दो पुत्र, श्री निर्मल कुमार और श्री चक्रेश्वर कुमार हुए। प्रभुदास जी की दो पुत्रियों की शादी आरा में तथा एक की छपरा में हुईं थी, जिनका विवरण ऊपर लिखा है ।

(उपर्युक्त लेख पूज्या दादीजी की एक पुरानी फाइल में दिनांक 1-8-90 को मिला। श्रीमती जगदीपा बीबी का देहावसान दो वर्ष पूर्व ही हो चुका है इसलिए जिन जानकारियों का उल्लेख लेख में जगदीपा बीबी से पूछने के लिए सुझाव दिया गया था, वह संभव नहीं हो सका । -सु० कु०)

■ ■ ■

इनमें से तीन भाइयों के संतान जीवित नहीं रही, केवल ज्येष्ठ बाबू प्रभुदासजी को सन्तति हुई। प्रभुदास जी के दो विवाह हुए। पहले से एक लड़की हुई कुन्दन बीबी, दूसरे से एक पुत्र चन्द्र कुमार तथा तीन पुत्रियाँ कन्नो बीबी, मन्नो बीबी तथा धन्नो बीबी हुईं । आप संस्कृत के विद्वान् थे तथा मंत्र-शास्त्र के भी अच्छे जानकार थे। आपलोग पहले विशेष धनवान नहीं थे, मगर एकाएक

लक्ष्मी की कृपा हुई और उक्त चारों बाबू साहब रोजगार में सफल होने लगे। एक भाई ने पटना नगर में काम किया, एक ने बनारस में काम किया, आरा में भी कुछ द्रव्य कमाया। बहुत थोड़े दिन जी कर द्वितीय पत्नी भी मर गई। तब से बाबू प्रभुदास जी और भी धर्म में तत्पर हो गये। प्रातः एक बार खाते थे। आपने ढाई लाख रूपये एक मुश्त धर्म दान देकर पांच मंदिर एवं बनारस में एक गंगा किनारे घाट बनवाया जो पुख्ता पत्थर का बना है।

(1) मंदिर और एक धर्मशाला काशी, भैदनी में बनवाया।

(2) द्वितीय मंदिर चन्द्रावती, बनारस में बनवाया।

(3) तृतीय मंदिर आरा नगर में बनवाया।

(4) चतुर्थ मंदिर तथा धर्मशाला कौशाम्बी, इलाहाबाद में बनवाया।

(5) पांचवा मंदिर गढ़वा (इलाहाबाद) में बनवाने का विचार किया, परन्तु यह पूरा नहीं हो सका, जमीन आदि ही ले सके।

आपने जैन धर्म के महान् शास्त्र गोम्मटसार आदि पढ़कर बहुत ज्ञान अर्जित कर लिए। कई जगह मिथ्यावादियों से वाद कर विजय पाई।

साधु सेवा भी आपने बहुत की। दो क्षुल्लिकाओं को जन्म पर्यन्त आहारादि देकर उनकी समाधि कराई। पुत्र चन्द्र कुमार जी को पढ़ाया तथा 8 वर्ष की अवस्था में उपनयन संस्कार किया और पश्चात् 4 पुत्र-पुत्रियों का विवाह कर दिया। पहले आपके पूर्वज बनारस में रहते थे। ये बनारस और आरा दोनों जगह कुछ दिन रहे, मगर पुत्रादि होने के बाद आरा में ही रहना तय कर लिया और पुत्र-पुत्रियों का विवाह आरा से ही किया। इस प्रकार थोड़े ही काल में एक बड़ी जमींदारी और कोठी आदि का सब कुछ स्वामीत्व आरा में अपने पुत्र बाबू चन्द्र कुमार जी को सौंप कर वि० संवत् 1930 के लगभग धर्मध्यान सहित 40 वर्ष तक एक भुक्ति व्रत का निर्वाह कर एक माह ज्वर और दस्त से पीड़ित रहकर समाधिमरण ले लिया। इनके तीन भाई पहले ही मरण को प्राप्त कर चुके थे। इस समय बाबू चन्द्र कुमार जी की अवस्था 22 वर्ष के लगभग थी। अपने घर का सब काम काज संभाल लिया, दो साल के बाद बाबू चन्द्र कुमार जी के पुत्ररत्न बाबू देवकुमार जी का वि० संवत् 1933, चैत्रवदी 8, प्रातःकाल 8 बजे जन्म हुआ। इस समय बाबू चन्द्र कुमारजी को बड़ा हर्ष हुआ और बहुत उत्सव मनाया, दानादि देकर याचकों का सम्मान किया । बाबू देव कुमारजी बढ़ने लगे, क्रमशः इनके बाद सं० 1934 में एक कन्या नेमसुन्दरी का जन्म हुआ और संवत् 1938, आषाढ़ कृष्ण 7, रविवार को द्वितीय पुत्र बाबू धर्मकुमार जी का जन्म हुआ, पश्चात् एक कन्या प्रेम सुन्दर हुई। इस प्रकार 8 साल के अन्दर दो पुत्र

और दो पुत्रियां बाबू चन्द्र कुमार जी के हुए।

इस समय पुत्र-पुत्रियों सहित उक्त बाबू साहब बहुत सुख से रहने लगे। बाबू देवकुमार जी का विद्या संस्कार कराया तथा कर्ण छेदन बहुत उत्सवयुक्त किया। इतना ही कर पाये थे कि कालबली की वक्रक्रीड़ा ने अपना प्रवेश आरंभ किया। बा० चन्द्र कुमार जी अस्वस्थ रहने लगे, यहां तक कि उनको पूर्ण विश्वास हो गया कि हम अब ज्यादा नहीं जीयेंगे और अपने बाद बाल बच्चों के इन्तजाम के वास्ते बहुत चिंतित रहने लगे। धर्म की भी सुध आई और बहुत व्रत सहित रहने लगे। कोर्ट ऑफ वार्ड का उनका इरादा हो गया, मगर जीते जी सरकार को कोर्ट देना पसन्द न था आखिर में मरण के एक दो दिन पहले निश्चित हो गया कि कोर्ट ऑफ वार्ड का इन्तजाम ठीक हो गया है तो बाबू जी की आत्मा को शांति मिली। बीमार रहकर सं० 1943 के करीब सारे कुटुम्ब को बिलखते हुए शोक सागर में डुबोकर स्वर्गवासी हो गए। चारों बच्चों का लालन पालन माता के निकट कोर्ट की निगरानी में बड़ी हिफाजत और आराम के साथ होने लगा।

यद्यपि संसार में सब प्राणी काल व्यतीत करते हैं, मगर कोई महात्मा ऐसे हो जाते हैं, जो कालपूर्ण कर बिदा होने पर भी अपना यश संसार में छोड़ जाते हैं, और उक्त यशरूपी हस्ति पर सवार होकर सदैव जीते रहते हैं, इन्हीं को यश की माला और और जीव करते हैं और अनुकरण कर अपना कर्म करते हैं।

बाबू देव कुमार जी भी ऐसे ही एक महात्मा थे। जहां आपके लगभग 10 वर्ष की अवस्था में पिता का वियोग हो गया तथा सिवाय माता के और कोई भी बड़ा शिखर नहीं रहा, यह समय कैसा कठिन है। विषम चोरों को चोरी करने का पूरा मौका आ लगा, तब भी बाबू साहब जैसे महात्मा को कौन भुला सकता है। उनको कोई बुरी आदत नहीं लगी बल्कि ज्ञान-चरित्र की दिन प्रतिदिन तरक्की ही होती रही। यहां आरा नगरस्थ जिला स्कूल में बाबू साहब इंगलिश तथा संस्कृत आदि विषय पढ़ने लगे। मैट्रीकुलेशन की परीक्षा में बैठे और पास हो गए। अब तक पढ़ना बहुत तेजी के साथ होता रहा, मगर इसके बाद स्वास्थ कुछ बिगड़ गया, इसलिए पढ़ने में कुछ मन्दता आ पड़ी, पर अनुभव दिन दूना बढ़ता ही रहा। 17 वर्ष की अवस्था में बाबू साहब का विवाह, शुभ मुहूर्त सं० 1950 के करीब में बाबू लक्ष्मी चन्द्र जी 'रईस' की सुपुत्री अनूपमाला जी के साथ बड़े समारोह से हुआ। पूर्व पुण्य से आपको गुणवती रूपवती पत्नीश्री अनूपमाला बड़ी वल्लभा हो गई। यहां की पढ़ाई पूरी होने पर एफ० ए० के लिए बाबू साहब बांकीपुर गये। वहां कॉलेज में विद्याध्ययन शुरू किया और बराबर

पढ़ते रहे।

बाबू साहब धर्म के पूरे पिपासु थे। धर्म शास्त्रों का भी खूब अध्ययन किया। 20 वर्ष की अवस्था में एक मुनि दक्षिण से यहां पधारे थे, उनसे यज्ञोपवीत्र धारण किया और शील व्रतादि धारण कर श्रावक पदवी के योग्य हो गए। कोर्ट ऑफ वार्ड छूटकर गद्दी मिल गई।

23 वर्ष की अवस्था में बाबू साहब ने अपने लघु भ्राता का विवाह बड़े समारोह से 15 हजार रूपया खर्च कर किया। 23 वर्ष की अवस्था में बाबू साहब को एक पुत्र बाबू निर्मल कुमार उत्पन्न हुए। बाबू साहब ने इतनी छोटी अवस्था में ही जाति, धर्म की सेवा करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझ लिया और जैन गजट की सम्पादकी करना स्वीकार कर लिया।

महासभा के आप मेम्बर थे। संवत् 1957 की साल में आरा में प्लेग रोग का बड़ा प्रकोप रहा और सब लोग घर छोड़ भागने लगे। इस समय धर्मज्ञ बाबू साहब भागकर श्री सम्मेदशिखरजी गये वहां यात्रा की और विशेष पुण्य का बंध किया। परन्तु कर्म की विचित्र गति है, यहां पर बाबू साहब के भ्राता धर्म कुमार का चार दिन प्लेग से बीमार रहकर स्वर्गवास हो गया। यहां पर बाबू साहब ने बहुत साहस किया, प्रिय बन्धु का वियोग यद्यपि उनके जीवन को फीका बनाने का कारण था, तब भी बड़े धैर्य सहित निज भ्राता का समाधिमरण कराया। वहां के खराब इन्तजाम से डॉक्टर आदि ने बहुत सताया। पर साहसी बाबू साहब सब कुछ समय पर करके कुटुंब सहित घर लौट आये।

(उपरोक्त पू० मॉंश्री का लिखित कथन उनके ही शब्दों-वाक्यों की प्रतिलिपि शशि प्रभा जैन, प्राचार्या, श्री जैन बाला विश्राम उच्च विद्यालय, आरा द्वारा दिनांक 8 .4 .1995 को की गई ।)

❖

पं० प्रवर बाबू प्रभुदास जी के यशस्वी-वंश

कालक्रमिक विवरण (ई० 1800 से ई० 1932)

♦ विदुषीरत्ना पं० ब्रजबाला देवी

♦ सुबोध कुमार जैन

1857 सं०, 1800 ई०

बाबू प्रभुदास के पितामह लाला मवासी लाल जी शाहजादपुर (उ० प्र०) छोड़कर अपने तीन पुत्रों श्री गणेशी लाल जी, श्री मिट्ठू लाल जी एवं श्री रामलाल जी के साथ बनारस सपरिवार आकर बसे। एक समय में शाहजादपुर नगरी में जैनियों और जैन मंदिरों की बड़ी संख्या थी पर कालान्तर में ऐसा नहीं रहा और न व्यापारिक केन्द्र ही रहा।

1859 सं०, 1802 ई०

श्री गणेशी लालजी के प्रथम पुत्र बाबू प्रभु दासजी का जन्म हुआ। बाद में तीन और पुत्रों श्री अरहन्त दास, श्री जिनेश्वर दास और श्री मुनेश्वर दासजी के जन्म हुए।

1872 सं०, 1815 ई०

पूज्य पिता श्री गणेशी लालजी ने भदैनी, बनारस में गंगा के किनारे आवास हेतु मकान और जमीन ले लिए।

1886 सं०, 1830 ई०

बाबू प्रभुदास जी का विवाह हुआ। वे बनारस में आरा के सुप्रसिद्ध जैन कवि और साधक वृन्दावन जी (जन्म 1842) तथा भट्टारकों के निकट सम्पर्क में आए। धार्मिक वातावरण बना और मनन, अध्ययन, पूजन-पाठ तथा लेखन का क्रम बन गया। दुधारस कथा लिखी।

1889 सं० 1832 ई०

1. बाबू प्रभुदास जी अपनी पैत्रिक भूमि शाहजादपुर गए और यमुना के किनारे कोसम गांव के निकट प्राचीन वत्स देश की राजधानी कौशाम्बी के ऐतिहासिक खंडहरों में बिखरी प्राचीन मूतियाँ एकत्रित कर कालान्तर में आरा के महाजन टोली स्थित अपने जिनालय में लाकर विराजमान कीं। हस्तलिखित ग्रन्थों

को भी एकत्रित करना आरम्भ किया। तीर्थंकर पद्मप्रभु के गर्भ, जन्म और ज्ञान कल्याणक स्थान पर निर्मित प्राचीन जीर्ण गढ़वा मंदिर की यात्रा की, ततपश्चात् फफोसा, चम्पाहा बाजार, पाली तथा अन्य मंदिरों और खण्डहरों के दर्शन किए।

2. शाहजादपुर के सुप्रसिद्ध कवि बिनोदी लाल जी के निकट सम्पर्क में आए।

1891 सं०, 1834 ई०

कौशाम्बी गढ़वा का जीर्णोद्धार आरम्भ कराया। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों एवं चित्रों को इकट्ठा करने तथा संभाल कर रखने का दुरूह कार्य को उन्होंने आगे बढ़ाया। धर्म अध्ययन-मनन का क्रम चल रहा था। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषाओं का इन्हें ज्ञान था। इन भाषाओं में पठन-पाठन का क्रम चल रहा था।

1892 सं०, 1836 ई०

बाबू प्रभुदास जी ने 24 वर्ष के अल्पवय में ही एकाहार व्रत लिया और अगले 40 वर्षों तक 24 घंटे में मात्र एक बार भोजन करने के इस नियम का अखण्ड आजन्म पालन किया। दर्शन-पूजन के उपरान्त ही भोजन करने का नियम भी ले लिया था। उसे भी अत्यंत भक्ति पूर्वक आजन्म पालन किया । इसी समय पं० परमेष्ठी सहाय और पंडित जगमोहन दास दो विद्वान् कवि थे जो शास्त्रीय लेखन और पठन-पाठन किया करते थे। डॉ० नेमिचन्द शास्त्री ने इनके विषय में लिखा है (भगवान महावीर और आचार्य परम्परा भाग 4 पृष्ठ 3-5) जिससे ज्ञात होता है कि परमेष्ठी जी ने अपनी कृति 'अर्थप्रकाशिका' जयपुर निवासी तथा सुप्रसिद्ध बचनिकार पं० सदासुख जी के पास संशोधनार्थ भेजी थी। पं० सदासुखजी का आरा से घनिष्ठ सम्पर्क रहा होगा।

पं० जगमोहन दास की कृति 'धर्मरत्नोद्योत' नाम से पं० पन्नालाल जी बाकलीलाल के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो चुकी है। इन दोनों को हिन्दी जैन साहित्य के इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता।

1896 सं, 1839 ई०

प्रभुदास जी की प्रथम पत्नी से एकमात्र पुत्री कुन्दन बीबी हुई जिनका विवाह आरा के रईस बाबू प्रद्युम्न कुमार के पुत्र श्री केशर दास जी से सम्पन्न हुआ। इसी वर्ष प्रद्युम्न कुमार जी ने आरा के सुप्रसिद्ध चन्द्र प्रभु मंदिर का निर्माण कराया। इसके लिए सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी बाबू कुंवर सिंह जी ने जमीन दान की थी। यक्ष और यक्षिणी ज्वालामालिनी देवी की नयनाभिराम मूर्तियां भी विराजमान कीं । आरा शहर की जगह आरामनगर नाम का उल्लेख मूर्तियों में मिलता है।

पत्नी की मृत्यु होने पर दूसरा विवाह हुआ। इनसे इन्हें एक पुत्र चन्द्र कुमार जी और तीन पुत्रियां हुई मन्नो बीबी, कन्नो बीबी और भन्नो बीबी।

पुत्र चन्द्र कुमार जी का विवाह आरा के सुप्रसिद्ध मुंशी खाने के बच्चू लालजी की सुन्दर, धार्मिक चचेरी बहन चेंगन बीबी से सम्पन्न हुआ।

1907 सं०, 1850 ई०

बाबू प्रभुदास जी ने आरा में जमींदारी खरीदना प्रारम्भ किया। उनके द्वारा संस्कृत-हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज एवं अध्ययन के क्रम चलते रहे। वे स्वयं भी लिखा करते थे तथा पुत्र-पुत्रियों को धार्मिक शिक्षा दिया करते थे। पूजा पाठ में उनका काफी समय निकलता था। यात्राओं में वे छोटी सुवर्ण मूर्ति एक छोटी पेटी में रखकर गले में बांधे रखते थे (यह छोटी मनोज्ञ प्रतिमा अभी भी उपलब्ध है) ताकि नित्य पूजा-पाठ और उनके उपरान्त ही एकाहार करने का क्रम भंग नहीं हो। कपड़ा घर में धुलवाते थे। नित्य तेल मर्दन कराते एवं वस्त्र आदि का परिग्रह नियमित रखते थे।

1908 सं०, 1851 ई०

ग्वालियर गद्दी के सुप्रसिद्ध भट्टारक जिनेन्द्र भूषण ने बाबू प्रभुदास जी को मंदिरों के निर्माण कराने का व्रत दिलाया। इन्होंने असमर्थता व्यक्त की तो उन्होंने कहा कि व्रत ले लो, शुभ कार्य अवश्य पूरा होगा।

1910 सं०, 1853 ई०

भदैनी के गंगा तट पर अपने निवास स्थान के निकट बड़ी धर्मशाला और घाट तथा धर्मशाला की छत पर तीर्थंकर सुपार्श्व प्रभु का मनोज्ञ मंदिर भगवान के जन्म स्थान की पुण्य स्मृति में निर्माण कराया। आज भी वह घाट प्रभुदास जैन घाट कहा जाता है। इनके पौत्र देव कुमार जी ने कालान्तर में यहीं स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना की।

1912 सं०, 1855 ई०

अपने तीनों भाइयों श्री अरहन्त दास, श्री जिनेश्वर दास एवं श्री मुनीश्वर दास के साथ भदैनी मंदिर बनारस की प्रतिष्ठा माघ सुदी पंचमी रविवार की संध्या रेवती नक्षत्र में (शिला पट्ट के अनुसार) कराई शिला पट्ट का शिलालेख भास्कर के जून 1988 के अंक 41-1 में छपा है।

वे स्वतंत्रता सेनानी वीर कुंवर सिंह के निकट सम्पर्क में आ चुके थे। इन्हें ई० 1857 के पूर्व तथा सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मित्रवत यथाशक्ति सहयोग दिया था। इसके साक्षी कागजात मौजुद थे जो कि 1953 ई० में जमींदारी उन्मूलन के बाद सरकार द्वारा इन कागज पत्रों के जप्त हो जाने पर लगभग सभी बिखर गए।

1915 सं०, 1858 ई०

बाबू प्रभु दास जी की द्वितीय पत्नी से बाबू चन्द्र कुमार जी का जन्म हुआ,

इन्हीं से तीन पुत्रियां भी थीं। जिनमें से दो का विवाह आरा में और एक का छपरा में हुआ था। तीनों के नाम थे मन्नो बीबी, कन्नो बीबी और धन्नो बीबी।

1918 सं०, 1861 ई०

'दुधारस की कथा' पद्य में पं० प्रभुदास जी द्वारा स्वरचित हस्ताक्षरित एवं हस्तलिखित 11 पृष्ठों और 58 चौपाइयों तथा दोहों में वैशाख सुदी 9, सं० 1918, शुक्रवार की प्रति भवन में उपलब्ध है। इसका प्रकाशन श्री जैन सिद्धांत भास्कर के दिसम्बर 1988 के अंक में हुआ है। ऐसी आशा की जाती है कि पं० प्रभुदास की और भी काव्य कृतियां हैं। शायद काल क्रम से भवन के भण्डार में या और किन्हीं पुत्रियों के यहां बिखरी पड़ी हों।

1919 सं०, 1862 ई०

कौशाम्बी, पाली, फाफोसा और चन्द्रावती में एक साथ एक जैसे मंदिरों के निर्माण हेतु कटे छंटे पत्थर मंगवाये। कौशाम्बी (गढ़वा) जीर्णोद्धार एवं नये मंदिर का निमार्ण कार्य आरंभ किया। पाली में मंदिर निर्माण के लिए जमीन खरीदी। इनके पुत्र बाबू चन्द्र कुमार जी ने बाद में कौशाम्बी मंदिर एवं धर्मशाला निर्माण कार्य पूरा कराया। पुराने मंदिर जी में चरणपादुका पद्मप्रभु भगवान की सम्वत् 1600की है। (देखिए कौशाम्बी का इतिहास ले० सुबोध कुमार)

1920 सं०, 1863 ई०

आरा के महाजन टोली के अपने आवास की छत पर एक शिखरबंद बड़ा मंदिर बनवाकर तीर्थंकर शांतिनाथ की सर्वतोभद्र लगभग 4 फुट ऊंची खड्गासन् प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। ग्वालियर घराने के 13 वीं पीढ़ी के भट्टारक राजेन्द्र भूषण के उपदेशों से भी वे प्रभावित थे। कौशाम्बी के खंडहरों से तथा अन्य स्थानों से एकत्रित की हुई अनेक प्राचीन प्रतिमाओं को यहाँ इन्होंने विराजमान किया। अपने द्वारा एकत्रित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों को सुरक्षित किया। आज के सुप्रसिद्ध जैन सिद्धांत भवन का इतिहास इसी समय से आरंभ हुआ, मानना चाहिए।

1927 सं०, 1870 ई०

महादेवा के अपने नए मकान (वर्त्तमान देवाश्रम) के ऊपर तीर्थंकर शीतलनाथ का एक चैत्यालय स्थापित कर यहीं वे रहने लगे।

1930 सं०, 1873 ई०

बाबू प्रभु दास जी के छोटे भाई बाबू जिनेश्वर दास जी मुकदमें आदि का कार्य देखा करते थे। इनको कोई संतान नहीं थी।

1931 सं०, 1874 ई०

बाबू प्रभु दास जी के जिम्मे श्री सम्मेद शिखर के प्रथम प्रबंध समिति का

कार्यभार ग्वालियर गद्दी के भट्टारक राजेन्द्र भूषण ने दिया। इनके पुत्र चन्द्र कुमार जी का विवाह मुंशीखाना, आरा के श्री बच्चू लाल जैन की चचेरी बहन चेंगन बीबी से हुआ। चेंगन बीबी का बड़ा तैल चित्र भवन में सुशोभित है। बाबू प्रभुदास जी, उनके भाइयों, उनके पुत्र चन्द्रकुमार जी तथा द्वितीय पौत्र धर्मकुमार जी के चित्र उपलब्ध नहीं हुए हैं।

1933 सं०, 1877 ई०

बाबू प्रभुदास जी का देहावसान 64 वर्ष की आयु में हुआ।

1934 सं०, 1877 ई०

पुत्र चन्द्रकुमार जी और चेंगन बीबी से यशस्वी और देव समान प्रथम पौत्र बाबू देवकुमार जी का जन्म 7 मार्च 1877 में हुआ।

1940 सं०, 1883 ई०

पुत्र चन्द्रकुमार जी से अत्यंत सुन्दर और गौरवर्ण द्वितीय पौत्र धर्मकुमार जी का जन्म हुआ। चन्द्रकुमार जी को दो पुत्रियाँ भी थीं। बड़की बीबी और छोटकी बीबी। बड़की बीबी नेम सुन्दरी जी का विवाह दानवीर बाबू हर प्रसाद जी के एकमात्र पुत्र बाबू धनेन्द्र दास से और छोटकी बीबी प्रेम सुन्दरी जी का आरा के ही फर्म राजेन्द्र कुमार कुंवर जी के मालिक बाबू कुंवर जी से हुआ।

1944 सं०, 1887 ई०

बाबू प्रभुदास जी के पौत्र बाबू देवकुमार जी ने चन्द्रावती बनारस के चन्द्रप्रभु भगवान के मंदिर की प्रतिष्ठा की और धर्मशाला निर्माण कार्य पूरा किया। उन्हें कोर्ट ऑफ वार्ड यानी सरकारी प्रबंध से स्टेट वापस मिल गया था।

1956 सं०, 1899 ई०

द्वितीय पौत्र बाबू धर्म कुमार जी का विवाह मथुरा के सुप्रसिद्ध कांग्रेसी राजनेता और प्रान्तीय धारा सभा के सदस्य श्री नारायण दास की पुत्री चन्दा बाईजी से हुआ। धर्मकुमार जी बी० ए० के मेधावी विद्यार्थी थे। संस्कृत की शिक्षा पं० लालाराम जी शास्त्री ने दी थी जिसे वह धारा प्रवाह बोलते थे।

1957 सं०, 1900 ई०

आरा में प्लेग की महामारी हुई। इसी बीमारी से धर्मकुमार जी का देहावसान श्री सम्मेदशिखर की यात्रा के उपरांत 17 वर्ष की अल्प आयु में गिरिडीह में हुआ। ज्येष्ठ भ्राता इस वज्रपात को झेलने के क्रम में संन्यासी हो गए। कालक्रम में चंदाबाई जी पढ़-लिखकर ई० 1921 में श्री जैन बाला विश्राम की संस्थापिका माँश्री ब्र० चंदाबाई जी देशभर में प्रसिद्ध हुईं। आश्रम को देखने महात्मा गांधी, कस्तूरबा, मालवीय जी, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, नेहरूजी, विनोबा भावे आदि अनेकानेक नेता इस महान् संस्था में बराबर आते रहे। समाज के सर हुक्मचंद जी,

शीतल प्रसाद जी, वैरिस्टर चम्पतराय जी वगैरह सभी नेता आए।

1958 सं०, 1901 ई०

बाबू प्रभुदास के प्रपौत्र बाबू देवकुमार जी के प्रथम पुत्र बाबू निर्मलकुमार का जन्म 28 जनवरी 1901 ई० को भोर में हुआ।

1960 सं०, 1903 ई०

बाबू प्रभुदास जी के द्वितीय प्रपौत्र तथा बाबू देवकुमार जी के द्वितीय पुत्र श्री चक्रेश्वर कुमार जी का जन्म हुआ। बाबू प्रभुदास जी की धर्मशाला में देव कुमार जी ने बनारस में पू० गणेश प्रसाद जी वर्णी के नेतृत्व में स्याद्वाद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की। पूज्य भट्टारक हर्ष कीर्ति जी महाराज के द्वारा बाबू प्रभुदास जी के एकत्रित हस्तलिखित ग्रंथों के भंडार को तथा स्वयं पूज्य भट्टारक जी ने बक्स भरे अपने भंडार के द्वारा बाबू देवकुमार जी ने समाजवालों के सम्मुख श्री शांतिनाथ के मंदिर पर जैन पुस्तकालय की स्थापना कराई । आरा जैन समाज की ओर से भी कुछ ग्रंथ अर्पित हुए।

1965 सं०, 1908 ई०

पौत्र बाबू देवकुमार जी का 31 वर्ष की आल्पायु में साढ़े तीन माह की बीमारी के बाद कलकत्ते में देहावसान हो गया। इसके पूर्व उन्होंने दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान शास्त्रोद्धार के लिए अभूतपूर्व कार्य किया। एक लाख की जमींदारी का दान, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का सभापतित्व एवं जैन गजट का सम्पादन करके अपूर्व यश अर्पित किया।

1975 सं०, 1918 ई०

कौशाम्बी मंदिर का निर्माण बाबू प्रभुदास जी ने सं० 1959 सं० 1862 ई० में आरम्भ कराया था। तदुपरांत उनके पुत्र बाबू चन्द्र कुमार और बाबू देवकुमार ने निमार्ण कार्य पूरा कराया। प्रतिष्ठा कराने के पूर्व ही दोनों अपने अपने समय में बीमार पड़े और लघुवय में कालकलवित हो गए थे। देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मल कुमार जी ने ई० सन् 1918 में प्रतिष्ठा के दौरान बहुत अस्वस्थ होकर भी पूजा प्रतिष्ठा पूरी कराई थी। पत्नि श्रीमती शांति देवी सहित इन्द्र-इन्द्राणी दोनों बने थे। ब्र० पंडिता चंदाबाई जी ने परिवारिक बाग धनुपुरा अन्तर्गत श्री जैन बाला विश्राम की स्थापना की। ई० 1932 में बाबू निर्मल कुमार जी और चक्रेश्वर कुमार जी ने बाग और बंगला दान-पत्र लिखकर रजिस्ट्री किया।

1989 सं०, 1932 ई०

बाबू प्रभुदास की पुत्रवधू चेंगन बीबी का देहावसान 74 वर्ष की आयु में हुआ। चन्दा बाई एवं श्री देवकुमार जी की पत्नी अनूपमाला देवी ने तथा चेंगन बीबी की पुत्री नेमसुन्दरी जी ने समाधिमरण के नियम दिलाए। उनका मृत्यु

महोत्सव हुआ। वे अपने पीछे दोनों पौत्रों, पौत्रबधूओं तथा पुत्रों-पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गईं ।

दोनों पौत्रों बाबू निर्मल कुमार एवं चक्रेश्वर कुमार ने समाज, व्यापार, जमींदारी, उद्योग तथा राजनीति के क्षेत्रों में भरपूर सफलता प्राप्त की थी और परिवार की कीर्ति का बिहार प्रांत के बाहर संवर्धन किया था। कृषि और चीनी उद्योग के क्षेत्र में बिहार प्रांत में अग्रणी स्थान प्राप्त किया था। सिद्धांत भवन, श्री जैन बाला विश्राम और देवाश्रम कोठी की नई भव्य इमारतों के साथ-साथ यहां के कार्य कलापों के द्वारा बिहार प्रदेश में धार्मिक, शैक्षणिक और व्यापारिक क्रियाओं के केन्द्रबिन्दु तो बन चुके थे, राजनीति में भी डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० अनुग्रहनारायण सिंह, बाबू जगजीवन राम, श्री बलिराम भगत और श्री अब्दुल कयूम अन्सारी से दोनों भाइयों का अपना घनिष्ठ संबंध बना हुआ था। देश के बड़े से बड़े सभी नेता महात्मा गांधी, पं० नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, विनोवा भावे आदि का आरा आने पर इनका आतिथ्य स्वीकार करते थे। देश के स्वतंत्रता संग्राम में इनका सहयोग महत्वपूर्ण माना जाता है। बाबू निर्मल कुमार जी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् के अध्यक्ष तथा भारत के वाइसराय के काउंसिल ऑफ स्टेट के माननीय सदस्य चुन लिए गए थे। दोनों बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष हुए थे। फिर चक्रेश्वर कुमार जी कांग्रेस टिकट पर बिहार विधान सभा के सदस्य हुए और अल्यूमीनियम उत्पादन का भारत में आरम्भ का श्रेय दोनों भाइयों को है।

ब्र० पं० चंदाबाई जी ने बाला विश्राम के द्वारा महिला शिक्षा और जागृति के क्षेत्र में तथा भारतवर्षीय श्री जैन महिला परिषद् का संचालन करके और श्री जैन महिलादर्श का सफल सम्पादन करके अपूर्व यश सम्मान प्राप्त किया।

बाबू निर्मल कुमार एवं चक्रेश्वर कुमार जी द्वारा जैन सिद्धांत भवन को दी गई अमूल्य सेवाओं के उपलक्ष में दिनांक 28-3-77 को श्री शांतिनाथ प्रभु मंदिर पर श्री जैन सिद्धांत भवन के तत्वावधान में श्री निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार दीर्घा का भव्य उद्घाटन बिहार के तत्कालीन लोकायुक्त श्रीधर वासुदेव सोहनी आई० सी० एस० के द्वारा सम्पन्न हुआ। इसकी स्मृति में मार्बल पत्थर पर स्मृति पट्ट लगा हुआ है। अंग्रेजी में यह गैलरी **'एन० के० सी० के० जैन गैलरी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर'** के नाम से प्रसिद्ध है।

(साभार-श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-43, भाग-1, 2)

❖

पं० प्रवर प्रभुदास निर्मित सुपार्श्व-प्रभु मंदिर, भदैनी, वाराणसी का शिलापट्ट

◆ पं० नेमिचंद्र जैन, प्राचार्य
श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी

श्री मत्सुपार्श्व-जिनदेव इहोर्द्धलोका
दागत्य जन्म धृतवान परो दिनेशः।
वाराणसीमाद्य समस्त-पदार्थवेदी
लोकेतरार्थ सकल-प्रकट प्रकाशी ॥1॥
तज्जन्म मंलगृहं भवि सुप्रसिद्धम्
पक्षेन्दुरन्धु-शशि-सम्मित विक्रमाब्दे (1912)
सन्माघमास-शुचि पंचमिसूर्यवारे
साध्येऽन्त्यमें वृषपुरे परिपूर्णमासीत्॥2॥
अग्रोतकान्वय सुगोयल गोत्र-काष्ठा
संघेऽभवत् परमसाधु मवासिलालः।
तत्यागंजः परमसाधु गनेशिलालः
पुत्रस्तु तस्य सुकृति प्रभुदाससंज्ञः ॥3॥
तस्यानुजोऽप्यनु जिनेश्वरदाससंज्ञः
तस्यानुजोऽप्यनु जिनेश्वरदाससंज्ञः।
तस्यानुजोऽप्यनु मुनीश्वरदाससंज्ञः।
स्तै र्भातृभिः कृतमिदं सुचिरं विभातु॥4॥

अद्वितीय सूर्यरूप-समस्तपदार्थवेता-सकल लोकेतरार्थ-साक्षात्प्रकाशी श्री सुपार्श्व जिन देव ने स्वर्ग लोक से आकर वाराणसी में जन्म लिया। उनके नाम से पृथ्वी पर प्रसिद्ध यह सुपार्श्वनाथ जिन-मंदिर धर्मपुरी (वाराणसी) में मिती सुदी 5 रविवार की संध्या को रेवती नक्षत्र विक्रम सं 1912 में अग्रवाल कुलोत्पन्न गोयल गोत्रीय काष्ठा संघ में परमसाधुरूप मवासीलाल के पुत्र गणेशीलाल उनके पुण्यात्मा सुपुत्र प्रभुदास और उनके गुणवान छोटे भाई अरिहंतदास तथा उनके भी छोटे भाई जिनेश्वरदास तथा उनके भी छोटे भाई मुनीश्वरदास इन भाईयों द्वारा निर्मापित जिनालय चिरकाल तक शोभायमान हो। श्री ॥ श्री ॥ ह्रीं ॥

(सभार: श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-41, भाग-1) ❖

पं० प्रवर बाबू प्रभुदास जी लिखित
'दुधारस कथा'
की कुछ पंक्तियाँ उनकी लिपि में

♦ सुबोध कुमार जैन

(द्वादश बरस करयो मन लाय ।)
उद्यापन करि सब विधि राय ।।
अत समाधि मरण करि सोय ।
त्रिया लिंग छेदि सुर होय ।।55।।

भव चौथे जो मुक्ति जाय ।
च्युत स्वर्ग विषै ठहराय ।।
जो जीव व्रत करें मन लाय ।
कर्म काटि निश्चै सिव जाय ।।56।।

गुलाल कीर्ति गुः शिष्य सुजान ।
कथा करी भाषा मन आन ।।
हीन अधिक जो अक्षर होय ।
बुधजन शुद्ध करौ सुख होय ।।57।।

मैं तो अल्प बुद्धि ही लई ।
क्षिमा भाव धरियों बुद्धि मई ।।

दोह- कथा कोस में जो कहयो ताको देखि विचार ।
सेवक भाषा मन धरी पढ़ो भव्य चितधार ।।
इति दुधारस द्वादशी कथा समाप्त ।

लिख्यतां प्रभुदास अग्रवाल मिति वैशाख सुदी 9 वार शुक्रवार संवत् ।। 1915 ।।

(पं० प्रवर बाबू प्रभुदास जी द्वारा हस्तलिखित ग्रंथ दुधारस कथा काव्य के अंतिम पृष्ठ के मूल चित्र के नीचे उसको आधुनिक हिन्दी टाईम में प्रस्तुति करण किया गया है। यह 8 इंच 6 इंच का ग्रंथ कुल 13 पृष्ठों में है और श्री जैन सिद्धांत भास्कर में यह सम्पूर्ण काव्य कृति माह दिसम्बर ई० 1988 भाग-41 अंक-2 में प्रकाशित की जा चुकी है। इस ग्रंथ की मूल हस्तलिखित प्रति श्री जैन सिद्धांत भवन, आरा के भण्डार में सुरक्षित है ।)

(साभार-श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-42, भाग-2)

❖

पं० प्रवर प्रभुदासजी कृतित्व-व्यक्तित्व और वंशवृक्ष का संक्षिप्त परिचय

♦ सुबोध कुमार जैन

राजर्षि बाबू देवकुमार जी जैन के पूज्य पितामह प्र० प्रवर प्रभुदास जी, आरा के सुप्रसिद्ध देवाश्रम परिवार के संस्थापक थे। उनका जन्म वाराणसी में हुआ था और लगभग ई० 1850 ई० में वे आरा चले आये थे और यहां उन्होंने महादेवा मोहल्ले में अपना निवास स्थान बना लिया था और वहीं ऊपर छत पर एक अत्यंत मनोरम मंदिर जी का निर्माण कराया था जिसमें मूल सर्वताभद्र प्रतिमा तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान की लगभग साढ़े तीन फुट ऊंची उन्होंने सं० 1920 तद्नुसार ई० 1863 में प्रतिष्ठित कराई और बड़े धूमधाम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी हुई। मंदिर जी में उन्होंने कौशाम्बी, बनारस आदि स्थानों से अनेक प्राचीन प्रतिमाएं लाकर यहां विराजित की। यह लाल मंदिर आज भी बाबू प्रभुदासजी के नाम से सुप्रसिद्ध है।

आरा में प्रभुदास जी ई० 1857 के सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी बाबू कुंवर सिंह के निकट संपर्क में आये और ऐसा कहा जाता है कि उनके निमन्त्रण पर जगदीशपुर भी गये। आरा जिला में उन्होंने पचासों गांव खरीदे और एक बड़ी जमींदारी कायम की। समय-समय पर उन्होंने आवश्यकतानुसार बाबू कुंवर सिंह को बराबर आर्थिक सहयोग दिया जिससे कि इन लोगों में अत्यधिक आपसी सद्भाव एवं मैत्री कायम हो गयी और वह अंत तक इनलोगों ने निभायी। बाबू कुंवर सिंह द्वारा हस्ताक्षरित कागज है, जिनसे यह बात सिद्ध होती है।

बाबू प्रभुदास जी के पितामह लाला मवाशी लालजी इलाहाबाद के निकट शाहजादपुर के रहने वाले थे और वे लगभग 1800 ई० में शाहजादपुर छोड़कर बनारस सपरिवार चले आये थे और बनारस में स्थाई रूप से बस गये थे। इसके बाद बाबू मवाशी लाल जी के पुत्र गणेशी लाल जी तथा बाबू रामलाल जी का वंश आगे बढ़ा।

बाबू गणेशी लाल के चार पुत्र हुये, जिसमें बाबू प्रभुदास जी ज्येष्ठ थे। ये आरा आकर बस गये। बाबू गणेशी लाल जी के तीन अन्य पुत्र बाबू अरहंतदास

जी, बाबू जिनेश्वर दास जी और बाबू मुनेश्वरदास जी के साथ बाबू प्रभुदास जी ने भदैनी प्रभुघाट के ऊपर जो धर्मशाला सं० 1010 में अपने निवास स्थान के निकट गंगा तट पर बनवाई थी, उसके विशाल छत पर तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का एक मनोज्ञ मंदिर का निमार्ण सुपार्श्व-प्रभु के जन्मभूमि पर कराया और चारों भाईयों ने साथ-साथ सं०1912 में बड़े उत्सव के साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई। आज भी इस मनोज्ञ मंदिर के बाहर एक बड़ा मार्बल का शिलापट्ट इन तथ्यों को उजागर करता हुआ लगा हुआ है। बाबू प्रभुदास जी के चार पुत्रियां और एक मात्र पुत्र श्री चन्द्रकुमार जी थे। चन्द्रकुमार के पुत्र राजर्षि बाबू देवकुमार जी और बाबू धर्मकुमार जी हुए तथा दो पुत्रियां भी हुईं। राजर्षि देवकुमार जी की परमोपकारक कथा सारे समाज को विदित है। उनके लघुभ्राता बाबू धर्मकुमार जी का विवाह वृन्दावन के प्रसिद्ध वकील और पं० मोतीलाल नेहरू आदि तत्कालीन राजनेताओं के निकट सहयोगी बाबू नारायण दास जी की सुपुत्री श्रीमती चंदाबाई से हुआ। परन्तु दुर्भाग्यवश 18 वर्ष की लघु आयु में बाबू धर्मकुमार जी का सम्मेदशिखर जी की यात्रा के दौरान, प्लेग से देहावसान हो गया। उनकी धर्मपत्नी जो कि काल क्रम से देश प्रसिद्ध पंडिता चंदाबाई जी बनी, जिन्हें कौन नहीं जानता। उनके द्वारा भी देश और समाज के लिये धार्मिक क्षेत्र में तथा शिक्षा के क्षेत्र में महान सेवाएं हुई। बाबू देवकुमार जी के सुपुत्र बाबू निर्मल कुमार जी (हमारे पूज्य पिताजी) और बाबू चक्रेश्वर कुमार जी (मेरे पूज्य चाचा जी) ने भी देश और समाज में बहुत गौरवपूर्ण स्थान विभिन्न औद्योगिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में अपनी-अपनी सेवाएं दे गये। हम छः भाई थे जिनमें दो सरोज कुमार और आमोद कुमार का देहावसान हो गया है। बाबू चक्रेश्वर कुमार जी के भी पांच पुत्र हुए जिसमें दो प्रेम कुमार और विमल कुमार का देहावसान हो गया है। परन्तु सभी का परिवार वंशानुक्रम से आगे चल रहा है। पू० पिताजी और चाचा जी देवलोकगामी हो चुके हैं। इस समय हमारे 3 परिवार आरा में, 5 दिल्ली में, 5 पटना में, और 1-1 हथुआ, बम्बई, गाजियाबाद और फैजाबाद में हैं।

बाबू मवाशी लाल जी के दूसरे पुत्र बाबू रामलाल जी का वंश भी दिल्ली कलकत्ता और बनारस में फल-फूल रहा है तथा इन लोगों का भी वाराणसी में विशिष्ट स्थान है। इस परिवार के बाबू ठाकुरदास जी, बाबू गणेशदास जी, बाबू महेशदास जी, बाबू श्री चन्द्र जी तथा बाबू विशुनचंद जी के वंशजों से और हमारी आरा शाखा से प्रिय संबंध बने हुए हैं। इस प्रकार बाबू मवाशीलाल जी द्वारा लगभग 200 वर्ष पूर्व आरोपित वट-वंश-वृक्ष फल-फूल रहा है तथा धर्म, समाज और देश की यथाशक्ति सेवा कर रहा है।

बाबू प्रभुदास जी द्वारा तीर्थोद्धार की अनुपम और अनमोल सेवाएं हुई।

ये अपने समय में अच्छे विद्वान् माने जाते थे और इनका सत्संग तत्कालीन विद्वानों और भट्टारकों से भी था। इन्हें जिनवाणी के उद्धार का भी बड़ा उत्साह था। इन्होंने सैकड़ों हस्तलिखित बिखरे पड़े ग्रंथ इकट्ठे किये। स्वयं भी इन्होंने पौराणिक कथाओं को काव्य रस से सींचा। उनमें से एक दुधारस कथा श्री जैन सिद्धांत भवन में स्वयं इनकी लिपि में प्राप्त हुई है और उसका भी प्रकाशन अलग से किया जा रहा है। इनके द्वारा एकत्रित हस्तलिखित ग्रंथों को आगे चलकर राजर्षि बाबू देवकुमार जी ने श्री जैन सिद्धांत भवन की स्थापना के समय भवन को अर्पित कर दिये और इस प्रकार बाबू प्रभुदास जी श्री जैन सिद्धांत भवन की स्थापना की नींव के पत्थर के रुप आज भी परिवार में आदर पूर्वक स्मरण किये जाते हैं। बाबू प्रभुदास जी ने आरा में रहते हुए श्री सम्मेदशिखर बीसपंथी कोठी के संस्थापक भट्टारक महेन्द्र भूषण के द्वारा इस तीर्थराज के प्रबंध का भार अपने ऊपर उनके पट्टशिष्य भट्टारक राजेन्द्र भूषण से ई० सन् 1908 में लिया और इस प्रकार श्री सम्मेदशिखर की श्रीवृद्धि में और उसकी सुरक्षा में इनका भारी योगदान रहा है।

जैसा कि ऊपर लिखा गया है इनके द्वारा तीर्थ उद्धार के अनेक कार्य हुए। उन्हें कुछ शब्दों में मैं इस प्रकार कहूंगा कि कौशाम्बी जो कि तीर्थंकर पद्मप्रभु भगवान की जन्म स्थली है, चन्द्रावती जो कि तीर्थंकर चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म स्थान है, भदैनी (वाराणसी) जो कि तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म स्थान है, इन तीनों ही स्थानों पर इन्होंने नये मंदिरों एवं धर्मशालाओं का निर्माण कराकर तीर्थ क्षेत्रों की स्थापना की जहाँ पर वन्दना हेतु देश भर के लाखों यात्री बराबर आते रहते हैं।

ऐसे महापुरुष, तीर्थोद्धारक, जिनवाणी के भक्त, पुरातत्व अन्वेशी तथा सुप्रसिद्ध देवाश्रम परिवार के संस्थापक और स्वतंत्रता सेनानी बाबू कुंवर सिंह के सहयोगी और मित्र अपने में एक इतिहास पुरुष हुए, जिन्हें कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता और भविष्य उन्हें हमेशा अत्यन्त सम्मान पूर्वक और श्रद्धापूर्वक स्मरण करता रहेगा । तथा उनसे प्रेरणा लेता रहेगा । हमारे देवाश्रम परिवार के जन्मदाता के रूप में हम अपने महान् परम पितामह के पद्-चिन्हों पर सर्वदा श्रद्धावनत रहेंगे और उन्हीं के द्वारा देदीप्यमान ज्ञान दीप को अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार प्रज्जवलित रखने की भरपुर चेष्टा करते रहेंगे। यद्यपि हम भलीभाँति अवगत हैं कि वे कितने महान् थे और हम उनके समक्ष कितने बौने हैं।

(साभार-श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-41, भाग-1) ❖

श्री स्याद्वाद महाविद्यालय शिक्षा निधि को प्रभुदास परिवार द्वारा प्रदत्त डीड ऑफ मैनेजमेन्ट

◆ सुबोध कुमार जैन

श्री स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना 12 जून 1909 को हुई। इसी सभा में राजर्षि देवकुमार जी, आरा ने अपने पूज्य पितामह पं० प्रभुदास जी द्वारा निर्मित प्रभुघाट, गंगा किनारे भदैनी स्थित विशाल रमणीक धर्मशाला एवं निवास स्थान को विद्यालय एवं छात्रावास के लिये दिया।

यह स्थान तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की जन्म भूमि है और यहीं पर पंडित प्रवर प्रभुदास जी ने भट्टारक जिनेन्द्र भूषणजी द्वारा प्रेरणा पाकर यह विशाल धर्मशाला एवं तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का जिनालय निर्मित कराया था। यहाँ हर वर्ष हजारों तीर्थ यात्री पूजन वन्दन को आते हैं।

सन् 1911-13 की मुद्रित विद्यालय की रिपोर्ट के अनुसार बाबू निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार जी, आरा उस समय विद्यालय के संरक्षक थे, 1500 रू० की लागत का एक छोटा मकान बनवाकर छात्रावास के लिये तथा विद्यालय और भोजनालय के अतिरिक्त आस-पास का एक मकान और भी पाठशाला को दिया।

दुर्भाग्य से सन् 1949 की भीषण बाढ़ में विद्यालय भवन का नीचे का पुस्ता जो कि कट चुका था वह गंगाजी में विलीन हो गया और भवन का लगभग आधा भाग ही बचा जिसके ऊपर बाबू प्रभुदास जी द्वारा निर्मित जैन मंदिर विराजमान है। इस प्राकृतिक प्रकोप से विद्यालय भवन के लिये और अधिक विस्तृत स्थान की खोज आरम्भ हुई।

सन् 1954 में बाबू निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार जी ने अपने पैतृक निवास स्थान प्रभुघाट पर स्थित धर्मशाला तथा कर्मचारियों के निवास आदि के लिए डीड ऑफ मैनेजमेन्ट स्टाम्प पेपर पर लिखकर स्याद्वाद शिक्षा निधि को सुपुर्द कर दिया। इन जायदादों के 5 अदद दिखाये हुये हैं जो कि उनके डीड ऑफ मैनेजमेन्ट से स्पष्ट हो जाता है।

इन डीड की प्रतिलिपि अगले पृष्ठ में है ....

डीड ऑफ मैनेजमेन्ट

भारत सरकार

एक रूपया चार आना

हम बाबू निर्मल कुमार जैन और बाबू चक्रेश्वर कुमार जैन स्वर्गीय श्री देवकुमार जी जैन रईस व जमींदार आरा के पुत्र और उत्तराधिकारी हैं। मुहल्ला भदैनी शहर बनारस में हमारे पूर्वजों के मकानात नम्बरी BMHB 3-68B, 3-72B, 3-73A B, 3-76 और 3-30 हैं और हम उनके ट्रस्टी हैं। इन मकानात में 49 वर्षों से श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशी और उसका छात्रावास है और मकान नं० B-8 के नीचे का घाट भी हमारे पूर्वजों का बनाया हुआ है, वह भी हम श्री स्याद्वाद महाविद्यालय को सुपूर्द करते हैं।

श्री स्याद्वाद महाविद्यालय के अधिकारियों का कर्त्तव्य होगा कि इन मकानों एवं घाट की यथा आवश्यक मरम्मत कराते रहें और इनको अच्छी दशा में रखें व मकानात को विद्यालय अपने मसरफ में रखें व मरम्मत करावें वो टैक्स वगैरह समय पर देते रहें। मंदिर जी की पूजन आदि के लिये हमारे पूर्वजों के ट्रस्ट से 12 रूपया मासिक दिया जाता रहेगा । मंदिर दिगम्बर बीस पंथी आम्नाय का है और पूजा-पाठ वैसा ही होना चाहिये।

संयोगवश अगर किसी समय में श्री स्याद्वाद महाविद्यालय न रहें तो इन मकानों में कोई दूसरी जैन संस्था हमारी या हमारे उत्तराधिकारी की सम्मति से रह सकी किसी भी हालत में श्री स्याद्वाद महाविद्यालय को बेचने या गिरवी बगैरह रखने का अधिकार नहीं होगा।

वह डीड ऑफ मैनेजमेन्ट इसलिए लिख दिया गया कि सनद रहे और समय पर काम आवे।

निर्मल कुमार जैन, 30-12-54 **चक्रेश्वर कुमार जैन**, 30-12-54

तहरीर फिता 30 माह दिगम्बर 1954 (उन्नीस सौ चौवन ई०)

गवाह (1) सुमति लाल जैन 30-12-54, (2) राम लाल जैन 30-12-54

(साभार- श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-43, भाग-1, 2)

❖

एक धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा के जनक
पंडित प्रभुदास जी

♦ रमाकांत जैन
बी० ए०, साहित्यरत्न, तमिल कोविद, लखनऊ

आरा के (बिहार प्रदेश) सुप्रसिद्ध "देव परिवार" के पूर्व पुरूष पं० प्रभुदास मूलतः वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के प्रति उनकी आरम्भ से ही रूचि रही। ग्वालियर गद्दी के भट्टारकों के निकट सम्पर्क में आने और उनके प्रभाव से उन्होंने उत्तर प्रदेश में कौशाम्बी (जनपद इलाहाबाद) चंद्रावती (जनपद वाराणसी) और भदैनी (जनपद वाराणसी) के जैन तीर्थ क्षेत्रों का उद्धार किया और वहाँ धर्मशालाओं एवं मंदिरों का निर्माण कराया।

ईस्वी सन् 1850 के लगभग यह वाराणसी से आरा चले आये और यहाँ अनेक जमींदारियाँ खरीदीं। दो निवास स्थान, एक मंदिर और एक चैत्यालय का उन्होंने निर्माण कराया। आरा आने पर वह उस समय के प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी बाबू कुँवर सिंह के निकट सम्पर्क में आये और सन् 1857 के स्वतंत्रता समर में उन्होंने बाबू साहब को आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

आरा आकर भी वह वाराणसी को नहीं भूले और उन्होंने सन् 1856 ई० में भदैनी के मंदिर की प्रतिष्ठा कराई।

धार्मिक सामाजिक कार्यों में उनकी रूचि को लक्ष्य कर भट्टारक देवेन्द्र कीर्तिजी ने सम्मेद शिखर (बिहार) निर्मित दिगम्बर जैन धर्मशाला (बीसपंथी कोठी) का प्रबंध बाबू प्रभुदास के नेतृत्व में आरा की जैन पंचायत को सौंप दिया जिसका उन्होंने आजीवन सफलतापूर्वक निर्वाह किया।

बाबू प्रभुदास को यात्रा करने और हस्तलिखित जैन ग्रंथों को एकत्र करने का भी शौक था। शाहजादपुर, कौशाम्बी, वाराणसी, पटना, गिरिडीह और बिहार शरीफ की अपनी पैदल, घोड़े या बैलगाड़ियों में की गई कष्टसाध्य यात्राओं के दौरान उन्होंने अनेक हस्तलिखित जैनग्रंथों का संग्रह किया। उनके द्वारा संग्रहीत

हस्तलिखित जैनग्रंथों के भंडार से ही उनके पौत्र राजर्षि बाबू देवकुमार ने बाद में आरा में 'जैन सिद्धांत भवन' का शुभारम्भ किया था।

बाबू साहब पर लक्ष्मी के साथ-साथ सरस्वती की भी कृपा रही। उनके द्वारा रचित 'दुधारस द्वादश कथा' की हस्तलिखित प्रति " जैन सिद्धांत भवन आरा" के भंडार में अब भी उपलब्ध है।

जमींदार और रईस होते हुये भी बाबू साहब अपने आचार और जैनागम में पंडित होने के कारण अपने समकालीन सहयोगियों में 'पंडित' नाम से प्रख्यात रहे।

संतोष का विषय है कि उनके वंशजों ने उनकी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों के प्रति रूचि की परम्परा भली प्रकार निर्वहन किया। उनके पौत्र राजर्षि देवकुमार ने संवत् 1913 में चंद्रावती (वाराणसी) के मंदिर की प्रतिष्ठा कराई। स्याद्वाद विद्यालय, वाराणसी के लिये बाबू प्रभुदास द्वारा वाराणसी में निर्मित भवन उपलब्ध कराया। वह विद्वानों के प्रश्रय दाता थे। उनके प्रपौत्र बाबू निर्मल कुमार ने कौशाम्बी (जनपद इलाहाबाद) के मंदिर की प्रतिष्ठा कराई। वह और उनके भाई चक्रेश्वर कुमार जैन समाज की विभिन्न धार्मिक सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े रहे और अब बाबू निर्मल कुमारजी के सुयोग्य पुत्र श्री सुबोध कुमार जी जिस उत्साह और लगन के साथ अपने पूर्वजों द्वारा जैन सिद्धांत भवन और उसकी जैन सिद्धांत भास्कर-जैन एण्टीक्वेरी जैसी षट्मासिक शोध पत्रिका तथा 'देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान' जैसी गतिविधियों के रूप में रोपे गये पौधे को सींचकर पल्लवित और पुष्पित कर रहे हैं, वह उल्लेखनीय है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सांस्कृतिक सेवा की वह परम्परा आगे भी चलती रहेगी और समाज का कल्याण करेगी।

(साभार-श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-41, भाग-2)

❖

पंडित प्रवर बाबू प्रभुदास द्वारा तीर्थोद्धार

◆ सुबोध कुमार जैन

बनारस में रहते हुए भी बाबू प्रभुदास सदा अपने को वत्सदेश का ही मानते थे। पैदल और बैलगाड़ी पर, वि० सं० 1912 के आस-पास, कौशाम्बीगढ़ के निकटवर्ती भखारी से 7 कि०मी० दूर अपने पुरखों के निवास-स्थान शाहजादपुर पहुंचे। वहाँ उन्होंने अपने पैतृक भूमि खोज निकाली। उसी यात्रा के दौरान उन्होंने कौशाम्बी की भी यात्रा की ओर वहाँ पर भूगर्भ में पड़ी हजारों खण्डित अखण्डित जैन प्रतिमाओं को बिखरे हुए देखा । उस पावन धरती की माटी उन्होंने माथे से लगाई और तीर्थोद्धार की भावना उनके मन में समा गई।

बनारस में भदैनी घाट पर बाबू प्रभुदास का पैतृक निवास स्थान अभी भी खड़ा है। किंवदन्ती है कि ज़िन दिनों आर्थिक कठिनाइयों में वे पड़े हुए थे, तभी उनकी भेंट भट्टारक जिनेन्द्र भूषण से हुई। जब भट्टारक जी ने उनको एक साथ पांच जिन मंदिरों के निर्माण कराने की प्रेरणा दी तो बाबू साहब ने अपनी असमर्थता प्रकट की। इस पर भट्टारक जी ने कहा तुम चिंता मत करो केवल स्वीकृति भर दे दो। बाबू साहब ने अपनी स्वीकृति दे दी, तदुपरान्त समय ने पलटा खाया और वहीं भदैनी घाट पर प्रभुदास जी ने मकान से सटे हुए गंगा के किनारे एक धर्मशाला का निर्माण कराया। उसी धर्मशाले की छत पर उन्होंने तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ का मंदिर बनवाया क्योंकि भदैनी घाट ही भगवान का जन्मस्थली माना जाता है। वेदी में प्रतिमा जी श्वेत पाषाण की हैं वि० संवत् 1912 में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। प्रतिमा जी की अवगाहना 15 इंच है। इसके अतिरिक्त 5 श्वेत पाषाण की, एक कृष्ण पाषाण की तथा एक सर्वताभद्र प्रतिमा विराजमान है। गर्भगृह के द्वार पर दाएँ-बाएँ पार्श्व में मातंग, यक्ष और काली (मानवी) यक्षी की पाषाण मूर्तियाँ हैं जो कि कलापूर्ण हैं। यक्ष का वाहन सिंह है और यक्षी का वृषभ। मंदिर का शिविर मनोहारी बना है। मंदिर के बाहर सफेद पाषाण के शिलालेख पर बाबू साहब का पारिवारिक इतिहास और मंदिर जी की स्थापना तिथि आदि उत्कीर्ण है। गंगा के किनारे विशाल छत से प्रकृति का दृश्य

भव्य है ।

गंगा पर एक विशाल घाट का इन्होंने निर्माण कराया जिसे 'प्रभुदास जैन घाट' या ' जैन घाट' भी कहा जाता है । गंगा किनारे घाट की ओर ये शब्द प्रभुदास जैन घाट बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ है ।

संवत् 1913 में ही बनारस से 13 मील गोरखपुर रोड पर गंगा किनारे चन्द्रप्रभु के जन्मस्थल पर भदैनीघाट जैसा ही मंदिर निर्मित कराया तथा धर्मशाला भी बनवायी । यहाँ भगवान के प्रथम चार कल्याणक हुए थे । यहाँ की पंच कल्याणक प्रतिष्ठा बाबू प्रभुदास के पौत्र दानवीर बाबू देवकुमार जी ने करायी । श्वेत पाषाण की भ० चन्द्रप्रभु की 2 फूट ऊंची प्रतिमा तथा भ० पार्श्वनाथ की कृष्णवर्ण की 8 इंच ऊंची प्रतिमा है। गर्भगृह के द्वार पर पार्श्व के दोनों ओर यक्ष तथा विजय तथा अष्टभुजी ज्वालामालिनी देवी यक्षिणी की मूर्तियां हैं ।

तदुपरान्त कौशाम्बीगढ़, पाली और शाहजादपुर में एक साथ एक जैसे मंदिरों के निर्माण का प्रभुदास जी ने सारे आयोजन कर आवश्यक कटे-छंटे पत्थर गिरवाए ।

कौशाम्बी में मंदिर और धर्मशाला का निर्माण उन्होंने पूरा कर दिया। दो वेदियां हैं । एक में भगवान् पद्मप्रभु की जिनका यह जन्म स्थान है, प्रतिमा और चरण हैं । एक शिला फलक में खड्गासन प्रतिमा अंकित है । बाईं ओर देवी एक बालक को गोद में लिए हुए आसीन हैं । एक ओर हाथ जोड़े यक्ष हैं और दूसरी ओर हाथ में माला लिए हुए यक्षिणी । मूर्ति के पादपीठ पर कमल लाछन बना है । यह मूर्त्ति भूगर्भ से निकली थी ।

इस मूर्त्ति के आगे 8 इंच लम्बे 2 चरण हैं जिनके बीच में कमल उत्कीर्ण है । यह सम्भवत: सम्वत् 1567 का है ।

बांई ओर कमरे में सर्वतोभद्र की प्रतिमा विराजमान है- श्वेत पाषाण की खड्गासन, 2 फुट 8 इंच ऊँची चारों ओर हाथी का चिह्न उत्कीर्ण हैं ।

पाली और शाहजादपुर के मन्दिर नहीं बन सके । वहाँ के अधिकांश पत्थर चोरी हो गए । सन् 1850 के आस-पास बाबू साहब आरा चले गए जहाँ उन्होंने अपना निवास स्थान बनाया जिसके छत पर एक बड़ा-जिन मन्दिर निर्मित कराकर प्रतिष्ठा कराई । इस मन्दिर में 4 फुट ऊंची भगवान शान्तिनाथ की चौमुखी प्रतिमा के अतिरिक्त चौमुखी वेदी तथा दो आलमारियों में 50 के लगभग प्राचीन जिन प्रतिमाएँ हैं ।

तदुपरान्त बाबू प्रभुदास के प्रपौत्र बाबू निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार ने अपनी माँजी और चाचीजी के निमित्त पावापुरी जी और राजगृह में दो मन्दिरों का

निर्माण और प्रतिष्ठा कराई। पावापुरी जी में बड़ी मनोज्ञ केशरिया रंग की 5 फुट ऊंची भगवान महावीर की खड्गासन प्रतिमा है और राजगीर के दूसरे पहाड़ पर 4 फुट ऊंची मुनिसुव्रत भगवान की धवल प्रतिमा है।

कौशाम्बी मन्दिर की प्रतिष्ठा बाबू प्रभुदास नहीं करा सके, क्योंकि उनकी असामयिक मृत्यु हो गई। तदुपरान्त उनके पुत्र श्री चन्द्रकुमार जी ने प्रतिष्ठा का आयोजन किया पर उनकी भी एकाएक मृत्यु हो गई। फिर पौत्र राजर्षि देवकुमारजी ने प्रतिष्ठा का आयोजन किया परन्तु उनकी भी अकाल मृत्यु हो गई। तब प्रपौत्र बाबू निर्मल कुमार जी ने प्रतिष्ठा का आयोजन किया। कुछ समय पूर्व ही उनका विवाह हो चुका था। कौशाम्बी में वे परिवार नवबधू के साथ इकट्ठे हुए थे और स्वयं पति-पत्नी, इन्द्र-इन्द्राणी बने थे। प्रतिष्ठा के बीच ही वे अस्वस्थ हो गये और उन्हें तीव्र ज्वर आ गया। सभी घबड़ा गए और यह सभी ने निश्चय किया कि बाबू निर्मल कुमार जी प्रतिष्ठा न करें और किसी को इन्द्र-इन्द्राणी बनाया जाय। यह सूचना जब बाबू निर्मल कुमार जी को मिली तो उन्होंने बड़ी निर्भयता से कहा जीवन-मरण का समय सुनिश्चित है, इसलिए मुझे थोड़ी भी घबराहट नहीं है। मैं ही प्रतिष्ठा करूंगा जो होगा देखा जाएगा।

उसी ऊंचे ज्वर में उन्होंने सभी पूजा-प्रतिष्ठा का विधान जारी रखा और निर्विघ्न विधानपूर्ण हुआ।

आरा नगर में बाबू प्रभुदास ने एक बड़ा निवास स्थान खरीदा। इसी मकान के ऊपर तीन तल्ले में उन्होंने एक मनोहर चैत्यालय, शीतल प्रभु का स्थापित किया तथा वेदी की प्रतिष्ठा कराई। यहीं दुतल्ले पर एक चैत्यालय एवं ध्यान-केन्द्र भी बाबू प्रभुदासजी के समय से स्थापित है। बाबू प्रभुदास के पुत्र श्री चन्द्र कुमार यहाँ नियमपूर्वक नित्य सुबह साम दिगम्बर मुद्रा में सामयिक किया करते थे।

तदुपरान्त बाबू निर्मल कुमार जी ने सन् 1920 में इस नए मकान की बहुत बड़ी श्रीवृद्धि की तथा अपने पिता बाबू देवकुमार जी के नाम पर इसे देवाश्रम शुभ नाम दिया। शीतल प्रभु के मन्दिर में सोने चांदी के काम की वेदी तथा सिंहासन लगवाए और मन्दिर का स्थानान्तरण पूजा-विधान के साथ एक मंजिल और ऊपर कर दिया। बाबू प्रभुदास तीर्थ-क्षेत्र निधि द्वारा इस अनुपम चैत्यालय तथा उनके द्वारा स्थापित अन्य सभी मंदिरों, धर्मशालाओं का सुप्रबंध होता है प्रधान कार्यालय- देवाश्रम, आरा है।

(साभार-श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-42, भाग-1)

Babu Prabhu Das Ji
Founder of Prabhu Das Dynasty

♦ **Jugal Kishore Jain**

Babu Prabhudasji, grand father of Babu Deo Kumar Ji was born at Banaras in the year 1813 AD. His father was Sri Ganeshi Lalji, son of sri Mawasilal ji, who had migrated from Sahjadpur (U.P) to Banaras in the year 1800 A.D.

Having got his house constructed at Banaras he lived at Bhadaini Ghat on the bank of the majestic Ganga and also purchased a few other properties there in the year, 1815.

Prabhudasji was married in 1830. He came in close contact with poet and saint Kavi Vrindavan who had migrated from Arrah. They studied Jain scriptures and had discussion for the preservation of manuscripts and temples together with other aspects of Jainology. They lived a religious life. Vrindavanji was a born poet and he wrote several poems and devotional songs which soon became popular in the entire Hindi belt among the Jain Srawkas who visited temples to pray and perform pujas.

Prabhudasji also got the inspiration from Vrindavanji and he started composing devotional poems. One such poetic work Dudharas Katha written in his own hand writing is available in the Jain Sidhant Bhawan Library. This was later printed in the Jain Bhaskar & Jain Antiquary. Thereafter he came in touch with the famous poet Vinodi Lalji of Sahjadpur during his visit to the old city of his fore fathers. This contact increased his intereset in hand written Jain manuscripts, which were not being looked after and cared and were getting destroyed every where. He started collecting such ancient manuscripts at Sahjadpur and continued doing so during his pilgrimage to other places and Kaushambi.

He was aggrieved to find this holy place Kaushambi littered with ancient pieces of antiquity. The village kids even sold them to visitors for a paisa each. He took the tilak of holy earth on

his fore head and vowed for it renovation which was the birth place of the sixth Tirthankar Lord Padma Prabhu and the kingdom of ancient Vats-Desh, which covered prayag (modern Allahabad). In 1834 he started the repair work of the famous Kaushambi temple.

Subsequently, he went on pilgrimage on foot to phaphosa (prabhas Giri) a small hill 8 miles away where Lord Padma Prabhu spent years in penance and attainded Kewal Gyan (full knowledge). He collected some uncared and damaged manuscripts while he was going through the villages of Champaha Bazar, Pali and Garhwa enroute Phaphosa.

There after he came to Arrah along with poet Vrindavan. He had in his mind to visit patna, Pawapuriji, Rajgrih, Gunavaji, Kundalpur (Nalanda) and then to Parasnath. He was a person who immediately started doin things which he decided to do. During his journey to these old places he asked the Jain families every where to take good care for the preservation of the ancient manuscripts and save them from decay and damage. Many people took the vow and started safe-guarding these valuable manuscripts but those who could not do it handed over their manuscripts to him. This became the starting point 160 years ago of the movement for safe-guarding and the preservation of ancient Jain manuscripts.

He became the moving spirit which ultimately inspired 73 years later his grandson Deo Kumar ji resulting in the establishment of Jain Siddhant Bhawan in 1903 A.D

Babu Deo Kumar Ji had the same interest for preservation of Jain manuscripts and he made it an All India Movement travelling all over South India mostly on bullock cart and on foot, because at that time railways were not available every where and then to Mumbai and north India back to Arrah when fell seriously ill and died at Calcutta in 1908. when he was only 31.

Babu Prabhu Das on his return from his pilgrimage of holy places is Bihar and Uttar Pradesh shifted from Banaras to Arrah in 1835 and at the age of 24 took the vow of taking food only once in 24 hours and that also after performing pooja and this he wholeheartedly followed till his death.

His studies were multi-lingual. Besides Hindi, he knew Sanskrit, Urdu & Persian very well and his interest in manuscripts kept him busy in his studies.

In the mean time he came in close touch with Pt. Parmeshthi Sahay and Pt. Jagmohan Dasji both scholars of Arrah and had

contact with Pt. Sadasukhji noted- Pandit of Jaipur.

Babu Kunwar Singh was a famous Zamindar of Shahabad District distinguished for his valour and anti English leanings. Prabhudasji became friendly with him and even visited his princely head quarter at Jagdishpur, in near about the year, 1842. He procured from him a gift of land at Arrah in the name of Lord Chandra Prabhu, and got constructed a temple. Idols in this temple mention Arah as Aramnagar. Later Prabhudasji got his 1st daughter Kundan Bibi married to Keshardasji son of Pradumman Kumarji.

He met Bhattarak Jinendra Bhushan in 1851 who gave him a vow to construct five Jain temples. Sometimes later he brought pre-fabricated stone for temples construction at Kaushambi, Pali, Shajadpur, Bhadaini (Banaras) and Chandrawati and got constructed a Shantinath temple over his residential house at Arrah. He got work started at the above five places one by one as vowed by him. He also got Dharamshalas constructed at Kaushambi, Caphandrawati and Bhadaini.

The palace like Dharmshala at Bhadaini on the bank of holy Ganges adjacent to his residential house, now houses the famous Syadvad Sanskrit Mahavidyalaya founded by his grandson Deva Kumarji and the famous saint Ganesh Prasad ji Barni.

He performed panch Kalyanak Pratishtha at Bhadaini (Banaras) in 1863 under the guidance of Bhattarak Rajendra Bhushan of Gwalior later in the year, 1874 he took over charge of the famous and the most coveted place of pilgrimage for the Jains, Shree Sammed Sikherji Parasnath from Bhattarak Rajendra Bhushan ji. This very year, he got married his only son Chandra Kumarji to Chegan Bibi niece of Babu Bachu Lalji of Munshi Khana of Lala Shankar Lalji. This last function was performed from his newly constructed princely house now famous as 'Devashram.'

He died in the year, 1877 at the age of 64 leaving behind a large family including four son-in-laws, a son, a daughter-in-law and a grand son Babu Dev kumar who was born in the same year on the 7 th of March and of course a large zamindary and number of house properties, temple and Dharmshalas at various places. Also he left behind a large number of friend and relatives to mourn his death including a sacred legacy of religious and charitable outlook of life which is still cherished by his very large number of dependants; residing at many place in India.

(Referance : The Jaina Antiquary, Vol.43) ❖

पं प्रवर बाबू प्रभुदासजी के तपस्वी पुत्र
बाबू चन्द्र कुमार जी

◆ सुबोध कुमार जैन

राजर्षि बाबू देव कुमार जी के पूज्य, परम धार्मिक पिता बाबू चन्द्र कुमार जी का विवाह आरा के सुप्रसिद्ध मुंशीखाना वाले बाबू बच्चू लालजी की बहन चेंगन बीबी से हुआ था। श्रीमती चेंगन देवी का एक बड़ा चित्र जैन सिद्धान्त भवन में राजर्षि श्री देवकुमार जी के चित्र के दाहिनी ओर टंगा है और दूसरी ओर राजर्षि की पराक्रम धर्मपरायणा पत्नी श्रीमती अनूपमाला देवी का एक बड़ा तैल चित्र है। मंसूरी के एक जैन चित्रकार द्वारा सभी तैल चित्रों को बनवाया गया था।

श्रीमती चेंगन देवी
ध०प० बाबू चंद्रकुमार जी

खेद की बात है कि बाबू चन्द्र कुमार जी का एक भी चित्र उपलब्ध नहीं हो सका है वैसे ही उनके द्वितीय पुत्र धर्म कुमार जी (चन्दा बाई जी के पूज्य पति) का भी कोई चित्र उपलब्ध न तो आरा में और न मथुरा वृन्दावन (चन्दाबाईजी के पिता गृह) में उपलब्ध हो सका है और दु:ख की बात है कि दोनों ही पूज्य जन अल्प आयु में ही चले गये ।

राजर्षि देव कुमार और श्री धर्म कुमार (चन्दाबाई जी के पति) के यशस्वी पिता बाबू चन्द्र कुमार जी अपनी अल्प आयु में ही धार्मिक वृत्तियों के लिए प्रसिद्ध थे।

नित्य भोर में, दोपहर में और रात्रि में मंदिर जी में जप ध्यान के लिए पहुँचते ही वे कुछ समय का नियम लेकर पूर्ण मुनिव्रत धारण कर नग्न हो जाते थे,कपड़ों को वे कोने में डाल देते थे। दरवाजा अटका देते। सम्पूर्ण परिग्रहों का निश्चित समय के लिए त्याग, सम्पूर्ण संबंधों का त्याग तथा सभी संसारिक

बन्धनों से मुक्त होकर कायोत्सर्ग मुद्रा में तपस्या करते थे। अपने जीवन के अन्तकाल तक वे इस प्रकार समयबद्ध तपस्या करते रहे।

लौकिक कर्त्तव्यों में इन्होंने अपने दोनों पुत्रों- देवकुमार और धर्म कुमार की प्रारंभिक और धार्मिक शिक्षा पर पूरा ध्यान रखा। अपनी दो पुत्रियों नेमसुन्दरी और प्रेमसुन्दरी को भी योग्य शिक्षकों के द्वारा धार्मिक और लौकिक शिक्षा दिलवाई। नेमसुन्दरी का विवाह दानवीर हरप्रसाद दास जैन के पुत्र धनेन्द्र दास से तथा छोटी प्रेमसुन्दरी का आरा के श्री उदय चन्द जी के तृतीय पुत्र श्री राजेन्द्र चन्द्र (बाबू कुंवरजी) से सम्पन्न किया।

फिर वे तत्काल पू० पिता प्रभु दासजी द्वारा कौशाम्बी में मन्दिरजी की स्थापना के उपरान्त बाकी धर्मशाला के निर्माण तथा पँचकल्याणक प्रतिष्ठा के धार्मिक कार्य को पूरा कराने में लग गए। निर्माण कार्य पूरा कराया और प्रतिष्ठा की सब तैयारियाँ कराकर प्रतिष्ठा आरंभ होने के पूर्व अस्वस्थ हुए तो फिर बीमारी बढ़ती गई। दुर्भाग्यवश प्रतिष्ठा नहीं हो सकी जो कि आगे जाकर पौत्र बाबू निर्मल कुमार ने सपत्नीक प्रतिष्ठा पूरी की।

परन्तु इसके पूर्व उन्होंने पिताजी प्रभुदासजी द्वारा पूर्ण रूप से तैयार किए तीर्थंकर चन्द्र प्रभु के जन्म स्थान पर मंदिर और धर्मशाला, चन्द्रावती, गंगाकिनारे, बनारस से 25/26 कि० मी० गोरखपुर रोड पर बहुत उत्साहपूर्वक सपत्नीक इन्द्र इन्द्राणी बनकर सानन्द सम्पन्न करा चुके थे। आरा से उनका सम्पूर्ण परिवार तथा ससुराल के सभी स्वजन एवं बनारस के उनके सगे सम्बन्धी उस गंगा किनारे हुई चन्द्रावती की मनोरम प्रतिष्ठा में शामिल ही नहीं हुए वरन् बनारस के सैकड़ों जैन अजैन परिवार ने भी श्रद्धापूर्वक सम्मिलित हो उस प्रतिष्ठा को अत्यन्त सफल बनाया था।

अभी भी बनारस का यह मंदिर गंगा किनारे बराबर उन्नति कर रहा है और हमारे स्वगोत्रीय परिवार के परम हितैषी स्व० बाबू छेदी लालजी के पौत्र अनिल कुमार जैन बड़ी योग्यतापूर्वक वहाँ का प्रबंध बाबू प्रभु दास तीर्थ क्षेत्रनिधि, आरा के अन्तर्गत, उत्तम रूप से कर रहे हैं।

इसके पूर्व दादा जी बाबू प्रभु दास जी अपने जीवन काल में ही भट्टारकजी के लिए नियम के अनुसार मिर्जापुर से पत्थर के टुकड़ों से पूर्व में तराश-काटकर साइज में तैयार किए हुए एक जैसे पांच मन्दिरों के पूरे पत्थर, क्रमशः भदैनी बनारस, चन्द्रावती, कौशाम्बी, पाली एवं शाहजादपुर में गिरवा चुके थे । अपने जीवन काल में ही भदैनी (वाराणसी) में गंगा किनारे प्रभु घाट पर विशाल धर्मशाला और मंदिर भी श्री भगवान सुपार्श्वनाथ का जन्म स्थल अपने

सभी भाईयों श्री जिनेश्वर दास और श्री मुनेश्वर दास के साथ सपत्नीक अत्यन्त उल्लास और शोभापूर्वक करा चुके थे । यह प्रतिष्ठा बहुत बड़े उत्सव के रूप में पूर्ण की थी। पूर्ण विवरण के साथ शिलापट् वहाँ लगा हुआ है ।

तदुपरान्त आरा आकर यहाँ अपने निवास स्थान महादेवा महल्ले/महाजन टोली इलाके में शान्ति प्रभु की ऊंची ,खडगासन सर्वतोभद्र प्रतिमा का एक विशाल मंदिर निर्माण कराकर पूरी की थी तथा नए भवन (देवाश्रम) में शीतल प्रभु का सुन्दर चैत्यालय की वेदी प्रतिष्ठा कराई थी।

पाली, शाहजादपुर (पुरूखों का स्थान) में प्रीफेबरीकेटेड, पूर्व से ही कटे बनाए पत्थर मंदिर के नक्शे के रूप में बनवाकर पहुँचा चुके थे। पर उनकी अकाल मृत्यु से वे निर्माण नहीं करा सके, ऐसा अनुमान है। सूचना है कि अभी भी वहाँ पत्थर जहाँ तहाँ पर दीखते हैं, पर इन स्थानों में जैनियों की आबादी नगण्य हो चुकी है।

बाबू चन्द्र कुमार जी ने अपने विलक्षण पुत्रों की शिक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया और दोनों ही धार्मिक और लौकिक शिक्षा का अध्ययन करते रहे। आगे चलकर बाबू देवकुमार जी को सरकार ने "औनरेरी मैजिस्ट्रेट" नियुक्त किया । कचहरी जाकर तथा अपने कार्यकाल में भी उन्होंने कचहरी लगाकर मुकदमों की सुनवाई तथा न्यायपूर्वक अपने फैसलों द्वारा ख्याति प्राप्त की। धर्मकुमार जी पटना कॉलेज में उच्च शिक्षा पा रहे थे।

बाबू चन्द्र कुमार जी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र देवकुमार जी का विवाह बाबू लक्ष्मी चन्द्र जी, आरा की धार्मिक और रूपवती पुत्री अनुपमाला देवी से किया। अपनी बड़ी बेटी नेम सुन्दरी जी का विवाह आरा के सुप्रसिद्ध दानशील बाबू हरप्रसाद दास जी के दत्तक पुत्र बाबू धनेन्द्र दास जी से बहुत धूम-धाम से किया। आगे चलकर श्रीमती नेमसुन्दरी-धनेन्द्र दास जी द्वारा जैन बाला विश्राम, आरा में विद्यालय भवन, भगवान महावीर का मनोहर मंदिर और बाद में भगवान बाहुबलि की विशाल प्रतिमा स्थापित किया और दोनों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ करके आपार पुण्य और यश प्राप्त किया। दूसरी बेटी प्रेम सुन्दरी देवी का विवाह आरा के उच्च घराने के बाबू राजेन्द्र चन्द्र जी के पुत्र बाबू कुंवर जी से किया तथा छोटे बेटे बाबू धर्मकुमार जी का विवाह वृन्दावन के बाबू नारायण दास जी के पुत्री चन्दाबाई से किया।

परन्तु बाबू धर्मकुमार जी की अल्प आयु में प्लेग से मृत्यु हो चुकी थी । उनकी पत्नी चन्दाबाई जी ने देशव्यापी यश पाया और जैन बाला विश्राम की स्थापना 1921 ई० में की । बाबू देवकुमार जी ने परिवार के काम को

योग्यता पूर्वक संभाल लिया और उनकी पारीवारिक बड़ी जमींदारी "कोर्ट ऑफ वार्डस" से मुक्त होकर इनके हाथ में आ गई ।

बाबू साहेब का देहावसान 39 वर्ष की अल्पायु में हुआ । उन्होंने अपने सभी पारिवारिक कर्त्तव्य आदर्श रूप में पूरे किये । धार्मिक कर्तव्य भी उच्च कोटि का निभा कर परिवार को उदाहरणीय दिशा प्रदान कर गए।

उनके पीछे उनकी आदर्श पत्नी चेंगन बीबी पूरे परिवार के साथ सुखपूर्वक रहीं । वे घर की बड़ी दादी थीं ।

बड़ी-दादी की गादी :- हमारे बड़े भाई प्रबोध जी जो मूक बधिर थे तथा सुन्दर हृष्टपुष्ट बालक थे, उनके प्रति उनकी भारी प्रीति थी। जब भाई के विशेषज्ञ शिक्षक पं० प्रद्युम्न मिश्र ने पहली बार बड़ी दादी जी को "दादी जी" भैया के मुख से कहलवाया तो वे इतनी प्रसन्न हुईं कि प्रद्युम्न जी को भरपुर पारितोषिक तो दिया ही, सारे विरादरी और आरा तथा बाहर के अपने लोगों को बड़ी-बड़ी खोए की मिठाई, मेवा-मिष्टान भरपूर बनवाकर खिलवाया और वितरित कर "दादी की गादी" सभी को भरपूर खिलाने का यश और सुख प्राप्त किया।

'दादी की गादी' बनाने वाले विशेष रूप से बनारस के श्रेष्ठ हलवाई बुलवाए गए थे। गादियों को आंच पर नहीं बनाकर जल के भाप की गर्मी से बहुत स्वादिष्ट बनाया गया था। इसके लिए ताम्बे के बड़े भटोरे लाए गए थे ।

ऐसी गादी, फिर नहीं देखी, न सुनी , न खाई । पर उनकी लज्जत, स्वाद अभी तक हमारी जुबान पर है। सभी आरा निवासी उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल हुए। पू० पिताजी ने मुखाग्नि दी । हमारे भैया ने जिन्होंने गूँगेपन में अज्ञानतावश उनके बाल नोचे थे, फूट-फूट कर रोए।

हम सबों ने तथा सम्पूर्ण परिवार ने उन्हें अन्तिम समय घंटों भगवान के नाम सुनाए । अत्यन्त शान्तिपूर्वक पू० दादी चन्दा माँश्री ने उन्हें अन्त में नियम आदि दिए जिसे घर की प्यारी पूज्या दादी ने सुना और शास्त्रोक्त विधि से उनका समाधिमरण हुआ ।

स्वर्गीय बाबू प्रभुदास एवं देवकुमार जैन की पुण्य स्मृतियाँ

♦ स्वर्गीय श्री अजित प्रसाद जैन,
एडवोकेट, लखनऊ
♦ अनुवादक-अतुल कुमार जैन,
आरा

बाबू देवकुमार जी आरा के उच्च, प्रतिष्ठित तथा प्राचीन जमींदार परिवार के वंशज थे। उनके पितामह पं० प्रभुदास जी ने गंगा के तटस्थ भदैनी घाट पर जिन मंदिर सहित एक विशाल धर्मशाला बनवाई। इसका नाम प्रभुघाट पड़ा। इस मन्दिर का निर्माण 1913 वीर संवत् में हुआ था। चन्द्रपुरी (बनारस जिला) तथा आरा में भी इन्होंने अनेकों जिन मंदिरों की स्थापना करवाई, वे संस्कृत तथा प्राकृत के प्रकाण्ड पंडित थे। जैन दर्शन पर इनका प्रभुत्व इसके समकालीन पूज्यनीय पं० भागचन्द्र जी और दौतलराम जी के टक्कर का था। इनका जीवन पवित्र था पूरे चालीस वर्षों तक ये एकाशना पर ही रहे थे। बाबू देवकुमार जी के पिता बाबू चन्द्र कुमार जी भी धमानुरागी थे। उन्होंने कौशाम्बी में एक जिन मंदिर का निर्माण करवाया। अभाग्यवश युवावस्था में ही उनका स्वर्गवास हो गया। इसके पश्चात् पारिवारिक संपत्ति कोर्ट ऑफ वार्डस् के अधीन चली गई। वयस्क होने पर बाबू देवकुमार जी ने स्टेट को अपने हाथों में ले लिया। अपने सुचारू प्रबंध से उन्होंने उसकी आशातीत उन्नति की। वे बी० ए० की परीक्षा पूरी न कर सके थे। आप ऑनरेरं मजिस्ट्रेट के पद को बहुत दिनों तक सुशोभित करते रहे। 1900 ई० में प्लेग का भयानक
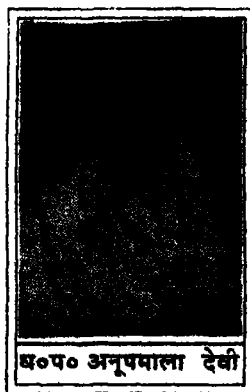
बाबू देवकुमार जी

ब०प० अनूपमाला देवी

आक्रमण हुआ । उसी में अपने लघु भ्राता धर्मकुमार जी, जो कि बी० ए० के विद्यार्थी थे, चल बसें इस असह्य शोक ने उनके स्वास्थ्य पर बड़ा धक्का पहुँचाया । वे यों बड़े धार्मिक तथा आध्यात्मिक विचारों से आभूषित थे। भारत वर्ष के प्रत्येक जैन तीर्थ स्थानों का उन्होंने भ्रमण किया तथा हरेक स्थान पर मुक्त हस्त दान दिया । उनकी दानशीलता चारों ओर फैली हुई थी, केवल स्थानीय क्षेत्रों तक ही सीमित न थी । अपने दानों से न तो वे आत्म-प्रशंसा, उपाधियों और व्यापारिक सुविधाएँ ही चाहते थे, न जनता की दानशील संस्थाओं में अपने नाम के इच्छुक थे । उन्होंने जैन गजट का, जो कि जैन महासभा का एक अंग है, बहुत दिनों तक सम्पादन किया ।

वे बनारस में स्मरणीय 12 जून 1905 को उपस्थित थे जब कि भदैनी मन्दिर पर स्याद्वाद पाठशाला की नींव डाली गई थी। वे इसकी प्रबंध कारिणी समिति के सेक्रेटरी बहुत दिनों तक रहे। उन्होंने दो मकानों को इस विद्या मन्दिर के लिए अर्पित कर दिया। यह विद्या मन्दिर शीघ्र ही फूलता फलता एक महाविद्यालय हो गया । इसके रोजाना चालू खर्चो के लिए इन्होंने 20/- मासिक दिया। सेठ माणिक चन्द जी ने 25/- तथा स्थानीय जैन भ्रातृ संघ ने 30/- मासिक दान दिया ।

सेठ माणिक चन्द ब्र० शीतल प्रसाद, बाबू देवकुमार, मास्टर नानकचंद, प्रो० मोती लाल तथा दूसरे संस्थापकों का आदर्श ऐसे मनुष्यों के उत्पन्न करने का था जो शंकराचार्य की तरह जैन आचार्य बने और जिन धर्म प्रचार को अपने जीवन का उद्देश्य बना ले । कुमार देवेन्द्र प्रसाद ने इस कार्य के संपादन हेतू प्राणपण चेष्टा की । लेकिन उन्हें स्वार्थमय षड्यन्त्रों के कारण इस रास्ते को छोड़ देना पड़ा । ब्र० शीतल प्रसाद जी ने महाविद्यालय को धर्म-प्रचारकों वेतन पाने वाले समाज के नौकर नहीं प्रत्युत ऐसे आदमी जो कि अपनी उच्चतर शिक्षा, विस्तृत अध्ययन, उदारता तथा स्वतंत्र विश्वास के बल तथा कार्य क्षमता के कारण जैनियों में आदरणीय हो, का शिक्षण स्थल बनाना चाहा । ब्रह्मचारीजी ने कभी भी आर्थिक स्थिति के पहलू पर से ध्यान नहीं हटाया । प्रत्येक साल यहाँ तक कि अपने जीवन के अंतिम वर्ष तक स्याद्वाद महाविद्यालय के लिए समय-समय पर बड़ी रकमें दान लेने की व्यवस्था वे कराते रहे और प्रत्येक साल उस स्थान से जहाँ ब्रह्मचारी जी वर्षाऋतु में चतुर्मास रखते थे, रुपयों की एक थैली स्याद्वाद विद्यालय को भेंट की जाती थी ।

बहुत दिनों तक वे इसकी प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य बने रहे। 1913 में इन्हें अपने पद त्याग की अनिवार्यता का अनुभव हुआ जबकि इन्होंने देखा, देवकुमार जी की मृत्यु के पश्चात् स्थानीय सदस्य तथा कुछ दूसरे लोग धीरे-धीरे पूर्णतया उस उद्देश्य को भूल गये जिसे लेकर यह संस्था चली थी। उन्होंने छात्रों को नीच तथा अपमानजनक कार्यो, जैसे जाति के लोगों से आर्थिक सहायता के लिए भिक्षा माँगने, घी तथा कपड़ों के लिए झगड़ने में प्रोत्साहन दिया जिससे कि उनके उदंडता तथा अवाज्ञा के भावों को भी पनपने में सहायता मिली।

"जो मधुर स्वप्न सेठ माणिक चन्द, बाबू देवकुमार और ब्रह्मचारी जी ने देखे

थे वे सचमुच स्वप्न ही रह गये, उनके वास्तविकता में परिणत होने की कम ही आशा रह गई। अप्रैल 1908 में बाबू देव कुमार जी, कुण्डलपुर (मध्य प्रांत) में महासभा की एक महत्वपूर्ण अधिवेशन के सभापति हुए। श्री सेठ मोहन लाल (खुरई) चेयरमैन और दमोह के वकील गोकुल चन्द्र स्वागत समिति के अध्यक्ष बनाये गये। पं० गोपाल दास स्याद्वाद वारिधी, संपादक जैन मित्र ने 18 अप्रैल के संस्करण में निम्न प्रकार से अपने विचार प्रकाशित किये थे। कार्यवाही के पहले दिन विषय समिति के समक्ष- महासभा का एक नियम, अपने उद्देश्य में से एक " धार्मिक शिक्षा की उन्नति " की परिभाषा पर प्रकाश डाला गया। विद्यावारिधी पं० गोपाल दास जी ने अंत के "धर्म के विरुद्ध नहीं" शब्द जोड़ने के लिए ज़ोर दिया। शीतल प्रसाद जी ने कहा कि ऐसा जोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं । दो घण्टे के घोर विवाद के बाद इस का न्याय वोट पर छोड़ दिया गया। शीतल प्रसाद जी अपने प्रस्ताव को प्रतिपादित करने के लिए एकाकी व्यक्ति थे। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अपनी बात पर जोर देते समय पं० गोपाल दास जी ने यह कहा कि वे जैन धर्म की मजबूत जड़ के अभाव में स्थूल में दी गई, पाश्चात्य शिक्षा के विरुद्ध में है, लेकिन वे इसकी पक्की जड़ जम जाने के पश्चात् कोई भी शिक्षा नास्तिक हो या अधार्मिक की देन में सहमत है। अधिवेशन का दूसरा प्रस्ताव यह था कि जैन-युवक संघ जैन दिगम्बर धर्म की उन्नति के उद्देश्य के लिये खोला गया था। इसने जब अपना उद्देश्य बदल लिया है इसलिए अब यह एक दिगम्बरीय संस्था नहीं रह गई । यह कई जातियों की एक सम्मिलित संस्था हो गई। यह महासभा की एक शाखा नहीं रह गई ।

बाबू देवकुमार अपने पुत्र निर्मल कुमार और चक्रेश्वर कुमार को पाश्चात्य शिक्षा देने के पूर्व जैन साहित्य का अच्छा ज्ञान देना चाहते थे। सचमुच अपनी मृत्यु के 10 दिन पूर्व 26 जुलाई को उन्होंने कलकत्ता में धन्नालाल पंडित जी को पं० लालाराम जी को 50/ मासिक तथा रहने के लिए एक मकान देकर आरा भेजने के लिए लिखा था । अपने वसीयतनामा में उन्होंने 100000/ की एक मोटी रकम तथा 5000 रुपये सलाना अनेकों संस्थाओं की सहायता के लिए दी।

उनके आदर्श पुत्रों ने परिवार तथा जैन धर्म की क्रांति तथा गौरव की शान को और भी बढ़ाया । बाबू निर्मल कुमार जी एक प्रसिद्ध व्यवसायी थे और कुछ दिनों तक कौंसिल ऑफ स्टेट के सदस्य भी रह चुके हैं। बाबू चक्रेश्वर कुमार जी को बी० एस० सी०, बी० एल० की उच्च शिक्षा प्राप्त है तथा वे बिहार लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य रहे हैं । दोनों भाइयों ने पारिवारिक दानशीलता में अभी तक कमी नहीं आने दी है, अपने पिता द्वारा निर्मित धार्मिक शिक्षण और दानशील संस्थाओं की आशातीत उन्नति की है । और पिता के पद चिन्हों पर चलकर तथा अन्य धार्मिक संस्थायें खोलकर और भी अधिक धार्मिक योग्यता प्राप्त कर ली है ।

उन्होंने एक सुन्दर भवन का निर्माण किया है जो कि जैन ओरियेन्टल लाईब्रेरी या जैन-सिद्धान्त भवन के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें ताड़पत्रों पर सूई की नोंक द्वारा

लिखित अक्षरों में लिखे गये मौलिक सचित्र पुरातत्व कला के आसाधारण नमूने एवं यंत्र हैं और सहायक स्थायी साहित्य का एक आश्चर्यजनक पुस्तकालय है ।

यह सुभव्य पुस्तकालय तथा म्यूजियम खास सड़क पर स्थिति है (और पं० प्रभुदास जी के द्वारा निर्मित मन्दिर के बगल में है) जो समय-समय पर उनके पोतों ओर परपोतों द्वारा उन्नत होता गया है। वसीयतनामें में निम्नलिखित उद्धृत पंक्तियाँ उनकी धर्म-प्रभावना तथा जैन धर्म की रक्षा और उसके गौरव की हृदयाकांक्षा को व्यक्त करती है ।

" जैन भाईयों तथा नेताओं से मेरी अंतिम प्रार्थना यही है कि पुरातन शास्त्रों, पुराणों की रक्षा के लिए शीघ्रता शीघ्र प्रयत्न करना चाहिये । वे ही संसार के सामने जैन धर्म की ज्योति, इसकी महानता का प्रसार करेगी तथा उसकों चिरस्मरणीय बना सकेगी । मेरे हृदय में यह बात बहुत दिनों से थी । मैंने यह प्रतिज्ञा ली थी कि जबतक वह कार्य पूरा न कर लूँगा तब तक ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करूँगा । मुझे इसकी हार्दिक वेदना है कि मुझे इस पवित्र कार्य संपादन करने का, पवित्र योग्यता पाने का सौभाग्य न हो सका। अब आपको इस पवित्रतम कार्य को पूरा करने का व्रत लेना है। इसलिए इस महत्वपूर्ण आवश्यक कार्य को पूरा करने का उत्तरदायित्व आपके ऊपर है । "

उनकी आखिरी बीमारी साढ़े तीन महीना तक ठहरी । वे सदा दमा से पीड़ित थे । कलकत्ता में उनको क्लोरोफॉर्म देकर एक डॉक्टरी ऑपरेशन हुआ । वे सदा धार्मिक तथा धर्म साधना के लिए अपने पास नेमिसागर जी वर्णी को रखते थे । उन्होंने नेमिसागर जी वर्णी तथा मठाधीश भट्टारक श्रवणबेलगोला से सल्लेखना संकल्प सुना जो शांतिपूर्वक शरीर त्याग से संबंध रखता है और सर्जिकल ऑपरेशन के दो घंटे पूर्व संभवत: मृत्यु की तैयारी के लिए इस संकल्प को ले लिया और अपना ध्यान सर्वव्यापी परमात्मा पर स्थिर कर लिया ।

चेतना लौटते ही उन्होंने सर्वप्रथम " अरहंत " नाम का उच्चारण किया । उन्होंने सारी शारीरिक पीड़ायें धैर्य तथा मानसिक शांति के साथ सहन कीं । अपनी मृत्यु का ज्ञान उन्हें छ: घंटे पूर्व ही हो गया था। उन्होंने भू-शय्या ले ली और उन्हें सल्लेखना संकल्प नेमिसागर जी वर्णी ने दिया जो अविरल रूप से उनके समीप बैठे स्त्रोतों का पाठ करते रहे जिसे वे हृदयंगम करते जाते थे। यह बात उन्होंने यह कहकर प्रकट की कि ' बोलते जाइए जो आप बोल रहे हैं मैं समझता हूँ । '

(साभार- श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-44, भाग-1, 2)

❖

Rajarsi Babu Devkumar Ji
(1877-1908)

♦ **Dr. Jagdish Chandra Jain**

Babu Devkumar (1877-1908), known as RAJARSHI (the royal saint), was the grandson of the well known Babu Prabhudas a philanthropist and a scholar of Sanskrit and Jain literature. He died at a young age of 31. He was an enthusiastic personality always keeping in mind those who were deserving and needy. It was he who laid down the foundation of the Syadvada Mahavidyalaya, Kashi in 1905 which later produced numerous Jain pandits and schorlars of Jainism who are working at various important posts atpresent. The site of the vidyalaya, was originally a residential house of his grandfather, located at Bhadaini - Jain Ghat or Prabhu Ghat on the magestic bank of the Ganga. This site was generously donated by Devakumarji for the use of the educational institute. Maharshi Devkumar was a silent worker with a will to bring about social changes in the community. He was well aware of the harmful customs superstitious beliefs, illiteracy, the rights of women, the pitiable condition of widows and domination of ritualism under the guise of religious practices. He tried to remove these abstacles from the Jain society for which he never hesitated to give magnificient donations. He took initiative to from a Jain Youngmen's Association (1901), the Central Jain Publishing House, Arrah (1902), Nagari Pracharini Sabha (1907), Jain Kanya Pathshala (1907) Jain Balavishram, Arrah (1921) and the Jain Siddhanta Bhavan (Central Jain Oriental Library (1908). He was associated with various Jain Organisations all over India. He made a tripe of South India in 1906 in order to collect important manuscripts scattered here and there, including some rare ones on palmleaf. Out of these, some have been published in Sanskrit, Prakrit. Apabhramsa and Hindi by the

Institute. Recently, a beautiful edition of the illustrated Jain Ramayana has been published. The Institute is also publishing the Jain Siddhanta Bhaskara- cum- Jain Antiquary, a bi-annual Journal from 1913. Devkumar ji was an editor of the Jain Gazette, started from Arrah with the object of creating in the Jain community. His activities were not confined only to the Jain community, he had his active sympathy for the National Freedom Movement of the country and had an opportunity of coming into contact with national leaders of renowned. At present Babu Subodh Kumar Jain the illustrious son of Babu Nirmal Kumar Jain, son of Rajarshi Dev Kumarji, is occupied in carrying out the project started by his forefathers.

* Excerpts from ' Modern Religions Movements ' to be edited by professor Robert D. Blaird professor of History of religions, the University of Iowa, USA (third edition), to be published soon by Manohar Publishers and Distributors, New Delhi.

(Referance- Jain Antiquary, Vol.- 45, Part- 1, 2)

❖

स्वामी सत्यभक्त जी, वर्धा का पत्र

(स्वामी सत्यभक्त जी एक अद्‌भुत चिन्तक हैं । उनका चिन्तन मानव समाज के लिए प्रकाश पुंज है। आज अस्वस्थता के समय में भी वे सतत्‌ चिन्तनशील हैं। भास्कर परिवार उनके दीर्घायुष्य की कामना करता है। मेरे परिवार वालों से स्वामी जी का सम्पर्क रहा है। मेरे पास उनका एक महत्त्वपूर्ण पत्र आया है, जिसे यहाँ यथावत्‌ प्रकाशित कर रहा हूँ ।)

♦ सुबोध कुमार जैन

सार्वदेशिक सत्य समाज सम्मेलन, सत्याश्रम, वर्धा

प्रिय सुबोध कुमार जी,

सस्नेह जयसत्य,

आपका 8 तारीख का पत्र विज्ञान के नाम से आया । उसमें मेरे विषय में काफी जानकारी चाही है। इसलिए मैं ही उत्तर दे रहा हूँ ।

आपके कुटुम्ब से मैं कई बार परिचय में आया हूँ और आपके घर कई बार ठहरा हूँ । आपके स्वर्गीय दादाजी को मैंने देखा है । कुण्डलपुर में महासभा के अध्यक्ष बनकर जब वे आये तब पहले दमोह में ठहरे थे। क्योंकि ट्रेन दमोह तक ही थी। बाद में 22 मील सड़क से जाना पड़ता था । दमोह में वे गोकुलचन्द्र वकील जो कि मंत्री और मेरे चाचा लगते थे, के यहाँ ठहरते थे, तब मैंने उनको देखा था। इसके बाद कुण्डलपुर की सभा में देखा मेरे मामा उस समय कुण्डलपुर तीर्थ के मुनीम थे । मैं उन्हीं के यहाँ ठहरा था। देवकुमार जी के ठाठ राजाओं सरीखे थे । मैं उस समय सभा में गया था । देवकुमार जी अध्यक्ष के आसन पर जब बैठै थे तब उनका एक सिपाही कन्धे पर नंगी तलवार लिए उनकी रक्षा के लिए खड़ा रहता था । उस समय मैंने सुना था कि वे बहुत से गाँव के बहुत बड़े जमींदार हैं और जमींदारी से उन्हें सालाना एक लाख रुपया मिलता है । जिन दिनों 32/- रुपये मन घी मिलता हो तो उस समय एक लाख रुपये की आमदनी राजाओं की आमदनी समझी जाती थी । इसके कुछ माह बाद मैंने सुना कि देवकुमार जी का देहान्त हो गया । इससे आश्चर्य के साथ बहुत दुःख हुआ । इसके बाद सन्‌ 1918 या 19 में मैं बनारस से 10-12 दिन के लिये आरा आया था । उस समय आपकी दादी जीवित थीं और निर्मलकुमार जी किशोर थे । आपकी दादी बहुत प्रेम

से भोजन कराती थीं। उस समय आपका घर नौकर-चाकर से भरा रहता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि ऊपर की मंजिल से कोई महिला किसी नौकर को बुलाती थी तो बिहारी टोन में लहराती आवाज में आवाज देती थी 'अरे ! कोई प्यादा है'।

उस समय जैन सिद्धान्त भवन प्रारम्भिक अवस्था में था और मैंने देखा था। इसके बहुत वर्षों बाद जब मैं बम्बई में अध्यापक था तब सेठ ताराचन्द जी के साथ सम्मेदशिखर आया था। वहाँ बहुत बड़ा रथोत्सव था उस समय निर्मल कुमार जी तथा सेठ ताराचन्द जी मुझे आरा लाये थे और आपके घर ही ठहरे थे। उस समय की एक घटना मुझे याद है निर्मल कुमार जी के घर में एक लड़का जन्म से बहरा था। ऐसे लोग किसी की बात सुन नहीं सकते इसलिये कोई भाषा भी सीख नहीं सकते। मुंह से आवाज निकाल सकते हैं पर कोई भाषा नहीं बोल सकते। उस समय निर्मल कुमार जी ने एक ऐसा अध्यापक बुलाया था जिनसे उसे (गूंगे लड़के को) बोलना सिखा दिया था। वह सुन तो नहीं सकता, पर आदमी के ओठों को देखकर जान लेता था कि क्या कहा है। अगर कोई कुछ नहीं बोले, बिना बोले सिर्फ ओठ ही चलाये तो समझ लेता था कि क्या कहा गया है। अध्यापक ने इसके प्रयोग हम लोगों के सामने भी करके दिखाये। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। शायद वह तुम्हारा बड़ा भाई होगा। अब क्या हाल है हमें नहीं मालूम। अब इसके कुछ वर्ष बाद निर्मलकुमार जी और उनकी चाची चन्दाबाई जी जो विख्यात विदुषी थीं, बम्बई आये और श्राविकाश्रम में ठहरे। मैं भी श्राविका आश्रम के पास ठहरा था। उस समय कई बार मिलने और चर्चा करने का अवसर आया।

ब्र० शीतल प्रसाद जी को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वर्षों तक उनसे अच्छा सम्बन्ध रहा है। उन्होंने जब विधवा विवाह का अन्दोलन किया था तब उनके विरोध में पंडित लोग जो भी लिखते थे, उसका उत्तर सव्य साची के नाम से मैं देता था। जीवन के अन्त में जब उन्हें कम्पवाय हो गया था और लखनऊ में अजित प्रसाद जी वकील के यहाँ पड़े रहते थे तब भी उनसे मिला था, जब मैं उनके यहाँ मेहमान था। कम्पवाय के कारण वे साफ बोल नहीं सकते थे। मेरी बड़ी तारीफ करते थे।

चन्दाबाई जी स्त्रियों के लिए एक पत्र निकालती थीं। वह जैन जगत् के परिवर्तन में मेरे पास आता था इसलिए भी उनसे परिचय था। सबको आर्शीवाद।

सत्याश्रम, वर्धा — आपका

29-6-93 — सत्यभक्त

(साभार- श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-46, भाग-1, 2)

बाबू धर्मकुमार जी का जीवन परिचय

• सुबोध कुमार जैन

बाबू धर्मकुमार जी का जन्म ईस्वी सन् 1883 में हुआ था। वे राजर्षि देवकुमार जी, आरा के एक मात्र भ्राता और उनसे 7 वर्ष छोटे थे। दोनों भाईयों के बीच में दो बहनें थीं, नेमसुन्दरी और प्रेमसुन्दरी ।

चारों भाई बहन परम धार्मिक वृत्ति के और कुशाग्रबुद्धि थे । चारों में अपार प्रेम था। चारों भाई बहनों में धर्मकुमारजी अत्यन्त रूपवान थे । गौर वर्ण, लम्बा कद, ऊँचा ललाट और विशाल वक्ष-स्थल था । खेद की बात है कि उनका कोई चित्र उपलब्ध नहीं है।

बाबू धर्मकुमार जी

धर्मकुमार जी की आयु मात्र 2 वर्ष की और देवकुमार जी की 9 वर्ष की थी जब उनके पिता श्री चन्द्रकुमार जी का 34 वर्ष की लघु आयु में देहावसान हो गया ।

सरकार ने इनके स्टेट को कोर्ट ऑफ वार्ड में ले लिया और देवकुमार जी के 18 वर्ष के होने तक स्टेट के लिए एक सरकारी प्रबन्धक नियुक्त कर दिया ।

धर्मकुमार जी का विवाह सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता (पं० मोतीलाल नेहरु, पं० मदन मोहन मालवीय और क्रांतिकारी राजा महेन्द्र प्रताप के परम मित्र और सहयोगी) वृंदावन के प्रसिद्ध सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्त्ता श्री नारायण दास जी की पुत्री चन्दाबाई से हुआ । रुप और गुण से सम्पन्न धर्मकुमार जी जैसे युवक को पाकर नारायण दास जी बड़े प्रसन्न थे । धर्मकुमार जी नारायण दास जी से कांग्रेस की राजनीति और स्वदेशी आन्दोलन के विषय में बराबर चर्चा किया करते और आकर भाई को भी अपने सुलझे विचारों द्वारा प्रसन्न किया करते थे ।

देवकुमार जी की बहुत इच्छा थी कि धर्मकुमार संस्कृत और जैन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान् होकर निकले । बम्बई के पंडित लाला रामजी शास्त्री उन्हें धर्म और संस्कृत पढ़ाने के लिए बुलाये गए थे। कुछ ही समय में धर्मकुमार जी को जिन्हें संस्कृत भाषा से बहुत लगाव था संस्कृत शिक्षा के लिए कई पाठशालाएँ खुलवाई थी । धर्मकुमार जी की स्कूल और कॉलेज की शिक्षा भी बहुत सफल रही थी । 14 वर्ष की लघु आयु

में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और 16 वर्ष की अवस्था में बी० ए० कक्षा में पहुंच चुके थे।

अपने भैया से वे उद्योग स्थापित करने के विषय में बराबर चर्चा किया करते थे और अपने विचारों से अवगत कराते रहते थे। लघु उद्योगों और बड़े उद्योगों की कई स्कीम उन्होंने तैयार की थी। लगता है कि दोनों ही भाईयों के विचार इस विषय में एक समान थे। देवकुमार जी ने 1888 ई० और 1904 ई० के बीच जैन गजट के सम्पादकीय में भारत के उद्योगीकरण के विषय में अपने जो विचार लिखे हैं वे सभी ठोस और विचार पूर्ण हैं। वैसे ही विचार धर्मकुमार जी के भी थे।

स्वदेशी कल-कारखानों की वृद्धि पर बल देते हुए उन्होंने लिखा था-

'जरूरी है कि हम कपड़ा, दियासलाई, लैम्प आदि कुल चीजों के इतने कारखाने खोलें जिससे हमें विलायत से समान मँगाने की जरूरत न पड़े।'

हमको इस देश में ऐसे कल और कारखानों के लिए जानकार मनुष्य पैदा करने चाहिए'।

' हमारा तो विश्वास है कि जब तक कि हमारे भारत के व्यापारी प्रिय बन्धु अमेरिका जाकर शिल्प-विद्या का लाभ न लेंगे, तब तक इस देश में कारखानों का बढ़ना कठिन है।'

' जैन शास्त्रों में राजाओं और सेठों के जो चरित्र हैं उनमें बहुतों ने समुद्र यात्रा की थी, ऐसे प्रमाण मिलते हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिका व इंगलैंड में बिना मांस भक्षण किये कोई रह नहीं सकता, यह भी गलत है। लाखों आदमी विलायत, अमेरिका आदि में माँस व मदिरा त्यागी मौजूद हैं।'

स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के विषय में उन्होंने लिखा कि -

हमको महँगे, सस्ते फैशन, गैर फैशन का ख़्याल छोड़कर अपने देश की बनी चीजों का व्यवहार करना चाहिए, जिससे यहाँ की कारीगरी चमक उठे और फिर हमें दुर्भिक्ष फंड नहीं खोलना पड़े और न भारत के गारत की कहानी बयान करनी पड़े।'

एक सम्पादकीय में 'स्वावलम्बन' पर लिखते हुए उन्होंने कहा -

अमेरिका के लोग अपने पुत्रों को स्वावलम्बन का नियम सिखलाते हैं और युवक होने पर उन्हें खाना कपड़ा नहीं देते हैं, बल्कि वे युवक खुद मेहनत करके धन पैदा करते और कॉलेजों में विद्यालाभ करते हैं। - पर खेद है कि हमारे लड़के आराम की कोठरी में बैठकर विद्या प्राप्त करना चाहते हैं। भला कहीं गद्दी और मसनद पर बैठकर तप होता है ?

बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन के विषय में उन्होंने लिखा-

ऐसी सभा स्थान-स्थान, नगर-नगर में होनी चाहिए कि भारत के व्यपार, शिल्प कला-कौशल की उन्नति हो। हमारे जैनी भाईयों को भी देश की भलाई में सम्मिलित होना चाहिए।'

बंग-भंग आन्दोलन की चर्चा करते हुए उनके विचार समय को देखते हुए बड़े क्रान्तिकारी थे।

उन्होंने लिखा-

'इस प्रकार प्रजा की पुकार पर ध्यान न देना एक भारी अनैतिक भूल है और बुरे परिणामों से खाली नहीं है।'

इधर धर्मकुमार जी बी० ए० की अपनी शिक्षा पूरी करने में लगे थे, उधर उन्होंने अपने भाईयों से विचार विमर्श कर परिवार के निकटस्थ एक स्थानीय मित्र सहाय जी को जापान जाकर चीनी मिल लगाने और चलाने की शिक्षा लेने की प्रेरणा दी। यह निश्चय हुआ कि जब सहाय जी जापान से तकनीकी शिक्षा लेकर आवेंगे तब दोनों भाई उनके साथ मिलकर एक आधुनिक चीनी मिल लगवायेंगे । तदनुसार, सहाय जी जापान चले गये। वे एक सक्षम, पढ़े लिखे और तेजस्वी नवयुवक थे और इन दोनों भइयों के निवास स्थान के निकट ही 'बघवा गली' में रहते थे।

इधर यह सब कुछ हो ही रहा था। घर में सुख और शान्ति विराज रही थी । धर्म और कर्म के क्षेत्रों में देवकुमार जी की कीर्ति के साथ उनके घराने की कीर्तिध्वज फहरा रही थी । परन्तु भविष्यतव्य को कौन जान सका है ?

सन् 1900 में आरा में प्लेग महामारी का रूप लेकर आई । नगर में त्राहि-त्राहि मच गया । पहले तो बहन नेमसुन्दरी जी को उनके ससुराल (वे दानवीर हरप्रसाद दास जी की पुत्र वधू थीं) में ही प्लेग हो गया ।

दोनों भाईयों ने राय की । देवकुमार जी को यह सूचना मिली कि बाबू हरप्रसाद दास जी बहुत डर गये हैं क्योंकि प्लेग छूत का भयंकर रोग होता है । वे धर्मकुमार जी की सहमति पाकर स्वयं जाकर डाली में बिठाकर अपनी बहन को अपने घर लिवा लाए। उनका इलाज, परिचर्या की और फिर सभी को लेकर, करमनटोला स्थित नगर के बाहर अपने बाग में सपरिवार चले गए ।

वहाँ कुछ दिन रहकर वे श्री सम्मेद शिखर की यात्रा पर चल पड़े । धर्मकुमार जी अत्यन्त प्रसन्न और तीर्थराज की यात्रा का अवसर पा आह्लादित थे ।

तीर्थराज की यात्रा सानन्द हुई । धर्म और पूजन भजन में सभी पूर्णयोग दे रहे थे ।

गिरीडीह वापस पहुँचने पर धर्मकुमार जी को ज्वर आ गया । सभी के दिल धड़क उठे । ज्वर बढ़ता गया और फिर जाँच से स्पष्ट हो गया कि उन्हें प्लेग ने जकड़ लिया है। देवकुमार जी का हँसमुख चेहरा गम्भीर हो गया ।

और फिर भाई की गोद में सर रखे हुए, भगवान् का नाम सुनते हुए धर्मकुमार जी सबको रोता-बिलखता छोड़कर सदा के लिए चले गये ।

उस समय उनकी आयु मात्र 18 वर्ष की थी। यह अत्यन्त दुखदाई घटना दिगम्बर जैन बीस पंथी कोठी के गिरिडीह धर्मशाला में हुआ । यह धर्मशाला अभी स्थानीय श्री दिगम्बर जैन समाज की देखरेख में है ।

(साभार-श्री जैन सिद्धांत, भास्कर-अंक-32, भाग-2)

(बाबू धर्मकुमार जी का चित्र अनुमान से चि० पराग ने बनवाया है— सु० कु०)

❖

आर्यिकारत्न पं० चन्दाबाई जी
महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व

♦ डा० नेमिचन्द्र शास्त्री
'ज्योतिषाचार्य',आरा

माँश्री चन्दाबाई जी का जन्म विक्रमाबाद 1946 की आषाढ़ शुक्ल तृतीया की शुभ बेला में वृन्दावन मे हुआ था। अपके पिता का नाम श्री बाबू नारायण दास अग्रवाल और माता का श्रीमती राधिका देवी था। बाबू नारायण दास जी सम्पन्न जमीन्दार प्रतिभाशाली एवं ग्रेजुएट विद्वान् थे। पाँच वर्ष की अवस्था में बालिका चन्दाबाई का विद्या संस्कार किया गया। वैष्णव परिवार में जन्म लेने के कारण रामायण और गीता आपके अध्ययन के प्रिय ग्रंथ थे । कुछ ही समय में आपकी शिक्षा समाप्त हुई और बारह वर्ष की अवस्था में आपका विवाह संस्कार आरा नगर के सम्भ्रान्त प्रसिद्ध जमीन्दार जैन धर्मानुयायी पं० प्रभुदास जी के पौत्र, श्री बाबू चन्द्र कुमार जी के पुत्र श्री धर्मकुमार के साथ सम्पन्न हुआ था। दैववशात् बाबू धर्मकुमार जी की मृत्यु विवाह के कुछ समय बाद हो गई और मात्र तेरह वर्ष की अवस्था में ही वैधव्य की वैधवीकला आपकी चिर संगिनी बनी । आपके जेठ देव-प्रतिमा स्वनामधन्य बाबू देवकुमार जी ने आपकी उच्च शिक्षा का पूरा प्रबन्ध किया। श्री बाबू देवकुमार जी ने अपनी अनुजवधू को विदुषी, समाज सेविका और साहित्यकार बनाने में कोई कमी नहीं रखी। आपने घोर परिश्रम कर संस्कृत, व्याकरण, न्याय, साहित्य, जैनागम एवं प्राकृत भाषा में अगाध पाण्डित्य प्राप्त किया और राजकीय संस्कृत विद्यालय काशी की पंडिता परीक्षा उत्तीर्ण की, जो वर्त्तमान में शास्त्री परीक्षा के समकक्ष है।

माँश्री चन्दाबाई जी

माँश्री की लोकसेवा

इस बीसवीं शताब्दी का वह दशक, जिसमें देश ने एक जोर की अंगड़ाई ली और विदेशीय शासन-सत्ता की कड़ियाँ तड़ातड़ टूट रही थीं, माँश्री

की देश सेवा एवं जन सेवा महत्वपूर्ण है। यों तो सभी बुद्धिजीवी भारत माँ को बन्धन मुक्त करने की चेष्टा कर रहे थे। सभी का त्याग और बलिदान भारत के स्वातन्त्र्य आन्दोलन के इतिहास में अपना निजी स्थान रखता है पर माँश्री की मूक सेवा देश के किसी भी नेता से कम नहीं है। यद्यपि जेल नहीं गई, पर अपने कितने भाई-बहनों को स्वातन्त्र्य आंदोलन में भाग लेने की प्रेरणा दी और कितने भाइयों को गुप्त रुप से आर्थिक सहयोग प्रदान किया। सन् 1920 में आपने चर्खा चलाना आरम्भ किया तथा देश के स्वातन्त्र्य होने तक अपने इस अनुष्ठान को करती चली आई। खद्दर-पहनने का नियम बराबर चलता रहा। खद्दर का प्रचार तथा देश के अन्य आवश्यक कार्यों के लिए चन्दा एकत्र करना और स्वयं चन्दा देकर उन कार्यों को सम्पन्न कराना आपका जीवन व्रत था। दु:खी, गरीब और असहायों की सेवा में आप सदा संलग्न रहती हैं। आप इतनी दयालु थीं कि हरी घास पर चलने में भी संयम रखती थीं। दीन-दु:खी महिलाओं को आर्थिक एवं अन्य आवश्यक सहयोग देकर उन्हें सुखी बनाने में सदा संलग्न रहती थीं। आपकी लोक सेवा मात्र शाहाबाद तक ही सीमित नहीं है अपितु बिहार तथा भारत के अन्य प्रदेशों तक भी व्याप्त है। बाढ़, महामारी और दुष्काल के अवसर पर आप जनता की तन, मन और धन से सेवा करती हुई दृष्टिगोचर होती थीं।

नारी जागरण

दासत्व की श्रृंखला में जकड़ी घूंघट में छिपी, अज्ञान और कुरीतियों से प्रताड़ित नारी की दशा को उन्नत बनाने के लिए आप सदा प्रयत्नशील रहती हैं। आपने सन् 1909 में भारतीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् की स्थापना कर नारी जागरण का मंत्र फूंका। इस संस्था के प्लेटफार्म से आपने नारी जागरण के अनेक कार्य किये हैं। कितनी ही सुयोग्य होनहार छात्राओं को छात्रवृत्तियाँ, विधवाओं और दु:खी बहनों को आर्थिक सहयोग एवं आजीविका विहीन नारियों को आजीविका देने का कार्य किया है। इस संस्था के माध्यम से माँश्री दु:खी, अयोग्य, रोगी एवं असहाय नारियों की सेवा के अतिरिक्त रात दिन नारी जागरण की शंखध्वनि भी किया करती हैं।आपने कानपुर में सम्पन्न हुए इस परिषद् के दसवें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर नारियों को जाग्रत करते हुए कहा था-

" अविद्या राक्षसी ने हमारी बहनों को मनुष्यत्व से वंचित कर रखा है। जो हमारी वृद्ध माताएँ नारी शिक्षा की अवहेलना करती हैं तथा पढ़ने-लिखने का कार्य केवल पुरुषों का समझती हैं, वे सचमुच अंधेरे में हैं, दिशा भूली हुई हैं। हमारा विश्वास है कि शिक्षा जितनी पुरुषों को आवश्यक है, नारियों को उससे कहीं अधिक। भावी संतान के सुयोग्य और शिक्षित बनाने का दायित्व माताओं पर ही रहता है। अतः हमें इस बात को सदा याद रखना चाहिए कि देश की उन्नति महिला-जागरण के बिना संभव नहीं है। महिलाओं को जागृत होना ही

पड़ेगा । उन्हें इस बात को समझना होगा कि उनकी सेवा का क्षेत्र पारिवारिक सीमा में ही बन्धा नहीं है, बल्कि उससे आगे भी उन्हें सोचना है और दायित्व को संभालना है । हम देश की नारियों से अपील करती हूँ कि वे ज्ञानी, कर्त्तव्य परायण और जागरूक बनें । देश का पुनरुत्थान नारियों के सहयोग के बिना संभव नहीं है । समाज देश और राष्ट्र को सुखी सम्पन्न और सदाचारी बनाने के लिए नारियों को जागृत होना ही पड़ेगा ।''

माँश्री केवल वचनों द्वारा ही नारी-जागरण नहीं करती, बल्कि अपना क्रियात्मक योगदान देती हैं । आपके प्रयास से बिहार के बाहर भी नारी शिक्षाएँ नारी-जागरण का काम कर रही हैं ।

शिक्षा सम्बन्धी सेवा :

नारी के सर्वांगीण विकास के लिए सन् 1907 में आपने बाबू श्री देवकुमार जी द्वारा आरा नगर में एक कन्या पाठशाला की स्थापना करायी और स्वयं उसकी संचालिका बन नारी शिक्षा का बीज बपन किया। माँश्री इस शाला में मध्याह्न के समय मोहल्ले की नारियों को एकत्रकर स्वयं शिक्षा देतीं तथा उन्हें कर्त्तव्य का ज्ञान कराती थीं।

इस छोटी-सी पाठशाला की सेवा से आपको संतोष नहीं हुआ और सन् 1921 में नारी शिक्षा के प्रसार के निमित्त श्री जैन बाला विश्राम नाम की शिक्षा संस्था स्थापित कीं । इस संस्था में लौकिक और नैतिक-शिक्षा का पूर्ण प्रबंध किया। विद्यालय भवन के साथ छात्रावास की भी सुन्दर व्यवस्था की गई।

इस महिला विद्यापीठ ने नारी शिक्षा का प्रसार बहुत तेजी से किया। माँश्री के संरक्षण में रहने वाली महिलाएँ आदर्श देवियाँ बनकर निकलतीं और वे अपने-अपने स्थनों पर जाकर नारी शिक्षा संस्था को जन्म देतीं। फलत: श्री जैन बाला विश्राम के केन्द्र के चारों ओर अनेक शिक्षा संस्थाओं की परिधि में चक्कर लगाने लगी। वह आदर्श संस्था जयपुर के वनस्थली विद्यापीठ के समान स्वतंत्र रूप से नारी शिक्षा का प्रचार कर रही है।

इस संस्था का वातावरण बहुत ही विशुद्ध और पवित्र है। यहाँ पहुँचते ही धवल-वसना हंसवाहिनी और वीणावादिनी सरस्वती आगन्तुकों का स्वागत करने के लिए प्रस्तुत रहती हैं। छात्रावास और विद्यालय भवनों की विशेषता ईट-चूने से बनी भव्य ईमारत में नहीं है; किन्तु रक्तमाँस से निर्मित साध्वी माँश्री के व्यक्तित्व के आलोक से आलोकित होने वाली अगणित बालाओं के उत्थान में है। माँश्रीने इस संस्था में अपना तन, मन, धन, सब कुछ दिया है। आपकी तपस्या छात्राओं को स्वत: आदर्श बनने की प्रेरणा देती हैं। माँश्री की सेवा, त्याग, और लगन का मूल्य चाँदी के टुकड़ों में नहीं आंका जा सकता है। इस संस्था में आरा नगर और बिहार प्रदेश की छात्राएँ ही विद्याध्यन नहीं करतीं, बल्कि भारत के कोने-कोने की बालाएँ शिक्षा प्राप्त करती हैं। इस संस्था की महत्ता देशरत्न

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, नवयुवक प्राण श्री जयप्रकाश नारायण, श्री संत बिनोवा भावे एवं श्री काका कालेलकर आदि मनीषियों ने स्वीकार की है आपलोगों की शुभ सम्मतियाँ दर्शक-पत्रिका में अंकित है।

साहित्यिक सेवा

जिस प्रकार भारतेन्दु का साहित्य हिन्दी साहित्य नवोत्थान का ज्वलन्त इतिहास है, उसी प्रकार माँश्री का अजस्र साहित्यिक धारा में महिला साहित्य के सुनहले प्रभात का उद्भव और पुष्ट होना भी । साहित्यिक पुरुषत्वाद की अंतिम विजयश्री पर मांश्री ने महिला साहित्य को अपने व्यक्तित्व का आत्म निर्माणकर जगाया और संजोया है । अपने व्यक्तित्व के अभयदान से महिला साहित्य को अभिसिंचित तथा अनुप्राणित किया है । अब तक आपकी बारह-तेरह रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उपदेश रत्नमाला, सौभाग्य रत्नमाला, निबन्ध रत्नमाला, आदर्श निबन्ध दर्पण, आदर्श कहानियाँ आदि मौलिक रचनाएँ हैं। इन रचनाओं के अतिरिक्त आप सन् 1922 से 'जैन महिलादर्श' नामक हिन्दी मासिक पत्र का सम्पादन भी करती रही हैं। यह पत्र अखिल भारतवर्षीय दि० जैन महिला परिषद् का मुख्य पत्र है। इसमें सामयिक विचारधाराओं के अतिरिक्त शिक्षा, सदाचार और आत्मविश्वास विषयों पर आपकी लेखनी से निर्मित रचनाएँ प्रत्येक महीने में पढ़ने को पाठकों को प्राप्त हैं। माँश्री की समस्त साहित्यिक कृतियों का पृथक् परिचय देना तो इस छोटे से निबन्ध में संभव नहीं। अतः संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि इनके साहित्य में नारी समाज के नवोत्थान की भावना पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित है। जहाँ इन्होंने गंभीर विचारों का प्रतिपादन कर अपनी अनुभूतिशीलता का परिचय दिया है वहाँ अपनी शैली को उपदेशात्मक बनाकर अबाल वृद्ध के लिए रचनाओं को अस्वाद्य बना दिया है। यही कारण है कि हम माँश्री को हिन्दी में जैन महिला साहित्य के नवोत्थान का इतिहास कह सकते हैं। साथ ही इन्हें एक सीमा रेखा पर जन्म लेने वाले साहित्यकारों में परिगणित किया जा सकता है ।

माँश्री के व्यक्तित्व की छाप उनके साहित्य पर अमिट रूप से मिलती है । साधना और आत्मिक आदर्शों से अनुस्यूत उनके निबंध आदर्श जीवन के निर्माण में बहुत ही उपयोगी है। आपने नपे-तुले शब्दों में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की अभिव्यंजना की हैं। नारी साहित्य में आप की कृतियाँ स्थायी महत्त्व प्राप्त करती हैं। आपने जीवन के सभी दृष्टिकोणों से अपने साहित्य में विवेचना की हैं ।

संस्कृतिक सेवाएँ

माँश्री संस्कृति के प्रसार तथा अपने श्रमण संस्कृति के प्रसार में अहर्निश संलग्न रहती हैं। अपने श्रमण संस्कृति के प्रसार के लिए बिहार के राजगृह, पावापुरी, आरा, आदि स्थानों में विपुल धन राशि व्यय कर सुन्दर जैन मंदिरों का निर्माण कराया है। बिहार के बाहर वृन्दावन में भी एक जिनालय आप

द्वारा निर्मित है।

राजगृह को जैनागम में बहुत पवित्र माना गया है। यहाँ के विपुलाचल पर अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी का समवशरण आया था तथा बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत की यह जन्मभूमि भी है। माँश्री ने रत्नागिरि पर्वत पर मुनि सुब्रतनाथ का मंदिर बनवाया। जिस उन्नत पहाड़ी भूमि पर यह जिनालय स्थित है, वह स्थान इतना पवित्र और रम्य है कि वहाँ पहुँचते ही मनपूत भावनाओं से भर जाता है, पाप-रज-कण उड़ जाते हैं, इतना आमोद उत्पन्न होता है कि एक क्षण के लिए साधक सब कुछ भूल जाता है और भक्ति सरोवर में डुबकियाँ लगाने लगता है। सचमुच में जिनालय निर्माण के लिए इतनी सुन्दर भूमि का निर्वाचन कला और संस्कृति की मर्मज्ञता का परिचायक है। इस मन्दिर के कलश, मिहराब, जालियाँ झरोखे आदि वास्तु शास्त्र के अनुसार बनवाये गये हैं।

आरा में निर्मित मानस्तम्भ माँश्री की सांस्कृतिक सुरुचि का परिचायक है । श्री जैन बाला विश्राम में विद्यालय भवन के ऊपर निर्मित जिनालय और उसकी परिक्रमा अपनी रमणीयता से दर्शकों को लुभाए बिना नहीं रहती । इस परिक्रमा स्थान पर पड़ने वाली प्रात: कालीन उषा की लालिमा अपनी आभा द्वारा अद्‌भुत छटा विकीर्ण करती है। उद्यान से छनकर आनेवाली शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु दर्शक के मन को पवित्र कर देती हैं। मन्दिरों के अतिरिक्त माँश्री ने अनेक जैन मूर्तियों का निमार्ण एवं उनकी पंच कल्याणक प्रतिष्ठाएँ भी करायी हैं । हस्तशिल्प में भी आप प्रवीण हैं, पुजा-प्रतिष्ठा के अवसरों पर बनाये जाने वाले माड़नों -नक्शों को आप बड़े ही कलापूर्ण ढंगों से बनाती। भगवान के पूजास्त्रोतों में आपकी मधुर अमृतवाणी को सुनकर मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी स्तब्ध हो जाते हैं।

माँश्री स्वयं सुसंस्कृत हैं और भारतीय संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में अहर्निश संलग्न रहती हैं। बिहार में की गयी सांस्कृतिक सेवाओं को निम्न पदों में विभक्त किया जा सकता है।

1. संस्कृति के आधार स्तम्भ मन्दिर, मूर्तियों एवं अन्य कला-कृतियों के निर्माण द्वारा ।

2. स्वयं तप:भूत जीवनयापन करते हुए अन्य लोगों को आदर्श और सांस्कृतिक बनाने की प्रेरणा द्वारा ।

3. दान द्वारा सामाजिक कार्यों में सहयोग देकर ।

4. सांस्कृतिक स्थानों के जीर्णोद्धार एवं नावाभ्युदयिक कार्यों के निर्माण द्वारा ।

इस प्रकार माँश्री ने अपनी विभिन्न प्रकार की सेवाओं द्वारा बिहार के नवनिर्माण और नवोत्थान में सहयोग बराबर दिया। आप वर्ष में दो-एक बार विभिन्न स्थानों में जाकर अपने उपदेश द्वारा भी महिला-जागरण का कार्य करती रहीं ।

राजर्षि बाबू देवकुमार जी की बहन
'श्रीमती नेम सुन्दरी देवी'
(उनकी जुबानी कही गाथाओं पर आधारित)

♦ सुबोध कुमार जैन

बाबू हर प्रसाद जी ने अपने पुत्र का विवाह दानवीर बाबू देवकुमार जी के यहाँ कर अपने घर लक्ष्मी ले आये थे। उनकी पुत्रबधू बा० देवकुमार की सगी बहन थीं। लोग उन्हें बड़की बीबी कह कर पुकारते थे।

हर प्रसाद जी बड़की बीबी को बहुत मानते और सभी बातों में उनकी सलाह लेते थे। जब बड़की बीबी ने अपने भाई के जमींदार होने की बड़ाई की तो हर प्रसाद दास जी ने देखते-देखते अनेक जमीन खरीकर जायदाद खड़ी कर ली। साहुकारी उनके घर का पेशा था। इसलिए यह नया धन्धा उन्हे कठिन-सा लगा। परन्तु 'बड़की बीबी' के आगे उनका मान रह गया, इस बात की उन्हें खुशी थी। एक दिन बड़की बीबी ने कहा कि- उनके भाई ने धार्मिक कार्यों के लिए अपनी सम्पत्ति का बहुत बड़ा हिस्सा दान कर दिया है। इस पर हर प्रसाद जी कुछ बोले नहीं कुछ दिनों बाद फिर 'बड़की बीबी' ने कहा कि उस दान में उनके भाई 'प्रहाप' नाम का बहुत बड़ा गाँव ट्रस्ट कर रहे हैं। हर प्रसाद दास जी ने सुन लिया पर कुछ बोले नहीं।

श्रीमती नेम सुन्दरी देवी

बाबू देवकुमार को तो अपनी छोटी उम्र में दानवीर होने का यश मिल चुका था। जब वे तीस वर्ष के भी नहीं हुए थे। वे सारे भारत की परिक्रमा कर जैनधर्म और समाज के उत्थान की पताका फहरा चुके थे। इन कार्यों के लिए उन्होंने अपना तन, मन, धन सभी अर्पण कर दिया था। हर प्रसाद दासजी पढ़े लिखे भी कम थे जिससे धर्म और शास्त्र का ज्ञान उन्हें कुछ विशेष नहीं था। जब कोई दान और धर्म का उपदेश देता तो वे कहते कि भाई मुझे समझ में नहीं आता।

एक दिन जब उन्होंने 'बड़की बीबी' को अकेले बैठे पाया तो पूछा, तुम्हारे भाई ने क्यों इतना सारा धन दान में दे दिया'?

बड़की बीबी- "भैया कहते हैं कि बाल बच्चों की उचित व्यवस्था कर बाकी सारा धन मनुष्य को धर्म और समाज की सेवा में लगा देना चाहिए।"

हर प्रसाद दास जी ने कहा 'इससे क्या कोई बड़ा यश मिलेगा ?'

बड़की बीबी- भैया कहते हैं कि संसार का यश तो दूर रहा उन्हें दान करने से पुण्य लाभ का मोह भी नहीं है।

हर प्रसाद - कुछ और समझा कर कहो ।

बड़की बीबी- 'भैया कहते हैं कि अज्ञानी जीव ही दान करने को पुण्य और धर्म मानते हैं और समझते हैं कि उससे स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होगी'।

हर प्रसाद - और ज्ञानी जीव क्या कहते हैं ?

बड़की बीबी - ज्ञानी कहते हैं कि दान करने से पुण्य, पाप अथवा धर्म कुछ नहीं होता, क्योंकि वह तो जड़ है, आत्मा उसका कर्त्ता नहीं है।

हर प्रसाद - तो क्या करना चाहिए ?

बड़की बीबी - पैसे से ममत्व भाव दूर करना चाहिए। इससे कषाय मंद होती है और पुण्य होता है।

हर प्रसाद - "यह सब क्या तुम्हारे भैया कहते हैं ?

बड़की बीबी - "जी" ।

हर प्रसाद - अच्छा बेटी, क्या तुम्हारे भैया ज्ञानी हैं ?

बड़की बीबी - हाँ वे धर्म और अधर्म का भेद जानते हैं।

उस दिन से हर प्रसाद दास जी के चेहरे पर सदा व्यग्रता रहती । उनका समय मंदिर और स्वाध्याय में बहुत लगने लगा । थोड़ा बहुत दान धर्म भी करना उन्होनें शुरु किया ।

कुछ समय बीता । एक दिन हर प्रसाद जी के घर में बड़ी अशान्ति आरंभ हुई। एक ज्योतिषी ने उन्हें बतलाया कि उनकी मृत्यु शीघ्र होने वाली है। उसने उन्हें मुत्यु का दिन और समय भी बतला दिया । घर में रोना, पीटना मच गया । पूर्ण स्वस्थ हर प्रसाद जी उसी दिन से अस्वस्थ रहने लगे । नगर भर के लोग उनसे मिलने आने लगे- कोई उनसे ज्योतिषी की बात पर अविश्वास करने को कहता तो कोई उनसे संवेदना प्रकट करता। परन्तु वे चुपचाप दुःखी मुद्रा में पड़े रहते ।

एक दिन मौका पाकर बड़की बीबी बोली, ' भैया कहते थे कि इस प्रकार मिथ्यात्वियों की माया में पड़कर अपने शरीर के मोह में आर्त्तभाव रखना इस लोक और परलोक दोनों के लिए दुःखदायी होगा ।

दुःखी होकर हर प्रसाद जी बोले- तो क्या करूँ ?

बड़की बीबी - करना क्या है। जिन्दगी या मौत किसी के हाथ की बात है? भैया कहते हैं शरीर तो नाशवान् है ही । उसके मोह में पड़कर रोने से

इसे अमरत्व तो मिलेगा नहीं । आत्मा ही अजरअमर है और सर्वशक्तिमान है। उसकी ही पूर्णता पाने के लिए अपने को तप में लगा लेना ही हमलोगों का श्रमण धर्म है।

हर प्रसाद जी लम्बी साँस लेकर चुप रह गये।

बड़की बीबी - 'हम लोगों का हृदय कहता है कि जैसा ज्योतिषी ने बतलाया है, कुछ होगा नहीं'।

नियत तिथि और समय पर हर प्रसाद जी के यहाँ भीड़ लग गई । हर प्रसाद जी लोगों से विदा माँग चुके थे और सभी की नजर घड़ी पर गड़ी हुई थी। नियत समय पर हर प्रसाद दास जी के चेहरे पर बेहद बेचैनी और व्यग्रता छा रही थी। ऐसा देख कर लोगों को परेशानी हुई और अन्तिम समय कहीं सचमुच तो नहीं आ गया, ऐसा संशय हुआ । सभी लोग दुःखी हो चिन्तापूर्वक उन्हें देख रहे थे और स्त्रियों के नेत्रों में आंसू आ गये थे कुछ तो रोने भी लगी थीं। पर नियत समय बीत गया और कुछ नहीं हुआ । और भी कुछ देर ठहरा गया फिर सभी हंसते मजाक करते वहाँ से तितर-वितर हो गये । हर प्रसाद जी बहुत लज्जित हुए।

कई वर्षों के बाद हर प्रसाद दास जी का अन्त सचमुच आ पहुंचा । रुग्ण अवस्था में भी अपनी पुत्रवधू से शास्त्र वँचवा कर सुनते। प्राणान्त होने के एक दिन पूर्व पढ़ने के लिए शास्त्र लेकर बैठती हुई बड़की बीबी से उन्होंने पूछा- आज कौन शास्त्र पढ़ रही हो ?

बड़की बीबी - ''समयसार''

उन्होंने दोनों हाथों से शास्त्रों को नमस्कार किया और आरंभ करने को कहा । बड़की बीबी पढ़ने लगीं - 'पुण्य या जड़ क्रिया से जो आत्मा धर्म मानेगा वह जीव मिथ्यात्व के कारण निगोद में जावेगा ।

हर प्रसाद दास जी - '(रुंधे हुए कण्ठ से)' बेटी तुम्हारे भैया भी तो ऐसा ही कुछ तुमसे कहते थे।'

मरणासन्न व्यक्ति की ऐसी बात सुनकर वह रो उठी । रुलाई से शब्द फटने न पावे इसलिए उसने मुँह में आंचल दबा लिया ।

हर प्रसाद जी - 'चुप क्यों हो गई बेटी ?'

किसी प्रकार अपने को संभालकर वह बोली 'हां बाबू जी । पर यह बात डराने के लिए शास्त्रकार ने नहीं कही है, मिथ्यात्व का यथार्थ' स्वरूप समझाया है। बाबू जी दूसरा प्रकरण पढ़ूं क्या ?

'नहीं, वही पढ़ो आँखों को बन्द किये हुए बहुत कष्ट से वे बोले'

वह पढ़ने लगी - ' जिसने आत्मा के ज्ञान को स्वभाव से छुड़ाकर संयोगों से जोड़ा है, उसके ज्ञान का परिणमन अत्यन्त हीन हो जावेगा । उसी का नाम निगोद दशा है। मिथ्यात्व के कारण उस जीव का ज्ञान अन्तिम सीमा तक ढँक जावेगा और दूसरे जन्म में एकेन्द्रिय के शरीर में जन्म लेगा । उसकी ज्ञान शक्ति अत्यन्त हीन हो जाने से वाह्य निमित्त रूप भी एक मात्र स्पर्शन इन्द्रिय के

अतिरिक्त अन्य इन्द्रियाँ नहीं हो सकती।

हर प्रसाद दास जी के बन्द नेत्रों के किनारे से आंसुओं की धार बह चली। पर वे इस समय शान्त मुख दिख रहे थे।

वह पढ़ती गई -

'और जिसने ज्ञाता साक्षी स्वरूप को स्वीकार करके विकार किया और पर के कर्त्तव्य की मिथ्या बुद्धि को उड़ा दिया है वह जीव प्रति समय अपने ज्ञातृत्व भाव में वृद्धि करता हुआ और रागादि भावों को दूर करता हुआ अल्प काल में केवल ज्ञान प्राप्त करता है और साक्षात रूप से सम्पूर्ण ज्ञाता हो जाता है। यह अपने ज्ञान स्वभाव की आराधना का फल है', हर प्रसाद जी के नेत्रों से आंसू रुक चुके थे और अब उनके चेहरे पर प्रसन्नतामय भव्यता खिल रही थी। ऐसा दीख पड़ता था मानों उन्हें सुख का बीज मंत्र मिल गया है ।

उसी दिन समय पाकर उन्होंने फिर बड़की बीबी को इशारे से बुलाकर अस्फुट स्वर में कहा 'बेटी, तुम्हारे भैया ने बहुत बड़ा दान किया था न ?'

वह आँखों में आँसू लिए बोली- "जी"।

दूसरे दिन लोगों को मालूम हुआ कि हर प्रसाद दास जी ने अपनी सारी सम्पत्ति श्री आदिनाथ भगवान के चरणों में समर्पित कर एक ट्रस्ट रजिस्ट्री कर दिया है । जिले के कलेक्टर स्वयं उनके घर कानूनी कार्रवाई करने आये थे। सम्पत्ति के एक मामूली हिस्से को वे अपने नाम पहले ही पृथक कर चुके थे। इस बार उन्होंने अपना सारा ही धन, धर्म और समाज की सेवा में लगा दिया।

मृत्यु के पहले उन्होंने बड़की बीबी से कहा था-

अपनी मृत्यु के समय सारी सम्पत्ति दान कर रहा हूँ। इसलिए मुझे दान देकर संसार में यश, सुख की प्राप्ति की आकांक्षा रही ही नहीं। हमारे पैसे से धर्म और समाज का लाभ हो, यही आकांक्षा मन में है, बड़की बीबी।'

उनका कायम किया हुआ- श्री आदिनाथ ट्रस्ट आज भी हजारों लोगों को लाभ पहुँचा रहा है। इसके द्वारा आरा में एक डिग्री कॉलेज, एक हाई स्कूल, एक परमार्थ औषधालय और एक धर्मशाला चल रही है जिसमें श्री सम्मेद शिखर की मार्बल पत्थर की 24 टोंको की दर्शनीय अनुकृति तथा आदि प्रभु का सुन्दर मन्दिर स्थापित कर प्रतिष्ठा कराई गई थी। उन्होंने पटना में एक अग्रवाल होस्टल तथा शिखरजी में तेरह पंथी मूल मन्दिर की स्थापना और प्रतिष्ठा कराई थी । इसके सिवाय हजारों दीन दुखियों को आर्थिक सहायता पहुंचाई जा रही है। बड़की बीबी को अपने श्वसुर पर अपार गर्व था ।

बड़की बीबी की सबसे बड़ी यश गाथा तो उनके द्वारा निर्मित श्री जैन बाला विश्राम में विशाल विद्यालय भवन तथा उसके ऊपर भवन तथा उसके ऊपर भगवान महावीर स्वामी जिनालय एवं भगवान बाहुबलि की विशाल मूर्ति की स्थापना तथा दोनों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ आरा नगर को अमर बना गई हैं।

❖

निर्मल कुमार, चक्रेश्वर कुमार
"हमारे बब्बू और छोटे"

♦ ब्र० चन्दाबाई जैन

यह हमारे लिए बड़े दु:ख की बात हुई कि हमारे सामने ही हमारे दोनों बच्चों का देहावसान हो गया। दोनों की बीमारी ही ऐसी लग गई थी- बड़े को तो लकवा तथा छोटे को हृदय-रोग। हम बराबर आशंकित रहते थे और हमारे देखते-देखते दोनों काल-कलवित हो गए।

परन्तु दोनों ही बच्चे बहादुर और धार्मिक वृत्ति के थे। दोनों ने ही परिवार के यश में पर्याप्त वृद्धि की, धन कमाया और धन को धर्म में लगाया। जब श्री रामकृष्ण डालमिया बहुत आर्थिक कठिनाई में थे तब उन्हें साथ लेकर बिहटा में एक बड़े चीनी मिल को लगाया। बाद में जब डालमिया जी ने एक साथ 5 सीमेन्ट के कारखाने का आर्डर विदेशों में दे दिया, जिससे उनपर बड़ा भारी अर्थ संकट आ खड़ा हुआ, तब भी दोनों भाइयों ने उन्हें सब प्रकार से इस संकट से उबरने में सहयोग दिया। यह नहीं कि डालमिया जी ने अलग काम कर लिया तो उन्हें दोनों भाई अपना न समझें। एक बार जिसे भाई मान लिया फिर उसे अन्त तक निभाया। हमारे नैहर के गोविन्द, मुन्ना और मदन को भाई जैसा प्यार ऐसा दिया कि अन्त तक उन्हें वैसा ही मानकर अपनाये रहे। बराबर वृन्दावन, मथुरा जाते थे और हमारे भाई यमुना प्रसाद को यथेष्ट आदर-सत्कार देते थे। निर्मल कुमार का हाथ खर्च करने में बहुत खुला हुआ था। जितना कमाते सब घरेलू सुख-सुविधा के संवर्धन एवं दान-पुण्य में खर्च कर दिया करते थे। जैन बाला विश्राम के लिए दोनों भाइयों ने खुले दिल से सहर्ष घर के बड़े बगीचे और मकान ट्रस्ट कर दिये। मैं तो राजगृह जाकर बाला विश्राम खोलने का विचार कर चुकी थी पर मुझे नहीं

बा० निर्मल कुमार जी

बा० चक्रेश्वर कुमार जी

जाने दिया। दोनों ही भाईयों ने मुझे इतना अधिक प्यार सम्मान दिया कि क्या कोई अपनी मां को देगा ।

बचपन से ही मैंने भाईयों की शिक्षा-दीक्षा पालन-पोषण का भार उठा लिया था। दोनों ही अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के थे । जब बब्बू निर्मल कुमार ने मैट्रिक परीक्षा पास की तो मैंने कहा इनाम मांगो । उसने झट कहा आरा में किसी के पास मोटर नहीं है मुझे मोटर मंगवा दीजिए । मैने तुरंत मैंनेजर को आदेश देकर कामनवेल्थ नाम की बड़ी मोटरकार मंगवाकर दी।

छोटे चक्रेश्वर ने जब मैट्रिक पास किया तो उनसे भी इनाम मांगने को कहा । उसने सोने की हाथ की घड़ी मांगी सो उसे भी दी ।

छोटे को शास्त्र पठन-पाठन तथा पण्डितों से धार्मिक सिद्धान्त पर विचार विनिमय करने का बड़ा शौक था । जहाँ कहीं भी साधु-सन्तों से भेंट होती उनसे धार्मिक चर्चाएँ अवश्य किया करते थे। पूजा-पाठ तो दोनों भाई नियमपूर्वक किया करते थे । कई मंदिरों के निर्माण उन्होंने कराए और प्रतिष्ठाएँ कराई । परन्तु बब्बू में अपूर्व सम्यक्त्व था। कभी देवी -देवता की पूजा या ग्रह निवारण के लिए कोई विधान और मानता उन्होंने नहीं मानी । ज्योतिषियों को बराबर बुलाते थे पर कभी किसी के कहने में आकर अन्य मत का पूजा-पाठ नहीं करवाया। कई ज्योतिषियों ने उन्हें यह बता दिया था कि अमुक सप्ताह में 'मारकेश' है और बचना कठिन है; परन्तु सभी को चुप रहने को आदेश दे दिया। स्वयं हमलोगों को भी कुछ नहीं बताया । अन्त उसी सप्ताह में आया और अन्तिम होश तक मुस्कुराते रहे।

1935 में जब बब्बू को बिहटा मिल में हैजा हुआ तब मैं उनकी हिम्मत देखकर अचरज में आ गई थी। तब उनकी नब्ज एक बार छुट गई और डॉक्टर सभी घबरा गए तब भी वे हँसकर बोले -नब्ज नहीं मिल रही है क्या ?

कभी कोई कुछ मांगे और बब्बू भरपूर न दें ऐसा कभी न हुआ । बेलगछिया मंदिर में कुछ दिन जाकर क्या रहे, जी भरकर वहां के निर्माण में खर्च किया।

सभी को लेकर दक्षिण यात्रा पर गए। हर साल वे सपरिवार यात्रा पर जरूर निकलते थे । साथ में छोटे लाल जैन और उनकी पत्नी को भी ले गए। खूब दान धर्म किया और दक्षिणवालों ने सभी को जैसा आदर सत्कार दिया उससे मुझे अपने पूज्य जेठ जी (राजर्षि देव कुमार जी) की प्रसिद्ध दक्षिण की यात्रा याद आ गई । आरा में श्रवणबेलगोला के भट्टारक चारुकीर्ति महाराज को बुलाकर उनका बड़ा भारी जुलूस निकाला और उनका हर प्रकार से आदर-सत्कार किया।

आश्रम में ही अखिल भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटि की मीटिंग बुलाई, जिसमें रा० रा० सर सेठ हुकुमचन्द, सर सेठ भागचन्द आदि सभी भारतवर्ष के प्रमुख व्यक्ति इकट्ठे हुए थे। इतना बड़ा आयोजन पूर्ण सफलता के साथ पूरा किया जिसकी यशोगाथा लोग बराबर करते रहे । हुकुमचंद जी तो बब्बू का बड़ा आदर करते थे । कहते थे- " वह तो राजा है जमींदार है। कहां वह कहां हम। हम तो नीरे व्यापारी हैं।"

अल्यूमीनियम बनाने का कोई कारखाना भारत में नहीं था, बस दोनों भाईयों को धुन सवार हो गई उस बहुत बड़े काम को पूरा करने की । काम पूरा भी हो चला था । अपनी माता जी के नाम पर कारखाने का नाम 'अनूप नगर' रखा। इसी बीच

दुर्भाग्य से विश्व युद्ध हिटलर ने छेड़ दिया। आधी मशीन जर्मनी से नहीं आ सकी। इसी के कारण बहुत बड़े आर्थिक संकट में दोनों भाई पड़ गये। अगर लड़ाई कुछ महीने और बाद शुरु होती तो इस समय हिन्दुस्तान में दोनों भाई किसी भी उद्योगपति से पीछे नहीं होते। दोनों ही बड़े उद्यमी और मेहनती थे। बड़ी विशेषता यह थी कि इनके सभी कर्मचारी इन्हें बहुत आदर और अपनों सा प्यार देते थे।

जिस समय छोटे लाल ने कलकत्ते में वीर शासन जयन्ती का बड़ा उत्सव मनाया था, उसमें जिस आत्मीयता से बब्बू ने नवोदित शान्ति प्रसाद को मंच पर आगे लाने में छोटेलाल को पूरा सहयोग दिया उसकी प्रशंसा मैं कई लोगों ने सुन चुकी हूँ। ऐसी उदारता और बड़प्पन का भाव उनमें सदा था।

अपने नगर ही नहीं, बिहार प्रान्त ही नहीं, समूचे देश में बब्बू के यश को देख-सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती थी ।

तीर्थक्षेत्रों,. परिषद् और महासभा में, हर जगह बब्बू की सक्रियता से सभी प्रसन्न रहते थे। उनके प्रति विद्वानों, श्रीमानों एवं मुनित्यागियों का बराबर प्रशंसा का ही भाव मैं देखती और सुनती थी।

जब बब्बू को लकवा हुआ था और उन्हें बराबर कुर्सी पर उठाकर जहां-तहां ले जाया जाता था उस समय भी वे नियम पूर्वक हर अष्टमी और चतुर्दशी को आश्रम में बाहुबलि भगवान के दर्शन करने अवश्य आते थे। पूजा-पाठ बड़ी भक्तिपूर्वक और मगन होकर बाजे-गाजे के साथ सस्वर पाठ करते थे। साथ में छोटे और घर भर के बच्चों को भी बैठाते थे।

इमारत बनवाने का बहुत शौक था और इंजीनियरों को बिठाकर नक्शा बराबर स्वयं बनवाते थे। जैन बाला विश्राम, सिद्धान्त भवन, अपनी कोठी, बिहटा मिल, अल्युमिनियम फैक्ट्री की पूरी प्लानिंग जितनी खुबसूरती से उन्होंने की थी वैसा होना मुश्किल है।

बब्बू और छोटे दोनों ही मिला जुलाकर सर्वगुण सम्पन्न थे।

हमारे देखते-देखते हम पांच आदमियों का परिवार-पचास व्यक्तियों का भरापुरा परिवार हो गया। पोते पोतियां सभी विनयी, पठनशील, धार्मिक वृत्ति के और उद्यमी हैं। जमीन्दारी उन्मूलन से परिवार की आर्थिक स्थिति को बड़ा भारी धक्का लगा; परन्तु धीरज और सम्भाव से परिवार के छोटे-बड़े सभी व्यक्ति ने उसे सहा और उसका सामना किया। नये खेती, व्यापार उद्योग में सभी लग गए और दान-धर्म की परम्परा के अतिरिक्त समाज सेवा में जुटे रहे, यह परम संतोष की बात है। बच्चों ने बाला विश्राम, सिद्धान्त भवन और तीर्थ क्षेत्रों का बड़ा अच्छा संबर्धन और संचालन किया है। गूंगो-बहरों तथा अंधों के लिए तथा बच्चों के मांटेसरी स्कूल खोले हैं । 'भास्कर' का प्रकाशन नियम पूर्वक चल रहा है। मैं तो निश्चिंत हूँ कि ये सारी जनसेवी नई पुरानी संस्थाएँ इन बच्चों के समक्ष हाथों में है। परिस्थितियों को देखते हुए वे जितना कर रहे हैं उसे मैं कभी अधिक समझ कर सुबोध कुमार को रोकने का प्रयत्न करती हूँ, परन्तु उत्साह इतना अधिक है, कर्मठता इतनी है कि हम, ब्रजबाला और सभी आश्चर्य में पड़ जाते हैं और बच्चों की सफलता के लिए आशीष देते रहते हैं।

(साभार-श्री जैन सिद्धान्त भास्कर, अंक-33)

❖

चार पीढ़ी का अक्षुण्ण स्नेह

◆ सेठ नन्दलाल जैन,
इन्द्रविश्वास रोड, कलकत्ता

मुझे याद है कि राजर्षि स्व० देवकुमार जी रईस आरा वाले बिहार के प्रमुख जमींदारों में थे । सन् 1908 में उनको बड़ी कड़ी बीमारी हुई, जिसमें कलकत्ते के सभी प्रमुख डॉक्टर एवं वैद्यों के अनेक इलाज के बावजूद भी जीवन की आशा छोड़ दी थी और तभी 31 वर्ष की अल्प आयु में उनका स्वर्गवास हो गया। उस समय हमारे पूज्य पिताजी स्व० रामजीवन दास जी प्रत्येक दिन उनको देखने जाया करते थे तथा मुंगेर के सीताकुण्ड से एक ताम्बे का घड़ा गर्म जल का उनके पीने के लिए मंगवाया था। अब उस बात को पूरे 61 वर्ष हो गये। तब से इस परिवार से हमारे परिवार का सम्बन्ध चला आ रहा है और वह आज तक अक्षुण्ण है ।

उस समय बाबू निर्मल कुमार जी 8 वर्ष के थे तथा बाबू चक्रेश्वर कुमार जी बहुत छोटे थे । निर्मल बाबू के सभी पुत्रों तथा पौत्रों के साथ हमारे परिवार का बड़ा स्नेहमय व्यवहार चला आ रहा है । बाबू देवकुमार की मृत्यु के बाद आपके स्टेट को सम्भालने तथा इसके बढ़ाने तथा देख-रेख का सब भार स्व० बाबू बच्चूलाल जी जैन के ऊपर था । अन्त समय तक बाबू बच्चूलाल जी ने इसे बहुत अच्छी तरह सम्भाला और बाबू निर्मल कुमार जी के बालिग होते ही इनको सौंप दिया । इनके मामा जी स्व० बाबू करोड़ीचन्द जी जैन, आरा भी बड़े विद्वान् समझदार व्यक्ति थे। उनसे हमारा परिचय स्व० सेठ पद्मराज जी जैन, रानीवाले के यहाँ हुआ था। इन्होंने भी श्री जैन सिद्धान्त भवन, जिसे स्व० देवकुमार जी ने बनाया था, की देख-रेख में अपना हाथ बटाया। बाबू देवकुमार जी ने जैन ग्रन्थों के उद्धार के लिए बहुत दूर-दूर जाकर जैन ग्रन्थों को लाकर उनकी रक्षा की । यही उनके जीवन का सबसे बड़ा कार्य था। दूसरा श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, काशी को अपने मन्दिर तथा धर्मशाला, भदैनीघाट, काशी को देकर उसके चलाने का मासिक खर्चा दिया करते थे, और आप उसके आदि संस्थापकों में थे। उसी तरह स्व० बाबू निर्मल कुमार जी तथा उनके छोटे भाई स्व० बाबू चक्रेश्वर कुमार जी ने भी इन कार्यों को सुचारू रुप से चलाया । अब इस कार्य को निर्मल बाबू के द्वितीय पुत्र चि० सुबोध कुमार जी चला रहे हैं।

आप बड़े ही समझदार तथा दबंग हैं । आपको अपने वंश पर गौरव हैं । आप बाबू निर्मल कुमार जी की तरह समाज सेवा में लीन हैं और बिहार प्रादेशिक दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी का कार्य बड़े ही सुचारु रूप से कर रहे हैं । श्री स्याद्वाद विद्यालय तथा बाला विश्राम का कार्य अच्छी तरह चलाते हैं। भगवान जितेन्द्र देव से प्रार्थना है कि इस होनहार व्यक्ति की शतायुष हो तथा उसी प्रकार जैन समाज की सेवा करें ।

पूज्या श्रीमती चन्दाबाई जी का बाल्य अवस्था में ही वैधव्य हो गया था । आप स्व० बाबू देवकुमार जी के अनुज स्व० धर्मकुमार जी को ब्याही थीं । पीछे स्व० बाबू देवकुमार जी ने इनको पंडिताचार्य श्री नेमीसागर जी वर्णी महाराज द्वारा जैन सिद्धान्त ग्रन्थों का अध्ययन कराया, जिसका फल यह हुआ कि जैन समाज में स्त्री शिक्षा का कार्य इन्होंने उसी समय से कराना आरम्भ किया, जो आज तक बाई जी की देख-रेख में चल रहा है। इस समय आप जैन सिद्धांत की बहुत ही अच्छी ज्ञाता हैं। आप साक्षात् सरस्वती देवी का रूप हैं । आपको देखते ही सबलोग नतमस्तक हो जाते हैं। मेरे परिवार के सबलोग आपका चरणस्पर्श करने में आनन्द मानते हैं तथा इनके प्रति अपार भक्ति है। हमारे बड़े भाई स्व० छोटे लाल जी बाई जी को अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखा करते थे तथा अन्त समय तक आप द्वारा संचालित जैन बाला आश्रम के अध्यक्ष रहे तथा जैन सिद्धान्त भवन की हीरक जयन्ती के अवसर पर पूरा योगदान दिया। बाई जी ने राजगृह, पावापुरी आदि स्थनों पर बिम्ब प्रतिष्ठाएँ करवाईं। उन सभी कार्यों मे बराबर भाग लेता आ रहा हूँ तथा श्रवण बेलगोला के भट्टारक स्व० नेमिसागर जी वर्णी चारुकीर्ति जी भट्टारक हर एक काल में इनके आम्नाय से आया करते थे। उसी वजह से भट्टारक जी के प्रति मेरी भक्ति हो गई । पूज्य स्व० श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी महाराज की आज्ञा हुई कि मूडविद्री में जो सिद्धान्त शास्त्र धवल महाधवल है, उनका फोटो ले लिया जाय। उस समय मैंने पूज्य भट्टारक जी को लिखा । उनका पत्र दसवें दिन आया और लिखा कि फोटो लेने के लिए आदमी भेजो। तब स्व० छोटेलाल जी वहाँ गये और छः सौ पचास फोटो लिए, जिसकी इस समय एक कॉपी वीरसेवा मन्दिर दिल्ली में है तथा एक कापी श्रीमान साहू शान्ति प्रसाद जैन के पास भी है। ये चीजें बिलकुल असली हैं। यह महाराज जी का जैन समाज पर बड़ा उपकार हुआ । बाई जी ने जो मन्दिर वगैरह बनवाये उनके पूजा-पाठ के लिए मन्दिरों के लिए अच्छी रकम जमा करा देती थीं । जैन बाला विश्राम से सैकड़ों बाइयों का उद्धार हुआ है और उन्हें आत्म निर्भर होने का पाठ पढ़ाया गया है। मेरे बड़े भाई स्व० फूलचन्द जी ने निर्मल कुमारजी को जैन बाला विश्राम के लिए 3000/- एक मुस्त दिया था तथा उसके बाद हम सब भाइयों ने भी दिया।

स्व० बाबू निर्मल कुमार जी की धर्मपत्नी भी आदर्श रत्ना हैं । मैंने

इनकी सब बातें ऊँचे दर्जे की देखी जो लाखों में कोई कहीं पैदा होती है। आपके पुत्र चि० प्रबोध कुमार, सुबोध कुमार, संतोष कुमार, सरोज कुमार, आमोद कुमार तथा अतुल कुमार बेटी शशि कुमारी जो कानपुर में बाबू रूपचन्द जी जैन के पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार को व्याही है, आप सब बड़े उदार हैं । बाबू निर्मल कुमारजी समृद्ध परिवार छोड़ गये हैं। आपके अनुज स्व० चक्रेश्वर कुमार जी बड़े ही धर्म परायण थे। बड़े भाई के हुक्म से सभी कार्य प्रेम से करते थे। दानों भाइयों में बड़ा स्नेह था।

इनकी बुआ जी पूज्या नेम सुन्दरी देवी जी भी बड़ी धर्मात्मा और आदर्श स्त्री हैं । आप अभी 89 वर्ष की हैं और हर प्रसाद जैन कॉलेज, आरा को भी आपके स्टेट द्वारा ही बनाया गया था । उसको भी निर्मल बाबू संभालते थे, अब श्री सुबोध कुमार जी इसकी देख-रेख करते हैं ।

स्व० बाबू निर्मल कुमार जी बड़े ही मुनिभक्त तथा त्यागियों, व्रतियों, पंडितों, विद्वानों के भक्त थे । उनकी सेवा तथा भक्ति धर्म से किया करते थे । आपकी माता बहुत बीमार होकर इलाज कराने कलकत्ता के बेलगछिया मन्दिर में आयीं थीं क्योंकि उनकों दर्शन करने का नियम था। उस समय निर्मल बाबू ने कई हजार भरी चाँदी के बर्त्तन तथा 25000/- लगाकर बेलगछिया के मन्दिर जी में 4 इंच मोटा सीमेंट का पक्का रास्ता तथा बिजली आदि लगवाई । हमारे भाई स्व० दीनानाथ जी से हँसकर कहा कि आप इसकी चिन्ता क्यों करते हैं, हमको बड़ी खुशी है।

सन् 1941 में जब भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी का अधिवेशन आरा में हुआ तब हमारे भाई स्व० दीनानाथ जी भी वहाँ थे और कहते थे कि निर्मल बाबू ने जो तन-मन से जैन समाज की सेवा की उसकी सब आगन्तुक लोगों ने सराहना की । स्व० राव राजा सेठ हुकमचन्द्र जी उनके अध्यक्ष थे । उन्होंने कहा कि हमलोग तो व्यवसायी सेठ है; किन्तु निर्मल बाबू वाकई में बड़े रईस हैं। मैंने सब जगह देखा जिस समय आप पूजा करते थे उस समय संस्कृत पाठ का शुद्ध उच्चारण राग से करते थे तथा सामग्री भी थाल भर के चढ़ाया करते थे ।

अन्त समय में निर्मल बाबू का कई वर्ष तक लकवा की शिकायत हो गई थी। इलाज तो बराबर चला, आप कुछ ठीक हो जाते थे पर फिर बिमारी आ घेरती। आपका चित्त हमेशा हँसमुख रहा । मैंने कभी भी उनको राग द्वेष करते नहीं देखा। जिससे भी मिलते थे उससे बड़ा प्रेम हो जाता था ।

भगवान आपकी आत्मा को शान्ति दें और इनके परिवार को हमेशा सुखी सम्पन्न रखें। हमारा इनके पुत्रों के प्रति यही आर्शीवाद है कि फले-फूलें तथा जैन समाज की सेवा करें ।

(साभार-श्री जैन सिद्धान्त भास्कर, अंक-33)

❖

मधुर सम्बन्ध

♦ कैप्टन सर सेठ भागचन्द सोनी,
अजमेर

राजर्षि देवकुमार जी के परिवार के साथ हमारे परिवार का अत्यन्त घनिष्ठ एवं मधुर संबंध सतत चला आ रहा है, इसी अनुक्रम में बाबू श्री निर्मल कुमार जी एवं बाबू श्री चक्रेश्वर कुमार जी का सौजन्य स्नेह बराबर रहा ।

यशस्वी सुप्रतिष्ठित कुमार परिवार के उक्त बन्धुद्वय निष्ठावान, कर्मठ तथा निष्णात सेवी थे। आपके द्वारा धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राष्ट्रीय क्षेत्रों में सराहनीय कार्य हुए। उन्होंने तीर्थों तथा शिक्षालयों की महती सेवा की ।

उपर्युक्त बन्धुद्वय का व्यक्तित्व मधुर था, वैसी ही मधुर मुस्कान सदैव उनके चेहरे पर दीप्तिमान रहती थी। एक बार उनसे जो कोई मिल लेता, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। मेरा तीन बार आरा आना हुआ था । एक बार तो मेरे पूज्य पिता जी के साथ यात्रार्थ, दूसरी बार भा० दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटि की मीटिंग के समय तथा बाद में एक बार और बाबू श्री चक्रेश्वर कुमार जी से भी मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई । वे उस समय अस्वस्थ थे, फिर भी अगाध माधुर्य था ।

दोनों ही बन्धुओं को समाज में एवं शीर्ष पुरुषों में अत्यन्त आदर तथा प्रतिष्ठा की दृष्टि सहज सुलभ थी। उनका अपना आकर्षक व्यक्तित्व विशिष्ठ था। भा० दि० जैन महासभा एवं भा० दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के माध्यम से उन्होंने जो गणनीय सेवाएँ कीं, वे सदैव अविस्मरणीय रहेंगी । श्री स्याद्वाद महाविद्यालय आदि विद्या मन्दिर आज भी आपकी कीर्ति का यशोगान करते हैं। इनके कर्मठ संरक्षण में जहां अनेक संस्थाओं का संचाल हुआ वहीं श्री जैन सिद्धान्त भवन, जैन सिद्धान्त भास्कर, जैन बाला विश्राम तथा हर प्रसाद जैन कॉलेज उनकी निष्ठा के जीवन्त प्रमाण हैं।

दोनों ही श्लाघ्य महंत पुरुषों ने जहाँ समाज और धर्मसेवारत रहकर ख्याति अर्जित की, वहीं राष्ट्रीय दायित्वों का गंभीर निर्वाह किया । क्रमशः वायसराय की राष्ट्रीय एक्जीक्यूटिव कार्उसिल के सदस्य के गरिमापूर्ण दायित्वों का निर्वहन कर देश की सहज सेवाएं की । स्वाधीनता संग्राम की विभूतियों को सहयोग देकर आपने राष्ट्रीय दायित्वों का भी प्रतिफल किया ।

निश्चय ही बन्धुद्वय की सेवाएं लम्बी श्रृखला के साथ अविस्मरणीय हैं । उनका पुण्य स्मरण समाज को चैतन्य बोध देगा, ऐसा विश्वास है ।

(साभार-श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक-33)

❖

श्रद्धांजलियाँ

श्रीमान् स्व० बाबू देवकुमार जी के दो सुपुत्र रत्न हुए, जिनमें बड़े सुपुत्र श्रीमान् बाबू निर्मल कुमार जी और उनके लघु सहोदर श्रीमान् चक्रेश्वर कुमार जी थे। दोनों ही विनय प्रकृति से लोकप्रिय बने। बाबू निर्मल कुमार जी ने भी अपने श्रद्धेय पिता जी के समान ख्याति प्राप्त की थी। सामाज में उनका बहुत सम्मान एवं आदर था। भा० दि० जैन महासभा के वे कोषाध्यक्ष रहे। अपनी शिष्टता, नम्रता एवं विद्वता से उनका वैभव उनके घराने का महत्त्व सूचक बना। महासभा से उनका पर्याप्त सम्बन्ध रहा। उनकी वाणी में मधुरता और विचारों में धार्मिकता थी। इसी घराने में श्रीमती विदुषी रत्न पंडिता ब्र० चन्दाबाई जी अपने विद्वतापूर्ण धार्मिक कार्यों से समाज को उपकृत बना रही हैं। महिलादर्श पत्र के सुसंपादन के साथ बाला विश्राम जैसी प्रख्यात संस्था द्वारा उन्होंने कन्याओं एवं महिलाओं को सदाचार पूर्ण उच्च कोटि का शिक्षण देकर उनका जीवन सफल बनाया है, मेरी दिवंगत बन्धुद्वय के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित है।

♦ **मक्खन लाल शास्त्री**

स्व० निर्मल कुमार जी जैन जो आरा के अति प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे, उनकी ख्याति शाहाबाद जिले के कोने-कोने में फैली हुई थी। अपने प्रदेश में उनका एक अनुपम स्थान था। वे बड़े सहृदय और सामाजिक व्यक्ति थे। यह बड़ा अच्छा है कि आप उनकी स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रहे हैं। इस अवसर पर मैं आपको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

♦ **रामसुभग सिंह**

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार

स्व० बाबू निर्मल कुमार जैन एक परम दयालु एवं प्रगतिशील सामाजिक विचारधारा के व्यक्ति थे। उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त की और सबसे अधिक समाज सेवा में, विशेषकर शिक्षा के कामों में काफी भाग लिया। आरा और बिहार के लोग उनकी सेवाओं के लिए सदा आभारी रहेंगे। उनके जीवन से नई पीढ़ी को सदा प्रेरणा मिलती रहेगी।

♦ **बलिराम भगत**

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार

जैन बाला विश्राम और जैन सिद्धान्त भवन की लाईब्रेरी ऐसी महान् संस्थाओं को जिस परिवार ने बनाया है, उस परिवार की जितनी भी तारीफ की जाय कम है। निर्मल कुमार को मैंने अपने छोटे भाई की तरह प्यार किया है। उन्होंने भी मुझे बराबर आदर और सम्मान दिया है। उनकी कीर्ति अमर हो, यही मेरी शुभकामना है। बिहार को ऐसे ही सपूतों की जरूरत है।

♦ **डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा**
प्रथम अध्यक्ष
भारतीय संविधान सभा, दिल्ली

दोनों ही भाई मेरे आदर के पात्र थे। मैंने जब से अपना राजनैतिक जीवन आरम्भ किया तभी से दोनों ही आदरणीय बन्धुओं ने बराबर मेरी मदद की और मुझे उत्साहित करते रहे। फिर मैं बिहार सरकार का मंत्री भी कई वर्षों तक रहा और बराबर मैं कोठी पर इनसे सलाह लेने आया करता था। मैं तो इनके परिवार का एक व्यक्ति ही अपने को बराबर समझता था। कुछ वर्षों तक मैं कालिम्पोंग में भी इनके साथ रहा।

श्री सिद्धेश्वरी प्रसाद सिन्हा, जो कि बड़े रहनुमा हैं, इन दोनों भाइयों के बड़े नजदीकी दोस्त हैं। इनके मार्फत मुझे इन दोनों भाइयों के नजदीक आने में बड़ी मदद मिली थी।

♦ **अब्दुल क्यूम अन्सारी**
मंत्री, बिहार सरकार

निर्मल बाबू को सदा हमने आदर की दृष्टि से देखा। उनके स्वाभिमानी एवं उदारमना सुन्दर व्यक्तित्व से हमारा शाहाबाद जिला सुपरिचित था। चक्रेश्वर बाबू हमारे मित्र थे और राष्ट्रीय आन्दोलन के क्षेत्र में अधिक सक्रिय थे। जिले के कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं को दोनों ही भाई बराबर सहायता करते थे। मुझे भी सदा इस परिवार से प्रेम और सहयोग मिला। राजेन्द्र बाबू और अनुग्रह बाबू का दोनों भाईयों से बहुत प्रेम भाव था। मैं श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दोनों भाईयों को याद करके भाव विह्वल हो रहा हूँ।

♦ **जगजीवन राम**
भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार

(साभार- श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक - 33)

❖

बाबू निर्मल कुमार एवं बाबू चक्रेश्वर कुमार जैन अद्भुत व्यक्तित्व

♦ छोटे लाल जैन सरावगी,
कलकत्ता

स्व० बा० निर्मल कुमार जी को मैं ' भैया' कहता और वे मुझे 'छोटेलाल'। इसी से हमारे और उनके बीच का सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है ।

राजर्षि बाबू देवकुमार जी के समय से ही हमारे और उनके परिवार के बीच जो मधुर सम्बन्ध थे वे अब भी बाबू निर्मल कुमार, चक्रेश्वरकुमार के बच्चों से भी है, विशेष रूप से सुबोध कुमार से । मैं सुबोध कुमार के द्वारा श्री जैन सिद्धान्त भवन की हीरक जयन्ती के बृहद् आयोजन से अत्यन्त प्रभावित हुआ था ।

जिस उत्साह लगन और सफलता पूर्वक निर्मल कुमार जी चक्रेश्वर कुमार जी ने श्री जैन बाला विश्राम के संस्थापन और संवर्द्धन में श्रद्धेया मातृतुल्या ब्र० पं० चन्दाबाई को सहयोग दिया, उसी प्रकार सुबोध कुमार जी भी इस महान् संस्था की सेवा और संवर्द्धन कर रहे हैं । यह इस परिवार की समाज सेवा-वृत्ति का अनुपम उदाहरण है । इसी प्रकार बिहार प्रादेशिक दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी के भी कार्य को इस परिवार ने बहुत बड़ा संरक्षण दिया है ।

श्री स्याद्वाद विद्यालय, काशी की संस्थापना और संचालन में इस परिवार का चिरस्मरणीय योगदान रहा है। पितामह से लेकर प्रपौत्र तक सभी विलक्षण समाज-सेवा की योग्यता रखते आये हैं । भविष्य में भी यह परिवार इन गुणों से युक्त रहेगा, यह उपेक्षा बिना हिचक की जा सकती है ।

श्री निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार का भ्रातृप्रेम उदाहरणीय था । अपनी चाची ब्र० पं० चन्दाबाई जी के प्रति इन दोनों बन्धुओं का मान सम्मान अनुकरणीय था । अपने मित्रों के प्रति इन दोनों भाइयों की सहृदयता और दु:ख-सुख में सहयोग की भावना, ये ऐसे गुण थे जो विरले लोगों के परिवार में हैं ।

वीर शासन जयन्ती का उत्सव जब मैंने कलकत्ते में आयोजित किया

था उस समय इन दोनों बन्धुओं ने मुझे असाधारण सहायता की थी ।

एक बार इन दोनों बन्धुओं के पूरे परिवार के साथ सब लोग दक्षिण भारत की यात्रा के लिए गये थे। बहुत दिनों तक लगातार इनके पूरे परिवार के साथ रहा और यात्राएं की । उस समय उनके अगाध प्रेम से हम अभिभूत हो गये थे ।

बेलगछिया जैन मन्दिर के उत्थान में इन दोनों बन्धुओं ने जी खोलकर आर्थिक सहयोग दिया था। ये दान बेहिचक देते थे। कलकत्ते के व्यवसाय से इन्हें काफी हानि उठानी पड़ी, परंतु दान देने की प्रवृति में कभी कोई कमी नहीं आई।

बिहार प्रान्त क्या, सारे भारत में यह घराना कई पुस्तों से अत्यन्त प्रतिष्ठित रहा है। उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में इनकी सेवाएँ अनुपम हुई हैं। भारत में पहली बार अल्युमिनियम बनाने के कारखाने को खोलने का श्रेय भी इन्हीं बन्धुओं का है । यह कोई साधारण बात नहीं है । उद्योग के क्षेत्र में यह एक ही काम चिरस्मरणीय बनाने के लिए काफी है। मैं अपनी सादर श्रद्धांजलि इन्हें अर्पित करता हूँ ।

(साभार- श्री जैन सिद्धांत भास्कर, अंक - 33)

❖

निर्मल कुमार जी एवं चक्रेश्वर कुमार जी
का संक्षिप्त जीवन परिचय

♦ देवेन्द्र किशोर जैन

बाबू प्रभुदास जी वाराणसी के निवासी थे और भदैनी में इनका निवास स्थान था। वहीं गंगा के घाट पर उन्होंने विशाल धर्मशाला बनवायी और पक्का घाट बनवाया जो कि आज प्रभुघाट के नाम से विख्यात है। लगभग ई० सम्वत् 1850 में वे बनारस छोड़कर आरा चले आये और फिर बाद में जमीन्दारी खरीद कर यहीं बस गए। उनके पुत्र बाबू चन्द्र कुमार जी से दो पुत्र हुए। बाबू देवकुमार जी एवं बाबू धर्मकुमार जी । बाबू देवकुमार जी के दो पुत्र हुए । बाबू निर्मल कुमार जी एवं बाबू चक्रेश्वर कुमार जी। इनके पिता राजर्षि बाबू देवकुमार जी का देहावसान 32 वर्ष की आयु में ही हो गया था । वाल्यकाल से इनका पालन-पोषण इनकी माता श्रीमती अनूपमाला देवी एवं श्रद्धेया चाची पंडिता चन्दा बाई जी ने असीम धीरज के साथ किया । कोर्ट ऑफ वार्डस में स्टेट चला गया क्योंकि दोनों भाई नाबालिग थे और ब्रिटिश सरकार ने बाबू बच्चू लाल जैन एवं श्री इमदाद इमाम साहेब को दोनों भाइयों के बालिग होने तक इनके स्टेट का सरकारी मैनेजर नियुक्त कर दिया ।

बालिग होने तक बाबू निर्मल कुमार जी ने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली तथा उन्होंने स्टेट का कार्यभार संभाल लिया और इस प्रकार इनकी शिक्षा का क्रम रूक गया।

स्टेट का कार्य इन्होंने अत्यन्त दक्षता पूर्वक संभाला, जिसके कारण परिवार की श्रीवृद्धि होती गयी तथा इन्होंने और भी कई नई जमीन्दारियां खरीदीं। बाबू चक्रेश्वर कुमार जी के शिक्षा का कार्य-क्रम चलता रहा और वे विज्ञान तथा कानून के ग्रेजुएट हो गये । बाबू निर्मल कुमार जी का विवाह श्रीमती शान्ति देवी से हुआ जो कि बनारस के राय शम्भु प्रसाद जी की पुत्री थीं। वाबू चक्रेश्वर कुमार जी का विवाह नशीपुर के राजा भूपेन्द्र नारायण सिंह की पुत्री से हुआ, परन्तु तीन पुत्र पुत्रियों के प्रसव के उपरान्त इनका देहावसान हो गया। बाबू चक्रेश्वर कुमार जी का दूसरा विवाह लखनऊ के श्री परमेश्वरी दास जी

इंजिनियर की पुत्री राजेश्वरी देवी से हुआ। इनसे उन्हें पाँच पुत्र एवं एक पुत्री हुई। बाबू निर्मल कुमार जी के भी सात सन्तानें हुई, जिनमें एक पुत्री हैं।

बाबू चक्रेश्वर कुमार जी अपनी प्रथम पत्नी एवं तदुपरान्त अपने प्रथम पुत्र के देहावसान के बाद से धर्म साधना की ओर झुक गये और जैन दर्शन के अध्ययन में अपना समय लगाने लगे। उनका मन संसार की ओर से उदास हो चुका था। तभी बाबू निर्मल कुमार जी ने उनके मनोरंजन के लिए आरा से 45 मील दक्षिण पश्चिम की ओर अपनी जमींदारी के अतमी नामक गाँव में एक बड़े आधुनिक कृषि फार्म की योजना बना कर उसी में उन्हें लगा दिया। सन् 1929-30 की बात है।

देश में राष्ट्रीय आन्दोलन जोर पर था। बाबू निर्मल कुमारजी देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद के निकट सम्पर्क में थे तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में पर्याप्त सहयोग देते रहते थे। साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी उनका स्थान आदरणीय था। समाज में एकता बनी रहे इसके लिए वे निरन्तर प्रयास करते थे। वे बिहार प्रादेशिक दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी के मानद मंत्री तथा श्री सम्मेद शिखर बीस पंथी कोठी के अध्यक्ष थे। बाद में वे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के कोषाध्यक्ष तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के लखनऊ अधिवेशन के अध्यक्ष भी मनोनीत हुए।

श्री दिगम्बर जैन कौशाम्बी क्षेत्र (प्रयाग) पर उनके परदादा बाबू प्रभूदास जी ने एक मन्दिर और धर्मशाला का निर्माण कराया था। परन्तु जब भी वहाँ पंच कल्याण प्रतिष्ठा का मुहूर्त निकाला जाता तभी परिवार के अग्रणी की मृत्यु हो जाती थी। बाबू देव कुमार जी की मृत्यु तक यही सिलसिला चला। जब बाबू निर्मल जी ने अपने विवाह के तुरंत बाद वहाँ की प्रतिष्ठा का मुहूर्त निकलवाया तो उनके हितैषियों ने उन्हें बहुत रोकने का प्रयत्न किया। हुआ ऐसा कि प्रतिष्ठा के आरम्भ होते ही उन्हें तीव्र ज्वर आने लगा। घर के सभी बहुत घबरा गये पर इन्होंने जिद्द नहीं छोड़ी और ज्वर से आक्रान्त रहते हुए भी नियमानुसार कई दिनों का विधान इन्होंने स्वयं इन्द्र बनकर पूरा किया। उन्हें कभी किसी बात का भय नहीं होता था। वे जब कभी किसी सही बात का निर्णय ले लेते थे, तो उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। अपनी जिम्मेवारियों को पूरा करने में बराबर धीर एवं वीर रहे। उनकी कर्मठता अद्वितीय थी। कठिनाइयों का सामना वे बराबर मुस्कुरा कर किया करते थे। उनकी प्रकृति सरल और उनकी वाणी में अद्भुत माधुर्य था, और यही कारण था कि सभी उनको प्यार एवं सम्मान देते थे।

उनकी राष्ट्रीय विचार धारा को जानते एवं समझते हुए भी ब्रिटिश सरकार उनका बहुत आदर करती थी। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि

इनके कार्यालय एवं उद्योगों में लगे हजारों छोटे से बड़े सभी कर्मचारी इन्हें बहुत प्यार और उनका बहुत आदर भी करते थे। बिहार के एक मात्र बैंक, बैंक ऑफ बिहार के सुप्रसिद्ध संस्थापक श्री रामचन्द्र पण्डित के द्वारा बहुत कहने पर बाबू निर्मल कुमार जी ने बिहार के उद्योग और व्यापार की प्रतिनिधि संस्था बिहार चैम्बर ऑफ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्री की अध्यक्षता स्वीकार कर ली और अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने बिहार के औद्योगिक निमार्ण के लिए गौरवपूर्ण नेतृत्व दिया। उसी समय सेठ रामकृष्ण डालमिया ने अपना औद्योगिक जीवन आरम्भ किया था। उनके पास उस समय आवश्यक पूंजी की कमी थी तभी बिहार बैंक के श्री रामचन्द्र पण्डित ने स्वयं सेठ रामकृष्ण डालमिया को लेकर निर्मल बाबू के अतमी फार्म पर पहुंच गये और डालमिया जी ने इन दोनों भाइयों को बिहटा में एक आधुनिक बड़ी चीनी मिल खोलने के लिए प्रेरित किया। उस समय तक ये दोनों भाई अपने फार्म पर एक बड़ी खांडसारी चीनी मिल चला रहे थे। आखिर निर्मल कुमार जैन एण्ड कम्पनी के नाम से एक नये फर्म की स्थापना की गई और बिहटा चीनी मिल का यह वृहद् औद्योगिक प्रयास जिसमें डालमिया जी भी हिस्सेदार थे, अत्यन्त सफल हुआ। इन दोनों भाईयों के अतिरिक्त सेठ रामकृष्ण डालमिया और उनके भ्राता सेठ जय दयाल जी डालमिया बिहटा मिल में ही रहते थे। कुछ समय पूर्व ही डालमिया जी की पुत्री रमा जी का साहु शान्ति प्रसाद जी से विवाह हुआ था और वे भी वहाँ आकर रहने लगे और काम में सहयोग देने लग गये थे। इसके बाद डालमिया नगर औद्योगिक प्रतिष्ठान की नींव भी डालमिया बन्धुओं ने बाबू निर्मल कुमार जी के कर कमलों द्वारा डालमियानगर में दिलवायी और उनको भी नई कम्पनी का हिस्सेदार बनाया। तदुपरान्त डालमिया बन्धु और साहू जी डालमियानगर जा कर रहने लगे।

बाबू चक्रेश्वर कुमार जी भी बिहार चैम्बर आफ कॉमर्स एन्ड इन्डस्ट्री के अध्यक्ष मनोनीत हुए। इन दोनों बन्धुओं ने बिहटा चीनी मिल में असीम सफलता प्राप्त कर भारत में अल्यूमीनियम उत्पादन की नींव डाली। इन कारखाने की स्कीम उन्हें एक कर्मठ नवयुवक श्री बी० जे० कुशा से मिला। इनकी स्मृति आज भी इस परिवार में बहुत इज्जत के साथ संजो कर रखी हुई है। इसी समय कलकत्ता में ओरियन्ट सीलिंग फैन, आन्ध्रा में पेपर मिल तथा दक्षिण भारत में मेटूर केमिकल द्वारा औद्योगिक क्षेत्र में इन दोनों भाइयों की कीर्ति बहुत अधिक बढ़ गयी और इनके नाम पर इनकी सभी कम्पनियों के शेयर बातों बात पर बिकने लगे। उस समय द्वितीय महायुद्ध आरम्भ नहीं हुआ होता तो सम्भवत: आज यह परिवार एक महान औद्योगिक ग्रुप बन चुका होता। परन्तु द्वितीय महायुद्ध के कारण अल्यूमीनियम कॉरपोरेशन की मशीनों का बहुत बड़ा हिस्सा जिसकी कीमत अदा हो चुकी थी और जो कि चेकोस्लोवाकिया से जहाज

पर लद चुका था, उसे जर्मन सेना ने रोक लिया । इस परिवार पर बड़ा आर्थिक संकट आया । बिहार सरकार द्वारा जमीन्दारी उन्मूलन के कारण यह और भी संकटमय हो गया । दोनों भाई सम्यक दृष्टि थे और इसलिए उन्होंने इन सारी विपदाओं को हँसते-हँसते झेल लिया ।

बाबू निर्मल कुमार जी कलीम्पोंग (दार्जिलिंग, बंगाल) में जो कि अति सुन्दर नया पहाड़ी क्षेत्र में विकसित हो रहा था, वहीं अपने लिए एक व्यापारिक केन्द्र की स्थापना में लग गये और अपने रहने के लिए उन्होंने एक बड़ा अलीशान मकान बनवा लिया । उन्हें पहाड़ी क्षेत्र सदा प्रिय रहा था और वे हर वर्ष गर्मियों में 5-6 माह के लिए किसी न किसी पहाड़ पर चले जाया करते थे । 1937 से वे वायसराय के काउंसिल ऑफ स्टेट का चुनाव जीत कर काउंसिल की मीटिंग के लिए शिमला जाने लगे थे । वे यात्राएँ बहुत किया करते थे और परिवार के बहुत से व्यक्तियों के अतिरिक्त उनके मित्रगण भी उनके साथ जाया करते थे । इसी प्रकार दक्षिण भारत की यात्रा में उनके साथ बाबू छोटे लाल जी सरावगी भी सपरिवार उनके साथ गये थे ।

बाबू छोटे लाल जी द्वारा आयोजित वीर-शासन-जयंती के प्रथम महत्वपूर्ण उत्सव में उन्होंने बहुत बड़ा सक्रिय सहयोग दिया था। इस सम्मेलन में भारतवर्ष के सभी श्रीमान् एकत्रित हुए थे । सर सेठ हुकुमचन्द जी, सर सेठ भागचन्द जी सोनी और शान्ति प्रसाद जी सभी इनका बहुत आदर करते थे । यहीं कलकत्ता की अखिल भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र समिति की मिटिंग में उन्होंने बिहार प्रादेशिक दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी की 30 वर्ष तक सेवा करने के उपरांत त्याग पत्र दे दिया । परन्तु सर सेठ हुकुम चन्द जी आदि को उनका तीर्थ क्षेत्रों से बिलकुल अलग हो जाना मान्य नहीं हुआ और बाबू साहब के पुत्र सुबोध कुमार जी को उनके स्थान पर मंत्री चुनकर कमिटी का मार्ग निर्देशन करने का भार उन्हीं पर छोड़ दिया गया । बाबू चक्रेश्वर जी आरा में ही रहते थे । उनके मार्ग दर्शन में परिवार के बच्चों ने 4 कोल्ड स्टोरेजों की स्थापना की । आरा में बाबू निर्मल कुमार जी ने बाबू हर प्रसाद दास जी द्वारा स्थापित श्री आदिनाथ ट्रस्ट के द्वारा जैन कॉलेज की स्थापना करायी थी और वे अन्य बहुत से ट्रस्टों के अध्यक्ष भी थे । अब यह सब बोझ बाबू चक्रेश्वर कुमार जी के कन्धों पर आ चुका था । परन्तु जिस खूबी से उन्होंने जैन कॉलेज का विकास किया था, उसे आज भी आरा का जन समुदाय श्रद्धा के साथ याद करता है। अब तो जैन कॉलेज का सरकारीकरण हो गया है और उसकी हालत दयनीय हो चुकी है ।

सन् 1943 में बम्बई से वापस आते हुए ट्रेन में ही बाबू निर्मल कुमार जी को पारालीसीस हो गया और तदुपरान्त सन् 1957 की देवोत्थान एकादशी के पावन दिन वे तीसरे आक्रमण के बाद परलोकवासी हुए । परन्तु अपनी

अस्वस्थता के 15 वर्षों में उनकी असीम हिम्मत और उनकी अखण्ड मुस्कुराहट के गौरव को भी हम लोगों ने देखा, उसे हमलोग भूल नहीं सकेंगे । बिस्तर पर पड़े-पड़े भी वे निरन्तर 4 घण्टे तक विभिन्न पुस्तकों और शास्त्रों का पठन किया करते थे और 4 घंटे ऑफिस का काम भी करते थे । हर अष्टमी और चतुदर्शी को जैसे भी हो मन्दिर में जाकर दर्शन अवश्य किया करते थे, और नित्य एक घण्टे डॉ० नेमीचन्द शास्त्री के द्वारा शास्त्रपाठ का श्रवण किया करते थे ।

इन्हीं दिनों एक बार सेठ रामकृष्ण डालमिया की मुलाकात उनसे हुई। डालमिया जी ने उनसे भाव विह्वलतापूर्वक पूछा - भाई साहब आपकी हमारी मित्रता बहुत पुरानी है । आपको ऐसी अवस्था में देखता हूँ तो आंखों में आंसू आ जाते हैं । परन्तु ऐसी हालत में भी आपकी मोहक हँसी और खिले चेहरे को देखकर कोई नहीं कह सकता कि आप को ऐसी भारी बीमारी है । मैंने आपसे कभी कहा नहीं, पर यह हमारा प्रयास रहा है कि हमारे चेहरे पर भी आपकी जैसी मुस्कुराहट खिलती रहे । इसके लिए मैंने क्या नहीं किया । परन्तु सफल नहीं हो सका। मैंने संसार की सारी सुविधाएँ इकट्ठी की । कई विवाह किये, परन्तु आप की मुस्कुराहट मैं नहीं पा सका। हमारा आग्रह है कि आप मुझे बतावें कि इस मुस्कुराहट का रहस्य क्या है ।

बाबू साहब यह प्रश्न सुनकर बहुत हँसे फिर उन्होंने कहा-भाई साहब जो वस्तु आपके अन्दर है उसे आप बाहर खोजते रहे हैं, इसलिए वह वस्तु आपको नहीं मिली ।

इतना सुनना था कि सेठ रामकृष्ण डालमिया ने बाबू साहब के चरण पकड़ लिए और हाथ जोड़ते हुए बोले - भाई साहब मैंने आपको अपना पूज्य मान लिया ।

बाबू चक्रेश्वर कुमार जी का देहावसान 1962 में हुआ था । वे कुछ वर्षों से हृदय रोग से पीड़ित थे ।

(साभार श्री जैन सिद्धान्त भास्कर, अंक - 33)

❖

निर्मल बाबू जी द्वारा ब्रह्मचर्य तथा परिग्रह परिमाणव्रत लेने की अनुपम कथा

♦ डॉ० नेमीचन्द्र शास्त्री

एक बार आचार्य महावीरकीर्ति महाराज ससंघ बाला विश्राम आरा के बड़े हॉल में उपदेश कर रहे थे कि सुबोध कुमार जी, निर्मल बाबू को मोटर से कुर्सी पर बिठाकर हॉल में ले आये । मुनियों को नमस्कार आदि के उपरान्त जब उपदेश समाप्त हुआ तभी आचार्य महाराज ने बाबू जी से कहा -

'निर्मल कुमार, तुम्हारा यश देश में हर जगह है । मुझे प्रसन्नता होगी यदि तुम मुझसे कुछ व्रत नियम लो ।'

उस समय तक बाबू जी के गले में भी लकवे का असर हो चुका था और अत्यन्त क्षीण आवाज में ही वे बोल पाते थे । फिर तो सुबोध बाबू को उनकी बातों को कान देकर सुनना होता था और फिर दुहराना पड़ता था ताकि वार्त्तालाप चल सके ।

तो, सुबोध बाबू, बाबू जी के उत्तर दिए गए वाक्यों को दुहराने लगे ।

बाबू जी - 'आप मेरे गुरू हैं जो आदेश दें, मैं नियम व्रत लेने को तैयार हूँ ।'

आचार्य महाराज- नहीं, तुम स्वयं अपनी शक्ति के अनुसार नियम लो ।

बाबू जी - हमारा भाग्य है कि हमारे गुरू की आज इच्छा हुई मुझे व्रत देने की। फिर गुरू ही जो आदेश दें, मैं व्रत लेने को सहर्ष प्रस्तुत हूँ ।

आचार्य महाराज- हमारी इच्छा है कि तुम ब्रह्मचर्य व्रत मुझसे लो ।

बाबू जी - मुझे ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार है । मैं व्रत लेता हूँ ।

इसपर आचार्य महाराज और उपस्थित सभी साधु, श्रावक-श्राविकाओं ने हर्षध्वनि की । पर बाबू जी फिर बोले-'मुझे इस व्रत को लेने से संतोष नहीं हुआ । मुझे और व्रत भी दिलवाएँ ।

आचार्य जी ने साश्चर्य पूछा - ऐसा क्यों कहते हो, निर्मल कुमार ?

बाबू जी- मैं अपने गुरू को और अपने को भी धोखे में नहीं रखना चाहता। वास्तविक स्थिति यह है कि जबसे मुझे लकवा का रोग हुआ है तभी से मैं शरीर की असमर्थता के कारण ब्रह्मचारी का जीवन बिता रहा हूँ । ऐसी अवस्था में ब्रह्मचर्य लेकर मैं गुरू को धोखे में रखना नहीं चाहता ।

आचार्य महाराज- किसी भी अवस्था में व्रत लेने का पुण्य तो तुम्हें मिलेगा ही, परन्तु अपनी स्पष्टोक्ति तुम्हारा पुण्य और भी बड़ा हो गया है ।

बाबू जी- महाराज, मुझे फिर भी संतोष नहीं हो रहा है कृपया और किसी व्रत का आदेश दें ।

कुछ विचार कर आचार्य महाराज ने कहा- परिग्रह परिमाण व्रत के अन्तर्गत स्वर्ण की मर्यादा का व्रत लो । बाबू जी की ओर सभी साश्चर्य से देख रहे थे और इधर बाबू जी ने अंगूठी उतार और अपने गले में पड़ी सोने की चेन को झटका देकर तोड़ दिया । चेन के साथ एक बड़ी ताबीज सोने में मढ़ी उनके गले से टूटकर नीचे आ गिरी । मैंने दोनों-तीनों स्वर्ण की वस्तुओं को उठाकर बाबू जी की ओर देखा । उन्होंने उन चीजों को अपने हाथ में लेकर महाराज के सम्मुख जमीन पर रख दिया और कहा-आज से मैंने सम्पूर्ण रूप से सोने का त्याग किया । न स्वर्ण पहनूंगा और न अपने पास रखूँगा ।

आचार्य महाराज बिल्कुल आश्चर्यचकित और भाव-विभोर हो गए । सारे उपस्थित लोगों का भी यही हाल था । आचार्य महाराज ने तभी संयत होकर कहा 'निर्मल कुमार, तुम्हारा जितना यश सुन रहा था, तुम उससे भी बहुत बड़े निकले। तुम धन्य हो ! परन्तु मैं स्वर्ण के सम्पूर्ण त्याग का व्रत तुम्हें नहीं दूँगा। मैंने स्वर्ण की सीमा निर्धारित करने को तुमसे कहा था, सम्पूर्ण त्याग को नहीं और फिर यह ताबीज क्यों उतार रहे हो ? 'उपस्थित जनसमुदाय ने भी हर्षध्वनी द्वारा आचार्य महाराज की बातों का अनुमोदन किया तथा बाबू जी की प्रशंसा में कोलाहल होने लगा ।

बाबू जी की आँखों में आँसू आ गए । उन्होंने कहा - महाराज मैंने संसार का सारा सुख भरपूर भोगा है । घर-बाहर सभी का बड़ा भारी प्रेम मुझे मिला है ! अब सचमुच मुझे स्वर्ण की बिल्कुल इच्छा नहीं है

'जहाँ तक ताबीज की बात है सो महाराज मुझे इसे बचपन में हमारी माता जी ने पहनाया था और तब से इसे मात्र उनके प्रति आदर की भावना से पहने हुए हैं । वास्तव में मुझे इस प्रकार की चीजों में जरा भी आस्था नहीं है । मैं कभी यंत्र-मंत्र नहीं करता या करवाता हूँ और न ऐसे कार्यों की अनुमोदना ही करता हूँ । अब आप कृपया मुझे सम्पूर्ण रूप से स्वर्ण के त्याग का व्रत दिलवाकर और भी कोई व्रत दिलवाने की इच्छा हो, उसका भी आदेश दें ।'

'मैंने अपने जीवन अनेक बार मुनियों के द्वारा श्रावकों को व्रत दिलवाने के लिए बार-बार कहते हुए देखा-सुना था । यह भी देखा था कि किस प्रकार श्रावक व्रत लेने से कतराते हैं पर पहली बार एक अद्भुत दृश्य देख रहा था, जहाँ श्रावक व्रत लेने के लिए उतावला हो तथा आचार्य व्रत देने में संकोच कर रहें हों ।

बाबू जी के निर्भीक और शक्तिशाली व्यक्तित्त्व से मैं सुपरिचित था पर आज तो उन्होंने ऐसी वीरता का परिचय दिया था जो अनुपम था, महान था ।

आचार्य महाराज- बहुत पेशोपेश में पड़ गये थे । वे अब इस अध्याय को समाप्त करना चाह रहे थे ; पर बाबू जी उनके पीछे और भी व्रत दिलवाने को पड़े हुए थे । ऐसा अद्भुत दृश्य मैंने न कभी देखा, न सुना । मैं भी आवाक् और आश्चर्यचकित था और बाबू जी की ओर पूज्य भाव से देखे जा रहा था ।

जब बाबू जी ने फिर हाथ जोड़कर महाराज से आग्रह किया तो महाराज बोले- 'अच्छा धन के परिमाण का व्रत लो ।'

बाबू जी जितना भी आदेश दें मैं लेने को तैयार हूँ ।

आचार्य जी - 10 लाख रुपये की सीमा का व्रत ले सकते हो ?

बाबू जी हँसकर बोले - महाराज इतना क्या करूँगा । बाल-बच्चे सभी कमा-खा रहे हैं । इतने की हमें क्या जरूरत है ? दस हजार मेरे लिए बहुत काफी हैं । कहें तो और भी कम कर दूँ । आचार्य महाराज हतप्रभ होते हुए बोले-'इतने कम का व्रत मैं कभी नहीं दिलवाऊँगा । अच्छा 3-4 लाख का नियम ले लो ।

बाबू जी- नहीं महाराज , क्षमा करें, मुझे दस हजार रु० से अधिक की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, मुझे व्रत दें ।

इतना कहकर वे आचार्य महाहाराज के चरणों में झुक गये ।

आचार्य महाराज की पीछी बाबू जी के माथे पर पड़ी हुयी थी और लोग जयजयकार कर रहे थे । सभी के कानों में आचार्य जी के ये वचन गूँज रहे थे-

'निर्मल कुमार, तुम्हारा जितना यश सुन रहा था, तुम उससे भी बहुत बड़े निकले।'

(साभार-श्री जैन सिद्धान्त भास्कर, भाग 33, अंक - 1)

❖

भारतवर्ष में अल्यूमिनियम उद्योग की स्थापना के

पचास वर्ष हो गये 1943-1993

बा० निर्मल कुमार जैन

(1901-1956)

अध्यक्ष, बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स (1935)
माननीय सदस्य, वाइसराय के कौंसिल ऑफ स्टेट (1937)

बा० चक्रेश्वर कुमार जैन

(1906-19065)

अध्यक्ष, बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स (1937)
सदस्य, बिहार विधान सभा (1939)

भारतवर्ष में अल्यूमीनियम उद्योग का बीज स्थापित कर और फलीभूत किया, बिहार के दो भाईयों ने जिन्हें संकल्प था और हिम्मत थी उद्योग के अनजाने और दुर्गम क्षेत्र में प्रवेश करने की।

आज देश उनकी लगन और उत्साह का सुफल उठा रहा है। हम उन्हें गौरव पूर्वक याद करते हैं और उन्हें उनके अमूल्य उद्यम तथा देश भक्ति के लिए सादर सलाम करते हैं।

हम उनके अन्य सहयोगी **सर्वश्री बी० जे० कुशा, सुमेर चन्द जैन और ईश्वरी दयाल** को भी सलाम करते हैं।

उनकी स्मृति में

सत्येन्द्र नारायण सिंह
भू० पू० मुख्यमंत्री, बिहार

विष्णुहरि डालमिया
उद्योगपति

शंकर दयाल सिंह
संसद सदस्य

विजय सिंह नाहर
भू० पू० उप-मुख्यमंत्री
प० बंगाल

बी० पी० गुप्ता
अध्यक्ष
बिहार इन्डस्ट्रीज एसोसियेशन

योगेश्वर पाण्डेय
अध्यक्ष
बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स

कृष्ण नन्दन सहाय
भू० पू० अध्यक्ष, बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स, भू० पू० महापौर, पटना

बड़े उद्योग में प्रवेश

◆ सुबोध कुमार जैन

देवाश्रम परिवार को बड़े उद्योगों में लाने का श्रेय बैंक ऑफ बिहार, पटना के संस्थापक-निर्देशक श्री रामचन्द्र पन्डित को है । उन्होंने सेठ रामकृष्ण डालमिया की पहली औद्योगिक स्कीम को बैंक से कर्ज इसी शर्त पर देना स्वीकार किया था कि निर्मल बाबू को इसका प्रबंध निदेशक बनाया जाय और वे कर्ज पर दिये गये धन की स्वयं गारंटी करें ।

उस समय तक डालमिया जी ने बिहटा में जमीन तो खरीद ली थी पर बड़ी चीनी मील को विदेश से मंगाने के लिए उन्हे बैंक से कर्ज लेना जरूरी हो गया था । यह उनका प्रथम औद्योगिक प्रयत्न था ।

उस समय तक, बाबू निर्मल कुमार जी नशीपुर राजा भूपेन्द्र नारायण सिंह, माननीय मंत्री, बंगाल सरकार, की राजकुमारी श्रीमती निर्मला से अपने छोटे भाई चक्रेश्वर कुमार का विवाह करा चुके थें । पर दुर्भाग्यवश, पुत्र विनोद कुमार और पुत्री रविप्रभा एवं सोमप्रभा के जन्म के बाद राजकुमारी निर्मला का देहावसान हो जाने से छोटे भाई चक्रेश्वर कुमार अत्यन्त दुखी अवस्था में थें । वे अपने छोटे भाई के मन बहलाव के लिए, अपनी जमींदारी के अतमी गाँव (डुमराँव) में अपनी एक हजार एकड़ भूमि पर, उस इलाके में पहली बार वैज्ञानिक ढंग से ट्रैक्टर की सहायता से ईख उपजाने का फार्म तथा वहीं एक खान्डसारी चीनी बनाने की मिल खोलकर उसका पूरा चार्ज अपने प्रिय भाई 'छोटे' (चक्रेश्वर बाबू को प्यार से छोटे बुलाते थे) के जिम्मे लगा दिया ।

वहीं फैक्ट्री के पास परिवार के रहने के लिए दो मंजिला मकान बना और एक बड़े शामियाने में बच्चों की शिक्षा के लिए चार-पांच शिक्षक इकट्ठा हो गये और वही बच्चों की पाठशाला हो गई । आगे चलकर फार्म के दूसरे हिस्से में एक स्कूल बिल्डिंग बनाई गयी ।

फार्म से 3-4 मील दूर, डुमराँव की ओर सड़क पर आथर ग्राम में पूर्वजों के समय से ही एक कचहरी बनी हुई थी । अन्दर रहने का स्थान तथा छत के ऊपर एक जैन मन्दिर बनवाया गया ।

इसी बीच, एक दिन पटना से सेठ रामकृष्ण डालमिया को लिए हुए

रामचन्द्र पंडित आथर फार्म पर पहुँचे । वहीं पर निर्मल कुमार जी ने उनलोगों का प्रेमपूर्वक स्वागत किया । बिहार में चीनी मिल खोलने के प्रस्ताव पर दोनों भाई और दोनों आगत मेहमानों ने विस्तारपूर्वक अध्ययन किया । अन्ततोगत्वा दोनों भाई पाँच सौ टन प्रति दिन की एक चीनी मिल खोलने के डालमिया जी के प्रस्ताव को उनके सीनियर पार्टनर के रूप में स्वीकार कर लिया । एन० के० जैन एण्ड कं० Managing Agent तथा निर्मल बाबू को Managing Director बनाया गया । श्री राम कृष्ण डालमिया, जय दयाल जी, बाबू चक्रेश्वर कुमार जी, श्री रामचन्द्र पंडित और श्री हसन इमाम Director नियुक्त हुए । निर्मल बाबू और चक्रेश्वर बाबू के निजी गारन्टी पर Bank of Bihar आवश्यक धन, कर्ज देने को तैयार हो गया । सभी को बहुत उत्साह और खुशी हुई और पटना की दौड़ शुरू हो गयी । बिहटा में रहने के लिए मकान फैक्ट्री तथा मजदूरों की बिल्डिंग का प्लान बानने लगा तथा विदेश से फैक्ट्री की सभी छोटी बड़ी मशीने मंगाने का आर्डर दिया जाने लगा । लिमिटेड कम्पनी South Bihar Sugar Mill Ltd. दक्षिण बिहार की पहली चीनी मिल बनी ।

सालभर के अन्दर फैक्ट्री के चारों ओर ऊँची दीवार, हम सभी के रहने का मकान, चार पांच छोटी-छोटी कोठियों के रूप में बन गये। मजदूरों और छोटे बड़े स्टाफ के लिए भी क्वाटर्स बन गये । और जब तक कि फैक्ट्री की बिल्डिंग बने, विदेश से मशीनें भी बगल में विहटा स्टेशन के मार्फत फैक्ट्री तक जो रेलवे लाइन अलग बनवाई गयी थी, वह आने लगी । देखते-देखते चीनी मिल में बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा गन्ना कस करने का काम तथा चीनी बनना शुरू हो गया । 5-5 k.g के पैकट बनवाकर पिता जी अपने टेबुल के पास रखते थे और अपने इष्ट-मित्रों को उन चीनी के 5 किलो के पैकेटों को भेट स्वरूप बहुत दिनों तक देते रहे ।

पहले ही वर्ष पूरा मुनाफा हुआ और शेयर होल्डरों को मुनाफा बटना शुरू हो गया ।

बच्चों के पढ़ने के लिए ऑफिस बिल्डिंग के ऊपर कमरे थे, जहाँ वे पढ़ा करते थे । बगल में ही भगवान का मन्दिर था, जहाँ सभी दर्शन किया करते थे ।

देखते-देखते मुनाफा इतना बढ़ा कि एक वर्ष शेयर होल्डरों को 25% मुनाफा बाँटा गया और सारे देश में अतिश्रेष्ठ चीनी मिलों में इस चीनी मिल का नाम हो गया ।

यहीं साहू शान्ति प्रसाद जी का विवाह पिताजी से सलाह लेकर डालमिया जी ने नजीबाबाद (उ० प्र०) से साहू शान्ति प्रसाद जी और उनके परिवार वालों को निमंत्रित करके अपनी एक मात्र पुत्री रमा जैन से करा दिया । बाद में यहीं पर साहू शान्ति प्रसाद जी रहकर काम सीखने लगे ।

इसके पूर्व 1935 ई० में बिहार में भयानक भूकम्प आया था दिन में सभी

बच्चे स्कूल के छत पर खेल रहे थे और नीचे सामने सारा परिवार भौचक्का हो कर समूचे चीनी मिल वालों के साथ बच्चों को निकालने के लिए किम् कर्त्तव्य विमूढ़ होकर देख रहे थे । मिल की बड़ी चिमनी इस प्रकार भयंकर रूप से डोल रही थी कि अब गिरी की तब । वह भयंकर दृश्य आज तक कोई भूला नहीं । भाग्य से, बहुत नुकसान फैक्ट्री एरिया में किसी का नहीं हुआ । फैक्ट्री भी ठीक बची रही ।

निर्मल बाबू को, बिहटा चीनी मिल की सफलता के उपलक्ष्य में, बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स का अध्यक्ष नियुक्ति किया गया तथा चैम्बर की वार्षिक मीटिंग में दोनों भाइयों की बिहार के गर्वनर तथा अन्य उद्योगपतियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की । बाद में, चक्रेश्वर कुमार जी चैम्बर के दो वर्षो तक अध्यक्ष मनोनित होते रहे ।

इसके उपरान्त ही कलकत्ते से सेठ दयाराम पोद्दार के साथ मिलकर **"ओरियन्ट फैन"** बनाने का कारखाना खुला । इसके पूर्व, निर्मल बाबू ने सुप्रसिद्ध **"इंडिया फैन"** का कारखाना कलकत्ते में खोला यह उद्यम भी सफल रहा । तदुपरान्त राजामण्डी (दक्षिण भारत) में कागज बनाने का कारखाना भी बम्बई के सेठ जीवन लाल और कलकत्ते के सेठ दयाराम पोद्दार के साथ मिलकर **"आन्ध्रा पेपर"** के नाम से शुरू की गई और बनारस के बाल गोपी कृष्ण के साथ-साथ उधर ही एक बड़ी केमिकल कम्पनी **"मेटूर केमिकल"** के भी शेयर बातों-बातों में खरीद लिये गये।

तभी अलयूमीनियम बनाने का भारत में प्रथमा प्रथम विशाल उद्योग आसनसोल के अनूप नगर कोलिअरी के पास **"अल्यूमीनियम कॉपोरेशन ऑफ इंडिया"** के नाम से लिमिटेड कम्पनी के अपने शेयर, जनता के आगे अखबारों से प्रचारित किया गया । इसके भी लगभग वही सब पार्टनर थे जो पहले की अन्य कम्पनियों के थें । सभी उद्योगो में श्री आर० सी० पन्डित के बैंक औफ बिहार के अतिरिक्त अन्य बड़े बैंकों का योगदान भी आसानी से मिलता रहा।

तीन चौथाई निर्माण कार्य कॉलोनी तथा फैक्ट्री पूरा हुआ और मशीन स्कोडा कम्पनी (यूरोपियन) से खरीदा हुआ आ रहा था । इसी समय हिटलर ने विश्वयुद्ध शुरू कर दिया । पहले तो वह रूस पर हावी हुआ और अपनी जीत के हवस में वह यूरोप की ओर भी मुड़ गया । दुर्भाग्यवश अल्यूमीनियम कारखाने की मशीनों का आखिरी खेप जब चेकोस्लोवाकिया से समुद्री जहाज से चलने वाला था कि हिटलर चोकोस्लोवाकिया पर भी हमला बोलकर, समुद्र के उसके सभी जहाजों को जप्त कर लिया । उन्हीं में अल्यूमीनियम कारखाने के मशीनों के बेशकीमती हिस्से वहीं रूक गये । अल्यूमीनियम कारखाने का सारा खेल बिगड़ गया । (**भारत में अल्यूमीनियम उद्योग की स्थापना के पचास वर्ष पूरे**

होने पर हिन्दुस्तान टाइम्स ने सन् 1993 में एक विज्ञापन में इन सपूतों का नाम प्रकाशित किया था, देखिए पृष्ठ 71 पर)

बिहार की पहली काँग्रेसी सरकार ने, बिहार की जमींदारी भी समाप्त करने का प्रस्ताव पास करा लिया। इस प्रकार निर्मल बाबू व चक्रेश्वर बाबू बिल्कुल बेबस हो गये।

सभी राजे महाराजे समाप्त हो गये। कांग्रेस ने अपने बहु प्रसारित उद्देश्यों को पूरा करने का निर्णय केवल बिहार में ही नहीं देश के सभी प्रमुख प्रान्तों में गांधी जी, जवाहर लाल नेहरू और राजेन्द्र प्रसाद आदि के कुशल नेतृत्व से प्रान्तीय सरकारों में दल प्राप्त करके देश से ब्रिटिश सरकार को निकाल बाहर करने का नारा दिया।

मजा यह कि उन दिनों चक्रेश्वर बाबू और सुबोध बाबू दोनों कांग्रेसी रंग में रंग गये थे। चक्रेश्वर बाबू कांग्रेस के टिकट पर केन्द्रीय सरकार की सदस्यता का चुनाव लड़ रहे थे। सुबोध कुमार ने स्कूल में पढ़ते हुए, जिला कांग्रेस के पिछली संघ के प्रमुख के रूप में, जिला के विद्यार्थी परिषद् की मीटिंग में क्रान्तीकारी नेता जय प्रकाश नारायण से सम्मेलन का उद्घाटन कराया। वे खद्दर पहनते थे। विद्यार्थियों के कांग्रेसी नेता बनकर त्रिपुरी (म० प्र०) के कांग्रेस अधिवेशन के डेलिगेट चुनकर अपने ग्रुप के साथ जाने का गौरव प्राप्त कर रहे थे। गाँधी जी की आँधी ही ऐसी थी।

❖

मेरी तपस्विनी पूज्या माता जी
(बहुआजी)

◆ सुबोध कुमार

पूज्य पिताजी से 4 वर्ष उम्र में छोटी थीं । पिताजी का जन्म 1901 में हुआ था । इस प्रकार माताजी की उम्र 93 वर्ष की है ।

5.30 बजे जब मैं जगने के उपरान्त सुबह की चर्या आरंभ कर चुका होऊँगा तो उस समय चौकी का बिस्तर छोड़ स्वच्छ होकर कुशासन पर सूती मोटी चादर लपेटे सुखासन में एक घन्टे के जप पर बैठ रही होंगी । दासी उन्हें सहायता कर रही होगी । हमारे कमरे के बाद तीसरे बड़े कमरे में उनके पास अलग बिस्तर चौकी पर हमारी 2 पोतियाँ सो रही होंगी । आवश्यकता पड़ने पर दासी उन्हें भी उठा लेती हैं, पर ऐसा बहुत कम होता है । कभी कुछ अस्वस्थ होतीं हैं, या दासी नहीं होती तो उनकी चर्या कराती हैं, सभी करते हैं ।

श्रीमति शाँति देवी

पुजारी ने आकर 7 बजे मंदिरजी का घन्टा बजाया तो, नहा-धोकर पूजन की धोती पहन कर मन्दिर जी धारा-पूजा करते शास्त्र एक घंटे पढ़ते उन्हें 10 बज जाते हैं । दोनो आँखों का कैटेरेक्ट का ऑपरेशन 8/10 वर्ष पूर्व सफल हो चुका है। पढ़ने में दिक्कत नहीं होती । इधर पत्र लिखने में दिक्कत महसूस करती हैं, वरना पत्राचार भी करती थीं ।

10.30 बजे उन्हें दूध भाभी या शान्ता देती हैं । चौके में जाकर सफाई और नियमानुसार परोसती हैं । एक पाव दूध । इतना ही दूध संध्या को तथा फल । एक बजे दिन में रोटी लेती हैं दाँतो को कृत्रिम बनवाया गया था, पर कुछ ही दिन लगाया । फिर बिल्कुल छोड़ दिया ।

तीन बार मंदिर भी जाती हैं, तीन घंटे कुछ शास्त्र पढ़ना, तीन घंटे जप

करना । पूजन अलग और संध्या को आरती । रात 9-10 बजे सो जाती हैं, सुबह 5 बजे तक उठ जाती हैं । कमर झुक गई है, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं, बहुत उम्र उनकी हो गई है । छड़ी लेकर झुकी हुई चलती हैं । कभी किसी से कहा-सुनी नहीं होती । नियमित तपस्वी जीवन, व्रत-उपवास , केवल आयुर्वेदिक दवा खाती हैं । संध्या के बाद दवा-भोजन पानी कुछ नहीं लेतीं ।

भैया बीमार रहते हैं । दो तीन बार उनके पास जाकर अवश्य देख-सुन आती हैं । ऊनी वस्त्र न पहनतीं, न ओढ़तीं हैं । बिलकुल सीधी-सादी तपस्वनी पूज्या माता पुत्रों, पुत्रियों, नाती, पोतों, दामादों, पतोहुओं, सभी की परम आदरणीया प्यारी बहुआजी । (16-12-97)

कैसा अपूर्व समाधिमरण

दिनांक 27.2.99 को जप, पूजन आहारदान तथा स्वयं अल्पाहार लेने के उपरांत परम श्रद्धेया साध्वी मातुश्री शांति देवी जी के नाम मात्र अस्वस्थता में आँखों को मूंद लिया और समाधि में लीन हो गईं । वे पन्चानबे वर्ष की थीं ।

यह समाचार जब आचार्यश्री सन्मति सागरजी महाराज को मिला तो तप से उठते ही उन्होंने कहा " उन्हें मैंने स्वयं जप करते हुए स्वर्ग में पहुँचे हुए देखा है । "

कैसा अपूर्व समाधिमरण हुआ ! हम सब धन्य हो गये ! आरा नगर के स्वजन एवं हमारा परिवार और संबंधी लोग इक्ट्ठे हो गये और भगवान की जय जयकार के बीच काम क्रिया 2-3 घंटे में ही सम्पन्न हो गयी ।

उसके उपरांत, नगर के, बाहर के, देश भर के सभी इष्ट मित्र और संबंधी से आरा की कोठी भर गयी । नित्य दिन में पूजन तथा संध्या में सामूहिक भजन होने लगा।

दिनांक 12.3.99 को भगवान बाहुबलि का महामस्तकाभिषेक श्री जैन बाला विश्राम में हुआ । जिसमें नगर और बाहर के सभी इष्ट मित्र और संबंधी उत्साहपूर्वक शामिल हुए और पूज्या मातुश्री की स्मृति में 'श्री जैन बाला विश्राम महोत्सव कोष' के लिए परिवार द्वारा सभी कुल इक्यानबे हजार रूपये की घोषणा कर पुण्यार्जन किया । (27.3.99)

बा० निर्मल कुमार जी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती शांति देवी जी का समाधि-मरण

♦ **नीरज जैन**, सतना

जैन सिद्धान्त-भवन, आरा के मानद प्रबंध निदेशक और प्रसिद्ध समाजसेवी बाबू सुबोधकुमार जी की वृद्धा माताजी का 27 फरवरी 99 को समाधिपूर्वक देहावसान हो गया।

श्रद्धेया माताजी शान्त स्वभाव की धर्माचरण में लीन महिला थीं। उनकी आयु 96 वर्ष हो चुकी थी पर वे अभी भी अपने दैनिक नियमों और कार्यों में सक्रिय और सावधान थीं। अंतिम दिन भी, उन्होंने रोज की तरह एक घण्टे सामयिक और डेढ़ घण्टे जिनालय में जाकर पूजन तथा स्वाध्याय में व्यतीत किया। संयोग से पूज्य आचार्य सन्मति सागर जी महाराज के संघ के एक मुनिराज का आहार देखने का भी उन्हें उस दिन अवसर मिला। उसी चौके में उन्होंने थोड़ा सा भोजन लिया और दोपहर में आराम करने चली गईं। वहीं उन्हें कुछ पीड़ा और वेदना हुई और सावधानी पूर्वक वे तत्काल धर्मध्यान में तल्लीन हो गईं।

सूचना पाकर मुनिराज भी घर पर पधार गये और उन्होंने माताजी को त्याग आदि कराकर समाधि-मरण तथा महामंत्र सुनाना प्रारम्भ कर दिया। अंतिम वाक्य उन्होंने यह कहा कि- ''अब मैं सीमंधर स्वामी के पास जा रही हूँ '' फिर उन्होंने आँखें मूंद ली और महामंत्र का जप करते-करते अपनी पर्याय पूरी कर ली।

माताजी ने ब्र० चन्दाबाईजी की तरह सातवीं प्रतिमा के व्रत बहुत पहले धारण किये थे जिनका वे अंत तक बड़ी निष्ठा से पालन करती रहीं। उनके त्यागी जीवन का ही यह प्रभाव था कि बिना किसी शारीरिक पीड़ा और वेदना के उन्हें अत्यंत शान्तिपूर्वक समाधि-मरण प्राप्त हुआ। बाबू सुबोध कुमार जी के परिवार में धार्मिक परम्पराओं को वर्त्तमान रखने में स्व० माताजी का बहुत बड़ा योगदान रहा। उनका जीवन एक आदर्श श्राविका का उदाहरण ही था।

❖

हमारे भैया-प्रबोध कुमार जी

♦ सुबोध कुमार जैन

हमारे जन्मजात वधिर भैया, बाबू प्रभुदासजी के बाद पहले पुरूष थे, जिन्होंने 65 से भी ऊपर यानि 79 वर्ष की आयु पायी। दिनांक 17-5-98 को सुबह ज्वर से पीड़ित हुए, दिनभर समाधि अवस्था में दीखते रहे और संध्या को लगभग 6 बजे णमोकार मंत्र सुनते हुए वे स्वर्ग सिधार गए।

उन्हें भगवत भक्ति इतनी थी कि चतले फिरते, नितान्त अशक्त होने पर भी नित्य मंदिरजी के दर्शन करते थे और भावपूर्वक "महावीर स्वामीजी की जय" कहते थे। दैविक शक्ति ने उन्हें पंचनमस्कार महामंत्र से ओतप्रोत अवश्य किया होगा।

प्रबोध कुमार जी

5-6 वर्ष पूर्व पटना के एक बड़े सर्जन ने उनके फ्रेक्वर हुए घुटनों के नीचे शल्य चिकित्सा करके स्टेनलेस-स्टील का रॉड लगाकर सफल ऑपरेशन सम्पन्न किया, पर दुर्भाग्य कि इस रॉड में जंग लग जाने से दुबारा ऑपरेशन उसी डॉक्टर ने किया, जो फिर असफल रहा। अन्तोगत्वा उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर ले जा कर एक जाने-माने शल्य-चिकित्सक ने जो ऑपरेशन किया, वह बिल्कुल सफल तो रहा, पर भईया बिना सहारे नहीं चल सके। सहारे से ही नौकर उन्हें कुछ शारीरिक हरकत के खातिर नित्य जबरन घुमाता था।

पर भइया ने विधि के विधान को स्वीकार किया। किन मुश्किलों से उन्होंने मूकवधिरों के सुप्रसिद्ध शिक्षक पं० प्रद्युम्न मिश्र से बोलना सीखा था। जिस दिन उन्होंने परदादी (बा० देवकुमार जी की वृद्धा माँ) को दादी कहा, वे इतनी खुश हुई कि अपने ज्येष्ठ प्रपौत्र के बोलने की इस खुशी में शहर भर के इष्ट मित्रों को बनारस से खोवे मंगवाकर मेवे से भरवाकर बड़ी स्वादिष्ट मिठाईयाँ " दादी की गादी" वितरित की थीं।

उनके शिक्षक पं० प्रद्युम्न जी ने उन्हें एक गुस्सैल व्यक्ति से एक परम

प्रिय इन्सान बनाकर बोलना और सद्व्यवहार करना सिखा दिया था। इसके साथ साथ श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा ने जो कि "पटना कालम" के अन्तिम सुप्रसिद्ध चित्रकार थे, उन्हें चित्रकारिता की शिक्षा 10 वर्षों तक हमारे गेस्ट हाउस में रहकर दी थी।

इस प्रकार पिताजी का उद्देश्य पूरा हुआ और भैया को गौरव था अपनी चित्रकारिता की प्रतिभा पर। वधिर होने की कोई हीन भावना उन्हें कभी नहीं हुई।

उनके बनाए हुए अनेक चित्र राजगृह के 'श्री महावीरकीर्ति सरस्वती भवन' में तथा आरा के शान्ति नाथ प्रभु मन्दिर के 'श्री निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार जैन कला दीर्घा' में श्री जैन सिद्धान्त भवन के अनेक दुर्लभ चित्रों के साथ शोभायमान हो रहे हैं। हजारों दर्शकों ने जैन विषयक इन चित्रों का अवलोकन किया और प्रशंसा की है।

उन्हें तीन पुत्र और तीन पुत्रियां हैं। सभी की शादियां हो गई हैं। भरापूरा पौत्र-पौत्रियों का परिवार है। सभी सुखी और समृद्ध हैं। भाभी, जो कि आरा के सुप्रसिद्ध परिवार की बेटी हैं, उन्होंने भी खूब निभाया है भैया का साथ। वे हमारे फूफा गुलाबचंदजी जैन की बहन थीं। विवाह बड़े शान से हुआ था। अभी भी लोग कहते हैं कि इतनी शानदार बारात जिसमें पचासों हाथी, ऊंट-घोड़े और बाजे-गाजे हों, जिसका ओर-छोर पता लगाना मुश्किल हो गया था, फिर देखने को नहीं मिली।

उनकी गौरव-गाथा हम कभी नहीं भूल सकते हैं।

प्रभु परिवार द्वारा स्थापित मंदिर, धर्मशालाओं एवं अन्य जन-कल्याणक संस्थाओं का विवरण

बाबू प्रभुदास जैन के द्वारा 140 वर्ष पूर्व तीर्थ-क्षेत्रों के जीर्णोद्धार, मंदिर, धर्मशालाओं के नव-निमार्ण एवं पंच-कल्याणक प्रतिष्ठाएँ, तदुपरान्त उनके पुत्र चन्द्र कुमार जी, पौत्र राजर्षि बा० देवकुमार जी और धर्म कुमार जी की पत्नी पं० चन्दाबाई जी तथा प्रपौत्र बा० निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार जी और इनकी सन्तति के द्वारा स्थापित जन-कल्याण की अनेक संस्थाओं का संक्षिप्त विवरण -

(क) बाबू प्रभुदास जी द्वारा स्थापित तीर्थस्थल एवं धर्मशालाएँ-

* कौशाम्बी (प्रयाग)- तीर्थंकर पद्मप्रभु के गर्भ एवं जन्म कल्याणक स्थल पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठित मंदिर एवं धर्मशाला, यमुना किनारे।
* भदैनी (वाराणसी)- तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का गर्भ एवं जन्म कल्याणक स्थल पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठित मंदिर । वहीं गंगा किनारे निर्मित प्रभुदास घाट एवं विशाल धर्मशाला ।
* चन्द्रावती (वाराणसी)- तीर्थंकर चन्द्र प्रभु के गर्भ एवं जन्म कल्याणक स्थल पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठित मंदिर एवं गंगा किनारे धर्मशाला ।
* आरा (बिहार)- महादेवा रोड पर अपने प्रथम निवास स्थान के ऊपर पंचकल्याणक प्रतिष्ठित तीर्थंकर शांति प्रभु का समोशरण मंदिर, यहाँ अनेक प्राचीन मूर्तियाँ उन्होंने एकत्रित की हैं ।
* आरा देवाश्रम मंदिर - तीर्थंकर शीतलनाथ चैत्यालय ।

(ख) बाबू प्रभुदास जी के पौत्र राजर्षि देवकुमार जी द्वारा स्थापित -

* सप्ताहिक जैन गजट सन् 1898 (7 वर्षों तक संपादन)
* तीर्थंकर वासुपूज्य प्रभु की निर्वाण भूमि मंदारगिर पर्वत पर अधिकार प्राप्त कर प्रभु चरण की स्थापना सन् 1902
* पूज्य भट्टारकजी से आरा शांतिप्रभु के मंदिर पर 'जैन धर्म लाइब्रेरी'

* पूज्य भट्टारकजी से आरा शांतिप्रभु के मंदिर पर 'जैन धर्म लाइब्रेरी' (श्री जैन सिद्धान्त भवन), आरा की स्थापना, सन् 1903
* स्याद्वाद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना- भदैनी, वाराणसी पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी के नेतृत्व में, सन् 1905
* आरा नागरी प्रचारणी सभा की स्थापना, सन् 1907
* मंगलोर, कर्नाटक में प्रथम जैन होस्टल की स्थापना, सन् 1907
* हस्तलिखित ग्रंथों के उद्धार के क्रम में दक्षिण भारत की यात्रा और अन्तोगत्वा श्री जैन सिद्धान्त भवन की आरा में स्थापना, सन् 1907
* श्री जैन कन्या पाठशाला की आरा में स्थापना, सन् 1907 (शाहाबाद जिले की प्रथम कन्या पाठशाला)

(ग) राजर्षि देवकुमार जी की धर्मपत्नी अनूपमाला देवी, राजर्षि देव कुमार जी के लघु भ्राता धर्मकुमार जी की पत्नी विदुषी चन्दाबाई जी, बाबू निर्मल कुमार जी, चक्रेश्वर कुमार जी तदुपरान्त देवाश्रम परिवार की अन्य संततियों के द्वारा निर्मित एवं प्रतिष्ठित जिनालय एवं शिक्षण-संस्थाएं -

मंदिर / धर्मशालाएँ -

1. पावापुरी भगवान महावीर मंदिर (खड्गासन 8 फुट ऊंची प्रतिमा)
2. राजगृह पहले पहाड़ पर तीर्थंकर महावीर का मंदिर ।
3. राजगृह के दूसरे पहाड़ रत्नागिरि पर तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का मंदिर ।
4. सम्मेदशिखर जी में समाधि स्थल पर पर स्थित तीर्थंकर पार्श्व प्रभु मंदिर।
5. दिगम्बर जैन धर्मशाला, श्रवणबेलगोला ।
6. गिरनार पर्वत की तलहटी में तीर्थंकर नेमीनाथ भगवान का मंदिर ।
7. अयोध्या जी में तीर्थंकर धर्मनाथ जी का मंदिर ।
8. तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का 21 फुट ऊंचा मानस्तम्भ (श्री जैन बाला विश्राम, आरा) ।
9. श्री 108 आचार्य शांति सागर महाराज मंदिर, धनुपुरा, आरा ।
10. श्री 108 आचार्य शांति सागर महाराज मंदिर, पावापुरी
11. श्री सरस्वती जिनवाणी मंदिर (लाल मंदिर) - राजगीर ।

जनसेवा एवं शिक्षण संस्थाएँ-

1. जैन कन्या पाठशाला प्राइमरी एवं मिडिल स्कूल, आरा, स्थापित 1907
2. श्री जैन महिला परिषद स्थापित 1909

3. श्री जैन बाला विश्राम प्राइमरी एवं मिडिल स्कूल, आरा, स्थापित 1921

4. पत्रिकाएँ :-

   (i) श्री जैन सिद्धांत भास्कर (1915)

   (ii) जैन महिलादर्श (1922)

   (iii) जैन एंटिक्येरी (1935)

5. श्री जैन महिला विद्यापीठ - स्थापित 1957

6. जैन बाला विश्राम गर्ल्स हाई स्कूल आरा, स्थापित 1962

7. मूकवधिर विद्यालय, आरा, स्थापित 1962

8. देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा, स्थापित 1962

9. बाल बिहार मान्तेसरी स्कूल, आरा, स्थापित 1963

10. आदिनाथ नेत्र विहीन विद्यालय, आरा, स्थापित 1964

11. जैन कन्या पाठशाला हाई स्कूल, आरा, स्थापित 1970

12. श्री जैन कन्या संगीत पाठशाला, आरा, स्थापित 1975

13. निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार जैन कला दीर्घा, स्थापित 1977

14. देव कुमार जैन कला दीर्घा, राजगीर, स्थापित 1980

15. माँश्री चन्दाबाई स्मृति कक्ष और संग्रहालय, धनुपुरा, आरा, स्थापित 1991

16. पं. बृजबाला देवी जैन कला प्रदर्शनी, धनुपुरा, आरा, स्थापित 1993

17. बिहार प्रादेशिक तीर्थंकर महावीर विकलांग सेवा समिति, स्थापित 1995

❖
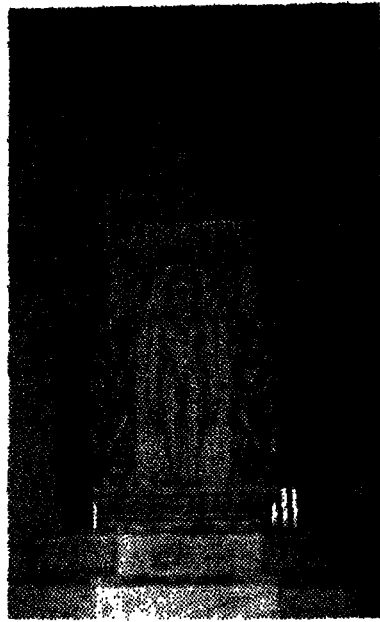
ईलाहाबाद के पास कौशाम्बी में तीर्थंकर पद्मप्रभु भगवान के गर्भ एवं जन्म कल्याणक स्थल पर बाबू प्रभु दास जी द्वारा पंचकल्याणक प्रतिष्ठित समोशरण मंदिर ।

कौशाम्बी मंदिर तथा धर्मशाला का विहंगम दृश्य ।

सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ स्वामी की गर्भ एवं जन्म कल्याणक स्थली, जैन घाट (भदैनी) बनारस में बाबू प्रभुदास जी द्वारा निर्मित एवं प्रतिष्ठित मंदिर ।

राजगृह के लाल मंदिर में ब्रं0 पं0 चन्दाबाई जी द्वारा स्थापित तथा प्रतिष्ठित जिनवाणी मंदिर । श्रुतस्कंध यंत्र का यह रूप माँश्री चन्दाबाई जी, सुबोध कुमार जैन एवं डा0 नेमिचन्द्र शास्त्री ने शास्त्रों के और अध्ययन के बाद तैयार किया था तथा जिसे जैन बाला विश्राम के चित्रकला के शिक्षक महावीर प्रसाद वर्मा के चित्रित किया था ।

महादेवा रोड, आरा में बा० प्रभुदास जी द्वारा निर्मित तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठित श्री शान्तिनाथ भगवान का समवशरण मंदिर। यहाँ अनेक प्राचीन मूर्तियों का संग्रह है।
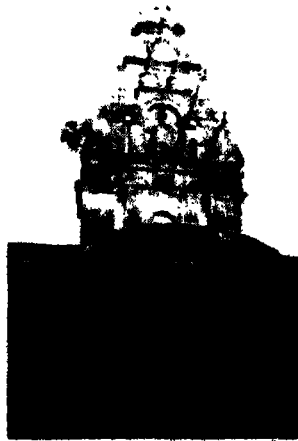
आरा में महादेवा रोड स्थित "प्रभुदास भवन", जहाँ बा० प्रभुदास जी रहते थे और यहीं इन्होंने उपर्युक्त शान्तिनाथ प्रभु का समवशरण मंदिर निर्मित किया था।

तीर्थंकर चन्द्रप्रभ् भगवान के गर्भ एवं जन्म कल्याणक स्थल " चन्द्रपुरी जी", वाराणसी में बाबू प्रभुदास जी द्वारा निर्मित एवं प्रतिष्ठित मंदिर तथा धर्मशाला।

तीर्थंकर शीतलनाथ चैत्यालय, देवाश्रम, आरा।

श्री जैन बाला विश्राम, आरा में बा० देवकुमार जी की बहन श्रीमती नेमसुन्दरी देवी तथा उनके पति बा० धनेन्द्र दास जी (पुत्र बा० हर प्रसाद दास जैन) द्वारा पंचकल्याणक प्रतिष्ठित 14 फुट ऊँची भ० बाहुबली स्वामी की विशाल प्रतिमा ।

भगवान बाहुबलि स्वामी की यह भव्य प्रतिमा 18 फुट ऊँचे कृत्रिम पर्वत पर विराजमान है ।

श्री जैन बाला विश्राम, आरा में विद्यालय भवन के ऊपर बा० देव कुमार जी की बहन श्रीमती नेमसुन्दरी देवी तथा उनके पति बा० धनेन्द्र दास जी द्वारा पंच कल्याणक प्रतिष्ठित भगवान महावीर स्वामी जिनालय

उपर्युक्त भगवान महावीर स्वामी जिनालय का बाहरी भाग, जहाँ आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज का मन्दिर है ।
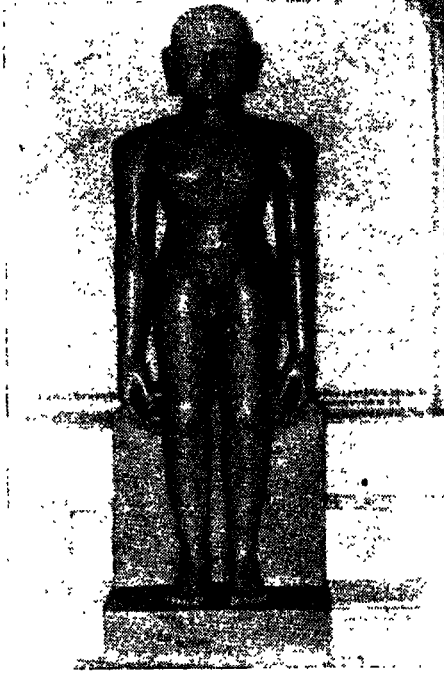
भगवान महावीर स्वामी की निर्वाण भूमि श्री पावापुरी जी दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र धर्मशाला में बा० निर्मल कुमार जी एवं बा० चक्रेश्वर कुमार जी द्वारा पंचकल्याणक प्रतिष्ठित भगवान महावीर स्वामी की शास्त्र-वर्णित 7 फुट ऊँची प्रतिमा ।

श्री जैन बाला विश्राम, आरा में आ० श्री शांति सागर जी महाराज की प्रतिमा श्रीमती शांति देवी ध०प० बा० निर्मल कुमार जी जैन ने स्थापित करवाई ।

ऐसी ही एक प्रतिमा श्रीमती कमला देवी ध०प० श्री सरोज कुमार जी जैन ने श्री पावापुरी जी दि० जैन धर्मशाला में स्थापित करवाई ।
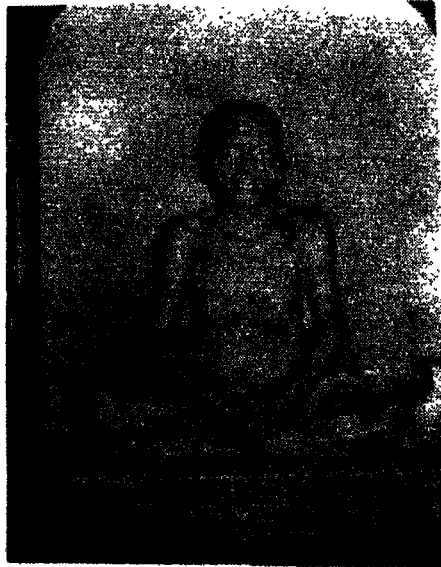
श्रीमती अनूपमाला देवी ध०प० राजर्षि देव कुमार जी जैन तथा ब्र०पं० चन्दाबाई जी द्वारा श्री जैन बाला विश्राम परिसर में स्थापित प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का मानस्तंभ। जिसकी प्रतिष्ठा में इन्द्र-इन्द्राणी श्रीमती एवं श्री सुबोध कुमार जैन थे।
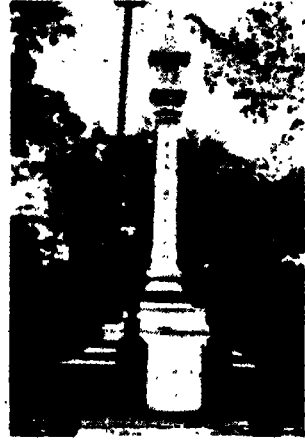
राजगृह के दूसरे पहाड़ "रत्नागिरि पर्वत" पर पू० चन्दाबाई जी द्वारा पंचकल्याणक प्रतिष्ठित भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी का मंदिर। जिसकी प्रतिष्ठा में इन्द्र-इन्द्राणी श्रीमती एवं श्री चक्रेश्वर कुमार जी जैन थे।

राजगृह के पहले पहाड़ ''विपुलाचल पर्वत'' पर देवाश्रम परिवार द्वारा निर्मित तथा प्रतिष्ठित भगवान महावीर स्वामी का मंदिर (मध्य)।

भगवान् महावीर स्वामी के 2500वें निर्वाण महोत्सव की स्मृति में श्री जैन बाला विश्राम, आरा में माँश्री चन्दाबाई जी द्वारा निर्मित भ० महावीर स्वामी कीर्तिस्तम्भ।
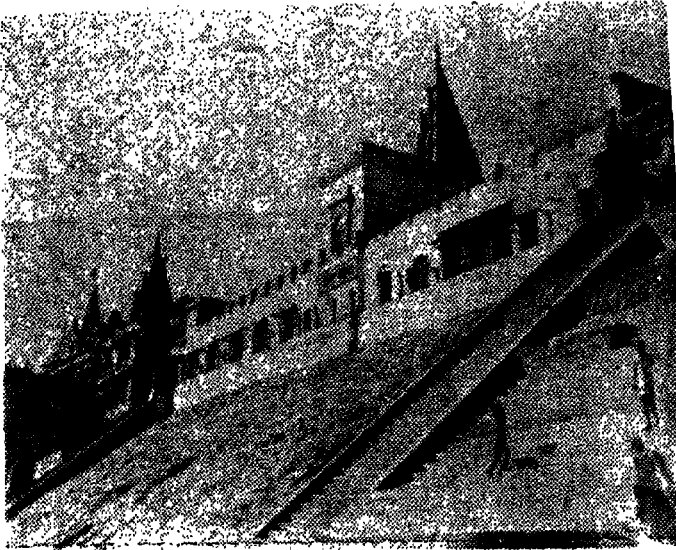
बाबू प्रभुदास जी का भवन, जैन घाट, बनारस में जहाँ उनके पौत्र बाबू देवकुमार जी ने पू0 गणेश प्रसाद जी वर्णी के नेतृत्व में प्रसिद्ध श्री स्याद्वाद महाविद्यालय की नीव रखी ।

इस संस्था की मुलाकात लेनेसे मैं बहोत खुश
हुआ हूं. मेरी उमेद है की इस संस्था के विद्यार्थी
सच्चे धर्मनिष्ठ होंगे की जिससे समस्त हिंद को
फायदा हो. मोहनदास करमचंद गांधी
माघ शुद्ध ४

श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में पू0 महात्मा गाँधी स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में आए थे और उन्होंने यह अभिमत लिखा ।
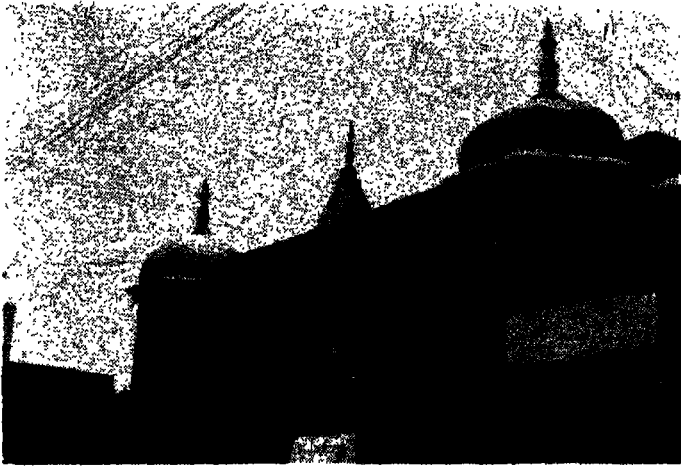
सन् 1903 में बा0 देव कुमार जी द्वारा आरा में स्थापित विश्व प्रसिद्ध श्री जैन सिद्धान्त भवन लाइब्रेरी । यहाँ ताड़पत्रीय ग्रंथ, हस्तलिखित ग्रंथ तथा छपे हुए जैन ग्रंथों का अपूर्व भंडार है तथा इसके अन्तर्गत "जैन कला एवं संस्कृति दीर्घा" में प्राचीन जैन चित्रों, सचित्र हस्तलिखित ग्रंथों, जैन डाक टिकट तथा प्राचीन सिक्कों का अद्भुत संग्रह है ।

आरा की प्रथम कन्या पाठशाला 'श्री जैन कन्या पाठशाला', जिसे ब्र0 पं0 चन्दाबाई जी ने भगवान शान्तिनाथ मंदिर के प्रांगण में सन् 1907 में स्थापित किया था और यहीं छात्राओं को वे पढ़ाती थीं ।
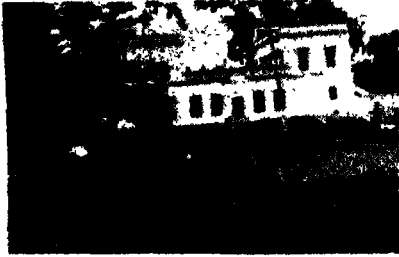
माँश्री चन्दाबाई जी द्वारा सन् 1921 में स्थापित श्री जैन बाला विश्राम, आरा की भव्य एवं कलात्मक इमारतें । इस बाला विश्राम में देश के अनेक महत्वपूर्ण नेतागण पधारे हुए हैं और सभी ने इसकी तथा माँश्री के कार्यों की भूरि-भूरि प्रसंसा की।
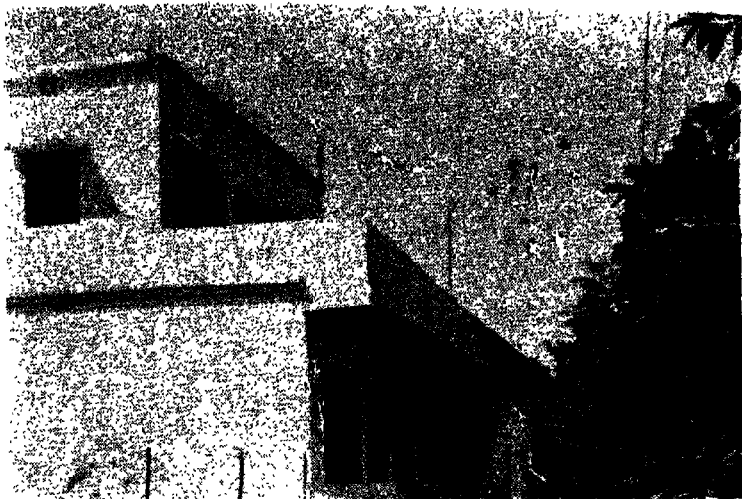
श्री आदिनाथ नेत्रविहीन विद्यालय की स्थापना श्री सुबोध कुमार जी जैन ने श्री जैन महिला विद्यापीठ के अन्तर्गत की थी। जिले का एकमात्र यह विद्यालय नेत्र विहीन छात्रों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रहा है ।

ज़िले का एकमात्र 'आरा मूक बधिर विद्यालय' की स्थापना श्री सुबोध कुमार जैन ने की थी। यह विद्यालय देवाश्रम कोठी के सामने गेस्ट हाउस में स्थित है।

देवाश्रम परिवार (ऊपर से नीचे की ओर)

1. संतोष कुमार, 2. प्रबोध कुमार, 3. आमोद कुमार, 4. योगेन्द्र कुमार, 5. प्रेम कुमार, 6. विमल कुमार, 7. अतुल कुमार, 8. सुबोध कुमार, 9. सरोज कुमार

* महेश देवी * नन्द रानी * ध.प.बा. निर्मल कुमार * बा.निर्मल कुमार * नेमसुन्दरी देवी * बा.चक्रेश्वर कुमार * ध.प.बा.चक्रेश्वर कुमार * शान्ता देवी * कमला देवी

* शशि प्रभा * पं. चन्दाबाई जी * सोम प्रभा * ध.प.बा. देव कुमार * रवि प्रभा

ऊपर - अतुल कुमार, शशि प्रभा, सरोज कुमार, आमोद कुमार ।
मध्य - ध.प. निर्मल कुमार जी, नेमसुन्दरी देवी, ध.प. चक्रेश्वर कुमार जी ।
नीचे - शान्ता देवी, कमला देवी, लक्ष्मी देवी ।

श्री प्रबोध कुमार जी, श्री सुबोध कुमार जी , श्री अतुल कुमार जी तथा श्री प्रेम कुमार जी (बाँये से दाँये)
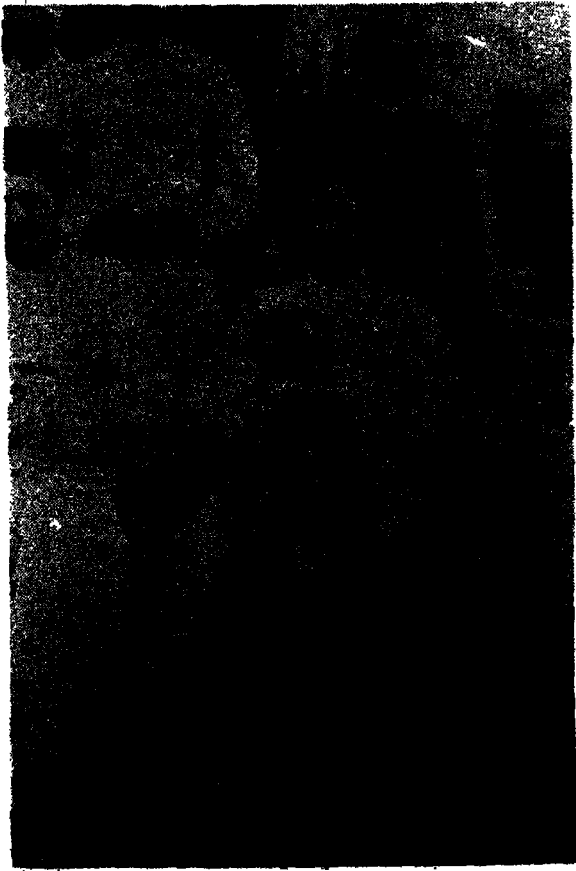
बा0 देव कुमार जी, गोद में नन्हे बा0 निर्मल कुमार जी।

आरा नगरी की सुप्रसिद्ध बसन्त पंचमी की वार्षिक रथ-यात्रा। बा0 निर्मल कुमार जैन बीच में सारथी की सीट पर बैठे हैं।

बा0 निर्मल कुमार जैन, श्री मदन मोहन अग्रवाल-प्रो0 मोडर्न केमिकल, श्री कैलाश चन्द जी जैन, ईलाहाबाद (बाएँ से दाएँ)।
जिस समय बा0 निर्मल कुमार जी वायसराय के कॉन्सिल ऑफ स्टेट की सदस्यता का चुनाव जीत कर शिमला वायसराय की मीटिंग में भाग लेने गये थे।

कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा माँश्री चन्दाबाई जी का अभिनन्दन
दिल्ली के लालकिला मैदान में आयोजित एक विशाल सभा में उपराष्ट्रपति डा0 राधाकृष्णन से अभिनंदन ग्रंथ लेते हुए साहित्यसूरि, सिद्धान्ताचार्य, पंडिता चन्दाबाई जी, सन् 1954 ।

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति होने के बाद पहली बार आरा में आये राष्ट्रपति डा0 राजेन्द प्रसाद जी तथा बिहार के राज्यपाल श्री अणे साहब का आश्रम में स्वागत-सत्कार करते हुए हुए पंडिता चन्दा माँश्री।
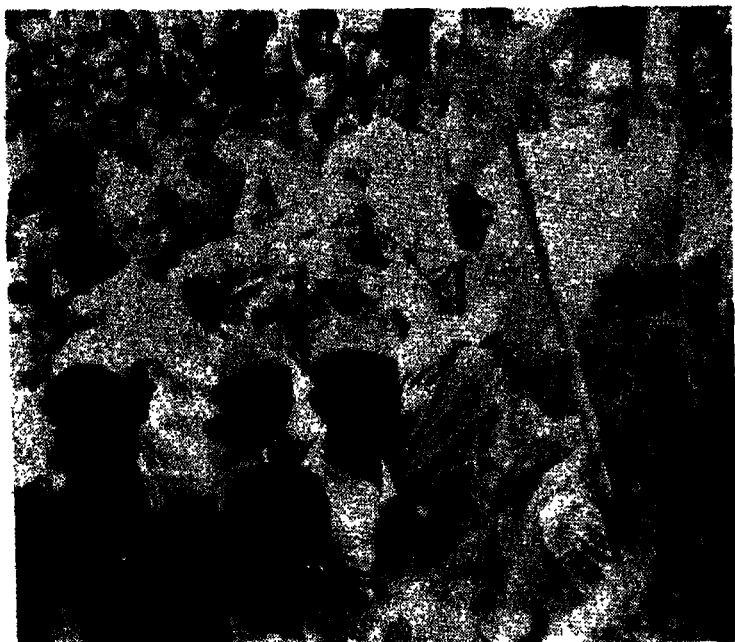
शाहाबाद जिला विद्यार्थी काँग्रेस के पहले अधिवेशन के उद्घाटनकर्ता लोकनायक श्री जय प्रकाश नारायण जी का "देवाश्रम" में स्वागत। उनके बगल में बैठे हैं स्वागत समिति के और शा0 वि0 काँग्रेस के अध्यक्ष श्री सुबोध कुमार जैन। खड़े हैं श्री ए0पी0 शर्मा, श्री अम्बिका शरण सिंह एवं अन्य कार्यकर्तागण।

लोकनायक जय प्रकाश नारायण

श्री सुबोध कुमार जैन
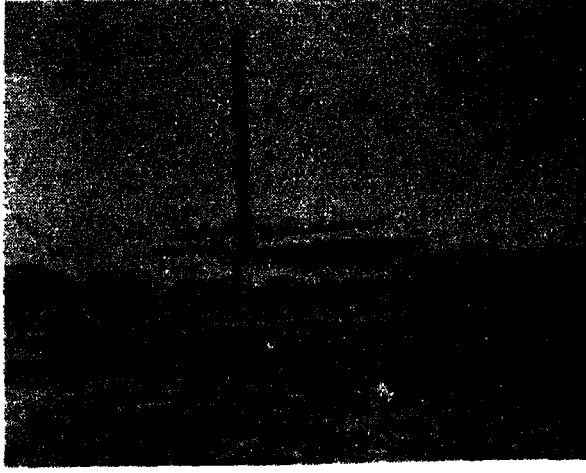
परिवार द्वारा स्थापित
प्रथम बड़ी चीनी मिल,
बिहटा में ।

पार्टनर थें-
बा0 निर्मल कुमार जैन,
बा0 चक्रेश्वर कुमार जैन,
सेठ रामकृष्ण डालमिया,
श्री जय दयाल डालमिया,
साहू शांति प्रसाद जैन ।
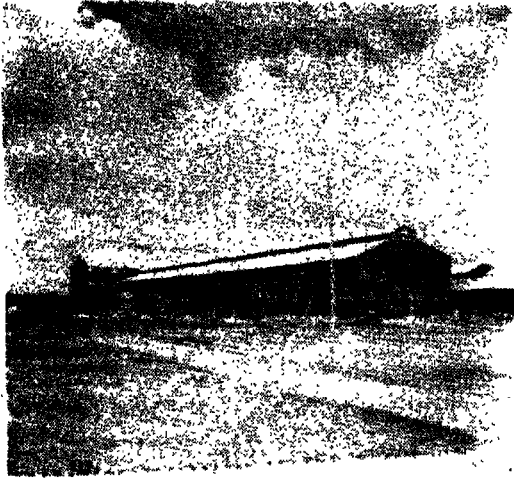
देवाश्रम परिवार द्वारा अनूप नगर, आसनसोल में स्थापित भारत में अल्यूमीनियम बनाने का प्रथम कारखाना "अल्यूमीनियम कॉरपोरेशन"। जर्मनी से जब अल्यूमीनियम बनाने की मशीन जहाज से आ रही थी इसी समय द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया। मशीन वाला जहाज इटली के पास ही क्षतिग्रस्त हो गया जिसके कारण बहुत ज्यादा नुक्सान हुआ।

इंजिनियर श्री वी० जे० कोशा, जिनके अथक परिश्रम के बाद अल्यूमीनियम कारखाने का पूरा प्रारूप तैयार हुआ था।

अल्यूमीनियम कारखाना में हमलोगों के पार्टनर थे- सेठ बलदेव दास सरावगी, कलकत्ता एवं श्री दयाराम पोद्दार, कलकत्ता।
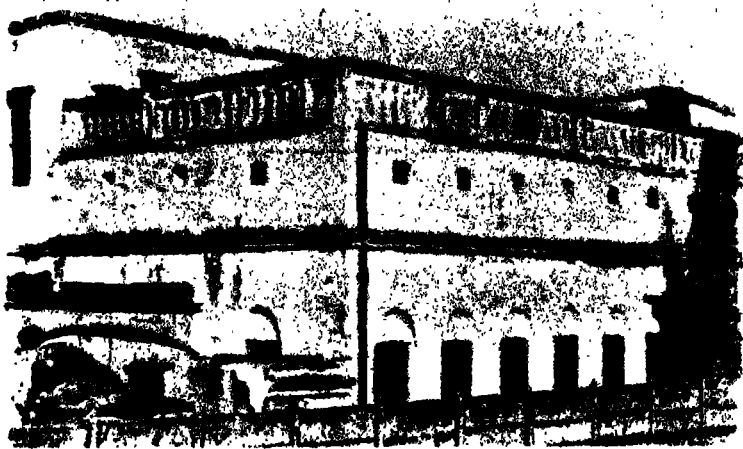
जैन घाट (भदैनी) बनारस स्थित आवास, जिसे बाबू मबासीलाल जी ने अपने चारों पुत्रों- प्रभुदास, अर्हंतदास, मुनेश्वरदास तथा जिनेश्वर दास के साथ शहजादपुर (इलाहाबाद) से आकर जमीन लेकर बनवाया था। (अब इसमें श्री स्याद्वाद महाविद्यालय का छात्रावास चलता है।)

''प्रभुदास भवन'' बा० प्रभुदास जी जब बनारस से आरा आये, तब उन्होंने महादेवा रोड में यह मकान बनवाया था। यहीं पर इन्होंने भ० शान्तिनाथ स्वामी का समवशरण मंदिर भी बनवाया।
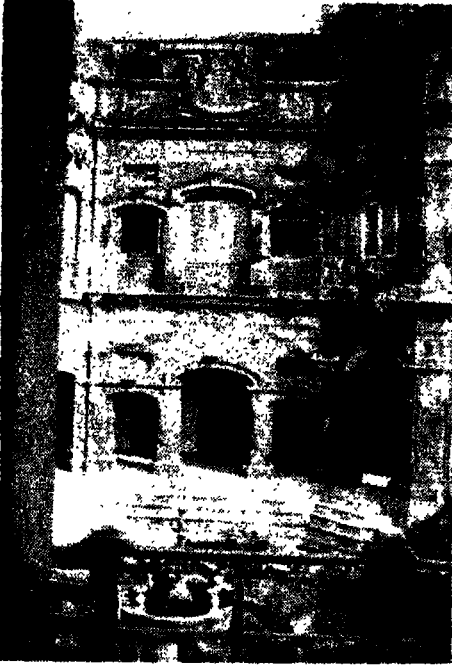
"देवाश्रम"

बा0 चक्रश्वर कुमार जी का विवाह जब नशीपुर की राजकुमारी निर्मला देवी से तय हुआ, उसी वक्त बाबू निर्मल कुमार जी ने इस कोठी को बनवाया था।

"चन्द्रलोक"

बा0 निर्मल कुमार जी जब तिब्बत से व्यापार शुरू कर रहे थे तभी उन्होंने कलिम्पौंग में एक छोटी पहाड़ी लेकर उस पर "चन्द्रलोक" नामक यह मकान बनवाया था। जिसे स्वतंत्रता के बाद जमीन्दारी उन्मूलन अभियान के अन्तर्गत सरकार ने जप्त कर लिया।

परिवार - जन

कौन / कहाँ

बा० निर्मल कुमार जी जैन के वंश के परिवार-जनों का पता

स्व० श्री प्रबोध कुमार जैन एवं श्रीमती नंद रानी देवी का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 85)

श्रीमती आशा जैन
W/o ***स्व0 श्री जिनेश कुमार जैन***
C/o *श्री पन्ना लाल जैन*
गंगा पैलेस, काली कृष्ण
टैगोर स्ट्रीट, कलकत्ता -700007
फोन-
S.T.D - 033

श्री अरिंजय कुमार जैन
देवाश्रम, महादेवा रोड
आरा (बिहार) -802301
फोन- 24056
S.T.D - 06182

श्रीमती मणि जैन
W/o ***श्री राज कुमार जैन***
रानी मिल, जी0 टी0 रोड
मेरठ (उत्तर प्रदेश)
फोन- 525887, 525884
S.T.D - 0121

श्री प्रद्युम्न कुमार जैन
जैनवीला, 6/63, राजनगर
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
फोन- 755017, 717329
S.T.D - 0575

श्रीमती रागिनी जैन
W/o **श्री विपिन जैन**
जैन पेट्रोल पम्प, रेलवे रोड
ज्वालापुर (उत्तर प्रदेश)
फोन- 451885
S.T.D - 0133

श्रीमती नलिनी जैन
W/o **श्री अभिनन्दन जैन**
28, गाँधी रोड, देहरादून
(उत्तर प्रदेश) -248001
फोन- 655841
S.T.D- 0135

श्रीमती स्मिता जैन *(सुपुत्री- श्री अरिंजय - श्रीमती कुसुम जैन)*
W/o **श्री विपिन कुमार जैन**
A -401, *एवन प्लाजा-1*
ठाकुर कॉम्प्लेक्स
W - E *हाईवे, कांदीवली (पूर्व)*
मुम्बई -400101
फोन- 8866161 (R), 4930284 (o)
S.T.D- 022

श्रीमती मधुलिका सराफ *(सुपुत्री- श्रीमती मणि-श्री राजकुमार जैन)*
W/o **श्री मनोज सराफ**
34, शालीमार अपार्टमेंट
12-बी, शेक्सपुर, सरानी थियेटर रोड
कलकत्ता -700017
फोन- 2470709
S.T.D - 033

श्रीमती अनामिका पाटनी *(सुपुत्री- श्रीमती मणि-श्री राजकुमार जैन)*
W/o ***श्री नवनीत पाटनी***
666, इंदिरा नगर, बैंगलोर
फोन- 581105
S.T.D - 0812

Smt. Sarika Jain *(सुपुत्री- श्रीमती मणि-श्री राजकुमार जैन)*
W/o **Sri. Mayank jain**
senior consultants
Global Baan Practice Consulting Group
2010, main street, suit-850
Irvine, CALIFORNIA -92614
Ph.- 949-474-7991

★

श्री सुबोध कुमार जैन एवं श्रीमती शान्ता देवी

देवाश्रम, आरा - 802301, *फोन*- 06182-25909

का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 85)

श्रीमती जया जैन
W/o ***श्री सत्येन्द्र कुमार जैन***
सी -26, चंदरनगर
यू0 पी0 बार्डर, जि0- गाजियाबाद
उत्तर प्रदेश -201011
फोन- 627100, 625593, 624790, 625841
S.T.D - 0575

श्री जय कुमार जैन
9/293, सेक्टर - III
होली ऐंजल स्कूल के निकट
राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद
जि0- गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
फोन- 635943 (R), 626402 (F)
S.T.D - 0575

श्री अजय कुमार जैन
जैनकॉम, आर0 एन0 सहाय का मकान
पोस्टल पार्क, रोड नं -1
चिरैयाटॉड़, पटना -800001
फोन- 352285
S.T.D - 0612

श्री विजय कुमार जैन
62, मधुबनी, काठ रोड
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)
फोन- 352169, 413657
S.T.D - 0591

श्री संजय कुमार जैन
बी- 8, चंदरनगर
यू0 पी0 बार्डर
जिला- गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
फोन- 625400, 625500
S.T.D - 0575

श्री अभय कुमार जैन
देवाश्रम, महादेवा रोड,
आरा (बिहार) -802301
फोन- 25909
S.T.D - 01682

श्री अक्षय कुमार जैन
4, बैंक कॉलोनी
उपवन होटल के निकट
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
फोन- 331857
S.T.D - 0551

श्रीमती मधु गर्ग
W/o **श्री दीपक गर्ग**
स्वप्नलोक, नारायणपुरी
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
फोन- 727712
S.T.D - 0132

श्री विनय कुमार जैन
जैनसन रिफ्रेक्ट्रीज
नेहरु रोड, चिरकुंडा
धनबाद (बिहार)
फोन- 23328
S.T.D -06552

श्रीमती संगीता जैन (सुपुत्री- श्री जय - श्रीमती जागृति जैन)
W/o **श्री पीयूष जैन**
292, क्लेमेंट स्ट्रीट
तोपखाना, मेरठ (उत्तर प्रदेश)
फोन-
S.T.D - 0121

श्रीमती लतिका जैन (सुपुत्री- श्री जय - श्रीमती जागृति जैन)
W/o **श्री संजीव जैन**
1503, कूचा सेठ
दरिबाकलाँ, दिल्ली -110006
फोन- 3272417 (R),
3251637, 3258732 (o)
S.T.D - 011

श्रीमती दीपिका जैन (सुपुत्री- श्री जय - श्रीमती जागृति जैन)
W/o **श्री राजीव कुमार जैन**
एम ई -1,
सह विकास अपार्टमेंट
68, पड़पड़गंज,
दिल्ली -110092
फोन-
S.T.D - 011

श्रीमती रत्ना जैन *(सुपुत्री- श्री अजय - श्रीमती विमलेश जैन)*
W/o ***श्री सिद्धार्थ जैन***
जैन ट्रेडर्स, सी के - 52/4
राजा दरवाजा, वाराणसी
(उत्तर प्रदेश) - 221001
फोन- 353040 (R), 320057 (S)
S.T.D - 0542

श्रीमती शिखा जैन *(सुपुत्री- श्री विजय - श्रीमती रेखा जैन)*
W/O ***श्री मयंक कुमार जैन***
जैन ब्रदर्स इंडस्ट्रीज प्रा0 लि0
पारसदीप, पंजाबीपुरा
दिल्ली रोड, मेरठ
(उत्तर प्रदेश) -250002
फोन- 512585, 512879
S.T.D -0121

★

श्री संतोष कुमार जैन एवं श्रीमती महेश देवी

5, जयंत ज्योति, राइडिंग रोड, पटना, फोन– 0612-221875

का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 85)

श्रीमती ईला जैन
W/o ***श्री श्रीपाल जैन***
वैजयंत, साकेत
..I.C Bldg. *के निकट*
मेरठ -7 (उत्तर प्रदेश)
फोन– 647008
S.T.D - 0121

श्रीमती शोभा जैन
C/o ***श्री शांतनु जैन***
J- 6, *ग्रीन पार्क एक्स्टेंशन*
नई दिल्ली
फोन– 6197454
S.T.D -011

श्री शिशिर जैन
श्री सुधीर जैन
5, जयंत ज्योति
राइडिंग रोड, शेखपुरा
पटना (बिहार)
फोन– 221875, 230181 (R)
S.T.D -0612

★

स्व० श्री सरोज कुमार जैन एवं स्व० श्रीमती कमला देवी का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 85)

श्रीमती ज्योति जैन
A- *118, न्यू फ्रेन्ड्स कॉलनी*
नई दिल्ली
फोन- 6837619
S.T.D -011

श्री अरूण जैन
A- *3/111*
शिव पार्वती हाउसिंग सोसाईटी
सेक्टर-21, नेरूल
न्यू मुम्बई -400706
फोन- 7702352
S.T.D -022

Smt. Neelima Jain
W/o **Sri. Sudhir Jain**
18901, Spring Field Avenue
Illinoxse -60422, U.S.A.
Ph.

श्रीमती अलका जैन
48, दरियागंज
दिल्ली -6
फोन- 3272496
S.T.D -011

★

श्रीमती शशि प्रभा जैन एवं स्व० श्री राजेन्द्र कुमार जैन का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 85)

श्री जैनेन्द्र कुमार जैन
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री अशोक कुमार जैन
श्री आलोक कुमार जैन
46/41, राजगद्दी
कानपुर (उत्तर प्रदेश)
फोन- 360675
S.T.D - 0512

श्रीमती कविता जैन
W/o *श्री नित्य प्रकाश जैन*
पहाड़ी धीरज, D- 14/69
सेक्टर -7, रोहिनी
नई दिल्ली
फोन- 704889
S.T.D -011

श्रीमती मृदुला जैन
W/o *श्री प्रमोद कुमार जैन*
106/276,
म0 गाँधी नगर
कानपुर (उत्तर प्रदेश)-208012
फोन-
S.T.D - 0512

श्रीमती पूनम जैन
W/o श्री पार्श्व कुमार जैन
235, आर्य नगर
पार्क के निकट
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
फोन-
S.T.D - 0522

★

स्व० श्री आमोद कुमार जैन एवं श्रीमती शारदा देवी का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 85)

श्री राकेश जैन
हथुआ कोल्ड स्टोरेज
पो0- मीरगंज
जिला- गोपालगंज (बिहार)
फोन- 8317
S.T.D - 06156

श्री रंजन जैन
महावीर प्रिंटर्स
3/402, थाना रोड
नगरपालिका के सामने
पो0- रामनगर, वाराणसी -221008
फोन- 68840
S.T.D -

श्रीमती रश्मि जैन
W/o ***श्री दीपक कुमार जैन***
180, श्याम पार्क
साहिबाबाद, जि0- गाजियाबाद
(उत्तर प्रदेश) -201005
फोन- 762247,
S.T.D - 0575

★

श्री अतुल कुमार जैन एवं श्रीमती इन्दु देवी

121-A, रजनीगंधा अपार्टमेंट, निकट सदाकत आश्रम

पटना (बिहार) फोन- 0612 - 261496

का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 85)

आनन्द कुमार जैन
न्यू एरिया, जाखी बीघा
डॉ० त्रिशला क्लिनिक के पीछे
डिहरी ऑन सोन (बिहार)
फोन-
S.T.D - 06188

श्रीमती नीता जैन
W/o ***श्री राकेश जैन***
298, जी0 टी0 रोड
अम्बा प्रसाद जैन एण्ड कं0
मेरठ (उत्तर प्रदेश)
फोन- 511183
S.T.D - 0121

श्री ईशान कुमार जैन
204, मनप्रभा अपार्टमेंट
पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड,
पटना (बिहार)
फोन- 223872 (R),
351872 (o)
S.T.D - 0612

बा० चक्रेश्वर कुमार जी जैन
के वंश के परिवार-जनों
का पता

स्व० श्रीमती रवि प्रभा देवी एवं स्व० श्री मान चंद जैन का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 86)

श्री उमेश कुमार जैन
वेल्डमेक, पुष्पक इन्क्लेव
मारवाड़ी आवास गृह कैम्पस
फ्रेजर रोड, पटना
फोन- 239088(R), 230351,225617(O)
S.T.D - 0612

श्रीमती मीरा तिब्रेवाल
W/o *श्री सत्यनारायण तिब्रेवाल*
आर. एस.- झंझारपुर
जिला- दरभंगा (बिहार)
फोन-
S.T.D -

श्री मनोज जैन
227, लोवर सरकुलर रोड
बालीगंज, कलकत्ता-700019
फोन-
S.T.D -033

श्री दिलीप जैन
फ्लैट नं- 23/ ए
क्वीन मेन्सन, 12,
पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016
फोन- 293767 (P.P.)
S.T.D -033

श्रीमती वीना पोद्दार
W/o श्री कैलाश पोद्दार

फोन- 644952
S.T.D - 0612

श्रीमती निवेदिता दास *(सुपुत्री- श्री उमेश - श्रीमती तारा जैन)*
W/o श्री अजय दास
दीवान मुहल्ला
नौजरघाट, पटना सिटी
फोन- 644952
S.T.D - 0612

श्रीमती निमिषा जैन *(सुपुत्री- श्री उमेश - श्रीमती तारा जैन)*
W/o श्री पंचुल जैन
एम- 5, जवाहर क्वार्टर्स
दयानन्द नर्सिंग होम के पास
बेगमपुर, मेरठ (उत्तर प्रदेश)
फोन- 664701
S.T.D -0121

श्रीमती सोम प्रभा देवी एवं स्व० श्री शान्ती कुमार जैन का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 86)

श्रीमती सोम प्रभा जैन
C/o *श्री विपुल कुमार जैन*
बी- 11, प्रथम तल्ला
एफ-3, रामप्रस्थ, यू. पी. बॉर्डर
जिला- गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
फोन- 623977
S.T.D -0575

श्रीमती सुधा जैन
W/o *श्री नरेन्द्र कुमार जैन*
142, न्यू गाँधी नगर
पानी टंकी के सामने
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
फोन- 712623
S.T.D -0575

श्री प्रसून जैन
8/203, राजेन्द्र नगर
शिव मंदिर के पास, सेक्टर-8,
साहिबाबाद (उत्तर प्रदेश)
फोन-
S.T.D -0575

★

स्व० श्री प्रेम कुमार जैन एवं श्रीमती मनोरमा देवी का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 86)

श्री अचल कुमार जैन
श्री सुनील कुमार जैन
बी-1/611, जनकपुरी
नई दिल्ली
फोन- 5533245 (R)
S.T.D -011

श्रीमती साधना जैन
W/o *श्री वीरेन्द्र कुमार जैन*
1290, फाईगंज
बहादुरगढ़ रोड, दिल्ली-110006
फोन- 776440
S.T.D -011

श्रीमती शोभना जैन
W/o *श्री राजेश जैन*
ए-245, डेरावाला नगर
नई दिल्ली-110009
फोन-
S.T.D -011

★

श्री योगेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती शकुन्तला देवी

28, बंसत विहार कॉलोनी, बोरिंग रोड, पटना -8

फोन- 262705 (R) S.T.D -0612

का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 86)

श्रीमती अर्चना जैन

W/o श्री मृदुल जैन

सी. के. - 52/4,

राजा दरवाजा, वाराणसी

(उत्तर प्रदेश) - 221001

फोन- 353990 (R), 353991 (S)

S.T.D - 0542

श्रीमती वन्दना अग्रवाल

W/o श्री अमरेश अग्रवाल

43, व्रजलता एपार्टमेन्ट

न्यू पाटलिपुत्रा, पटना

फोन- 268553

S.T.D -0612

श्रीमती कल्पना शाह

W/o श्री कौशल शाह

7, नयनदीप एपार्टमेन्ट

बोडकदेव रोड, वस्त्रापुर,

अहमदाबाद-380015

फोन- 474408

S.T.D -079

श्रीमती अंजली जैन
W/o श्री राहुल जैन
डी- 2/33, राजस्थली एपार्टमेन्ट
प्रीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन- 7028707
S.T.D -011

श्रीमती मंजुला अग्रवाल
W/o श्री पुनीत अग्रवाल
मोतीलाल नेहरू रोड
ईलाहाबाद-211002
फोन- 644592
S.T.D - 0532

★

स्व० श्री विमल कुमार जैन एवं श्रीमती पुष्पा देवी का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 86)

श्री सलिल कुमार जैन
श्री नीरज कुमार जैन
एम- 2/75, बल्लभ विहार
रंग रसायन सोसाइटी के पास
सेक्टर-13, रोहिनी, दिल्ली
फोन-
S.T.D -011

श्रीमती गरिमा जैन
W/o *श्री अतुल कुमार जैन*
फ्लैट नं- 4
कैलाश अपार्टमेंट
ज्योति नगर, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
फोन-
S.T.D.-02432

☆

श्रीमती श्रीप्रभा देवी एवं स्व० श्री राजेन्द्र कुमार जैन का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 86)

श्रीमती श्रीप्रभा जैन
C/o *श्री समीर जैन*
7/33, दरियागंज
अन्सारी रोड, नई दिल्ली
फोन- 3276228
S.T.D -011

श्रीमती सीमा जैन
W/o *श्री नीरज जैन*
2, ट्रिब्यून कॉलोनी
अंबाला कैन्ट (हरियाणा)
फोन- 652728
S.T.D.-0171

★

श्री उद्योत कुमार जैन एवं श्रीमती श्यामा देवी

देवाश्रम, महादेवा रोड, आरा (बिहार) -802301

फोन- 25308, S.T.D - 06182

का परिवार

(देखिए वंश-वृक्ष, पृष्ठ- 86)

श्रीमती शुचिता गुप्ता
W/o *श्री विनोद गुप्ता*
129, एस.एन.बनर्जी रोड
कलकत्ता -700013
फोन- 2459996
S.T.D - 033

श्रीमती प्रज्ञा गर्ग
W/o *श्री सुनील गर्ग*
हरनाम ट्रेडर्स
एच. एम. डी. रोड
जयगाँव -735208
फोन- 63515
S.T.D - 03566

★

श्री रत्नेश कुमार जैन एवं श्रीमती प्रतिभा देवी

ग्रीजॉल सरफैक्टेन्ट, 17, शिवाजी मार्ग

इन्डस्ट्रीयल एरिया, नई दिल्ली-15

फोन- 5584836(R), 5411630, 533900(O)

S.T.D - 06182

☆

हमारे हितैषी

देवाश्रम परिवार के हितैषी

♦ सुबोध कुमार जैन

अपने परिवार के पिछले 125 वर्षों में जो कुछ विशिष्ट हितैषी और मित्र हुए हैं उनके विषय में शब्द-चित्रों में छोटे-छोटे लेख लिखना आरंभ किया था। ताकि इसी पुस्तक में परिशिष्ट रूप में मुद्रित करा दूंगा। फिलहाल पुस्तक छपने तक कुछ ही लिख सका हूँ। जो निम्न हैं...

1. श्री छेदीलाल जी और हमारे बनारस के अन्य वंशज
2. पू० भट्टारक जिनेन्द्र भूषण जी
3. बाबू कुंवर सिंह
4. श्रद्धेय गणेश प्रसाद जी वर्णी
5. पू० भट्टारक नेमि सागर जी वर्णी
6. राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद
7. बाबू जगजीवन राम
8. डा० सच्चिदानंद सिन्हा
9. पू० जिनेन्द्र वर्णी जी
10. श्री राम जीवन सरावगी तथा बा० छोटे लाल जी सरावगी
11. पू० विनोवा भावे
12. आचार्य जे० बी० कृपलानी
13. सर्वश्री डालमिया एवं साहू परिवार
14. चौधरी शराफत हुसेन तथा वजाहत हुसेन
15. बा० बच्चू लाल जी
16. इमदाद इमाम, अली इमाम और हसन इमाम साहब
17. बा० करोड़ी चन्द जी
18. श्री जैनेन्द्र किशोर जैन एवं श्री देवेन्द्र किशोर जैन
19. श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा
20. पंडित प्रद्युम्न मिश्र
21. पू०भट्टारक चारूकीर्ति जी महाराज, मूडबिद्री
22. श्री ए०पी० शर्मा
23. डा० जगदीशचन्द्र जैन
24. सत्याग्रह के दिनों में कुछ बरतानवी (ब्रिटिश) शासकों का हमारे परिवार के प्रति सद्भाव

❖

बाबू छेदी लाल जी
एवं हमारे बनारस के अन्य वंशज

बाबू छेदी लाल जी

आरा में आकर बसने के पूर्व से बाबू देवकुमार जी की मृत्यु पर्यन्त प्रभू परिवार के बनारस के अग्रज बाबू छेदी लालजी ने सदा परिवार के सहोदर और अभिभावक के रूप में योगदान दिया ।

बाबू प्रभूदासजी द्वारा 5 मन्दिरों और धर्मशालाओं के निर्माण में जब-जब अर्थ की दिक्कत हुई, उन्होंने बराबर आवश्यक धन दिया । जिसे प्रभू परिवार द्वारा चुकता किया गया।

कलकत्ते में बाबू देव कुमारजी की असाध्य बीमारी में भी वे न केवल बराबर कलकत्ता रहे, बल्कि उस समय भी आर्थिक दिक्कत इलाज के कम में नहीं होने दी । इन सारी रकमों को बाबू निर्मल कुमार जी ने उन्हें चुका दिया । आज तक मैं, सुबोध कुमार,उस परिवार से घनिष्ठ संबंध बनाए हुए हूं। बनारस के पूर्वजों के वंशजों में स्व० गणेश दास जी, मुल्लन बाबू, मधुसूदन बाबू, हीरालालजी से घनिष्ठ संबंध थे और अभी भी अनिल कुमार जी, मुन्नी बच्चा एवं बिमल कुमार जी से प्रिय और निकट सम्बन्ध बने हुए हैं। ये सभी सुखी और समृद्ध हैं । हमारे प्रतिनिधि के रूप में स्याद्वाद संस्कृत महाविद्यालय में बिमल कुमार जी और चन्द्रावती मंदिर के कार्यों में अनिल कुमार जी योगदान दे रहे हैं ।

बाबू गणेश दास जी के पुत्र श्री ज्ञानचंदजी आरा परिवार से बहुत घनिष्ठ हैं और श्री जैन बाला विश्राम, (आरा) को स्वेच्छा से अर्थ सहयोग देते रहते हैं । उन्हीं के बड़े भाई श्री हीराचंद जी हमारे अत्यन्त प्रिय मित्र थे । आरा एवं बिहटा में वर्षों हम साथ-साथ रहते हुए पढ़े-लिखे, खेले-कूदे ।

❖

श्रद्धेय भट्टारक जिनेन्द्र भूषण जी

जिनेन्द्र भूषण जी बाबू प्रभुदास जी के जीवन में धार्मिक गति प्रदान करने वाले थे। पूज्य भट्टारक जी की ही प्रेरणा से बाबू प्रभू दासजी ने एक साथ पांच मन्दिरों और धर्मशालाओं के निर्माण और प्रतिष्ठा कराने का निर्णय लिया और

(1) तीर्थंकर पद्मप्रभु का जन्म स्थान कौशाम्बी (प्रयाग) यमुना किनारे

(2) तीर्थंकर चन्द्रप्रभु का जन्म स्थान चन्द्रावती(बनारस गंगा किनारे)।

(3) तीर्थंकर सुपार्श्व का जन्म स्थान बनारस (गंगा किनारे)

(4) शाहजादपुर, इलाहाबाद (अपने पूर्वजों का जन्म स्थान) और

(5) कौशाम्बी के निकट जैनियों की बस्ती पाली में आवश्यक भूमि चयन कर एक समान, एक रूप के और एक ही प्रकार के पत्थर के तराशे सम्पूर्ण मंदिर बनवाकर मिर्जापुर से सभी जगह पहुंचवा दिए। पाली और शाहजादपुर के मंदिर नहीं बन सके। इसके पत्थर अभी भी वहीं गिरे पड़े हैं। बद्री पुजारी के अनुसार पत्थर गांव के लोगों ने अपने घरों में लगवा लिए हैं जो अभी भी देने को तैयार हैं।

इस प्रकार धर्म के प्रति, प्राचीन मूर्तियों के प्रति और प्राचीन जैन हस्तलिपि शास्त्रों को इकट्ठा करके तथा देश के प्रसिद्ध जैन विद्वानों से सम्पर्क कर उनका धार्मिक योगदान आरंभ हो गया। पू० भट्टारक जी की प्रेरणा ने उनके जीवन को, जो धार्मिक गति दी, अनेक धार्मिक कार्य उनके द्वारा हुए, जिसे कि उनकी जीवनी पुस्तक "हमारे पूर्वज "में मैंने एकत्रित किया है। उनके द्वारा प्रारंभिक धार्मिक नींव शिरता से हमारे परिवार में अनेक धार्मिक कार्य अभी तक होते आ रहे हैं।

इसके उपरान्त दादा जी साहब आरा चले आए जहाँ इन्होंने शांतिनाथ भगवान का समोशरण मंदिर बनवाया, जिसे लाल मंदिर कहते हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने देवाश्रम में एक चैत्यालय की भी स्थापना करवाई है ।

❖

1857 गदर के सेनानायक

बाबू कुंवर सिंह

बाबू कुंवर सिंह

लगभग सन् 1850 ई० में, हमारे परदादा जी बाबू प्रभुदास जी बनारस से आरा आकर यहीं बस गए थे।

बाबू कुंवर सिंह जी बराबर उनसे मिलने आते थे और जब मित्रवत् व्यवहार होने लगा, [illegible] आवश्यकता पड़ने पर दादाजी से कर्ज लिया करते थे।

उसके कागजात जो कुछ कोठी के ऑफिस में, उपलब्ध हुए, वे इस समय मेरे द्वितीय पुत्र अजय कुमार के पास हैं ।

बाबू कुंवर सिंह जगदीशपुर के राजा कहे जाते थे और उधर के अनेक गांवो के वे मालिक थे। बिहिया से लेकर बिक्रमगंज के चारो ओर उनका शासन था।

आरा में बाबू साहब की बहुत बड़ी कोठी बाबू बाजार में थी और बाबू कुंवर सिंह के नाम से ही वह सड़क-बाबू बाजार अभी भी कहलाती है।

हमारे दादा जी साहब-बाबू प्रभुदास जी के कहने पर उन्होंने वर्त्तमान चन्दा प्रभु भगवान का सुप्रसिद्ध मंदिर है, उस स्थान को मंदिर बनाने के लिए अपनी पुत्री-श्रीमती कुंदन बीबी के ससुर को मुफ्त में दिया था। जहाँ उन्होंने देवीजी का सुप्रसिद्ध मंदिर और चन्दा प्रभु भगवान का समवशरण मंदिर बनाया और प्रतिष्ठा कराई ।

बाबू कुंवर सिंह का बनवाया हुआ एक मस्जिद अभी भी आरा नगर में बहुत प्रसिद्ध है। एक मुसलमान नर्तकी के नृत्य से खुश होकर उन्होंने वह मस्जिद बनवा दिया था।

बाबू कुंवर सिंह बहुत ही उदार आदमी थे। उनके निमंत्रण पर दादा-बाबू प्रभुदास जी कई बार जगदीशपुर उनके मेहमान बनकर गए थे। आरा जिला के सभी अंग्रेजी कलक्टर और दूसरे ऑफिसर जगदीशपुर जंगल में शिकार खेलने जाया करते थे और बाबू कुंवर सिंह द्वारा उनलोगों की भरपूर खातिरदारी हुआ करती थी।

1857 के गदर, जो कि भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रथम युद्ध था, उसमें बाबू साहब ने खुलकर हिस्सा लिया और अन्तोगत्वा अंग्रेजों द्वारा, उनकी जीवन-ज्योति बुझा दी गई। एवं उनकी सारी जमींदारी अंग्रेजों ने जप्त कर ली।

हमारे परिवार वाले, अभी तक, बाबू साहब के साथ परिवार की मैत्री की स्मृतियाँ संजो कर रखी हुई है। हमारी पर दादी जी ने (बाबू देव कुमार जी की माँ) बाबू कुँवर सिंह को तथा, उनके छोटे भाई-बाबू मान सिंह को कई बार कोठी में आते-जाते देखा था । उनके बारे में बराबर प्रशंसात्मक बातें बताया करती थीं । ❖

पूज्य श्रद्धेय गणेश प्रसाद जी वर्णी

पू० गणेश प्रसाद जी वर्णी

भारत वर्ष में विख्यात युग-पुरूष स्वनामधन्य त्याग की प्रतिमूर्ति गणेश प्रसाद जी वर्णी के द्वारा ही स्याद्वाद महाविद्यालय काशी की स्थापना कराई गई। एक रूपये में 64 पोस्ट-कार्ड लेकर उन्होंने देश के 64 व्यक्तियों को वाराणसी के एक दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की महती आवश्यकता पर बल देते हुए , इस शुभ काम के लिए एक मीटिंग का आह्वान किया था ।

मीटिंग हुई और बम्बई के सेठ माणिक चन्दजी एवं आरा से हमारे पूज्य पितामह बाबू देवकुमार जी भी उपस्थित हुए। दादा साहब ने उत्साह पूर्वक इस प्रस्ताव को तत्काल मूर्त्तरूप देने के लिए अपने भदैनी स्थित गंगा किनारे विशाल भवन को उपयोग के लिए विद्यालय की अनुमति प्रदान की। इसके अतिरिक्त उन्होंने और सेठ माणिक चन्द जी ने मासिक आर्थिक सहायता की स्वीकृति भी दी । सर्वसम्मति से दादा बाबू देव कुमार जी को प्रथम मंत्री मनोनीत किया गया।

गणेश प्रसाद वर्णी, प्रथम विद्यार्थी ने प्रवेश-पत्र भरा। वह पौधा समय पाकर विशाल वृक्ष बना । सैकड़ों विद्यार्थियों ने यहाँ संस्कृत, प्राकृत और जैनागम की शिक्षा पाई और मध्य प्रदेश आदि अन्य स्थानों में पूज्य गणेश प्रसाद जी की अगुआई में अनेक संस्कृत विद्यालय जैन समाज द्वारा खोले गए।

इस प्रकार हमारे परिवार को तथा पूज्य वर्णी के बीच जो प्रिय सम्बन्ध बने इसे कालान्तर में दादी जी पूज्या चन्दाबाई, के अतिरिक्त हमारे पिता जी, चाचा जी से तो बहुत ही निकट सम्पर्क बना।

मुझे भी पूज्य वर्णी जी के दर्शन और आर्शीवाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला जबकि वे गया के पंचायती मंदिर में एक बार चौमासे के बीच ठहरे हुए थे। उनकी कितनी अधिक आत्मीयता थी हमारे परिवार से, यह उस वक्त ही मालूम हुआ । हमारे माथे पर हाथ रखकर उन्होंने आर्शीवाद देते हुए घर के सभी एक-एक अग्रणी सदस्यों के कुशल समाचार पूछे । विचित्र मोहिनी थी उनके व्यवहार में, मैं कभी उन्हे भूल नहीं सकता ।

कालान्तर में इनका ईसरी में मुनि दीक्षा के उपरान्त समाधिमरण हुआ। वहीं उनका आश्रम स्थापित हुआ था और समाधि मंदिर भी अति दर्शनीय है ।

❖

पूज्य भट्टारक नेमी सागर जी वर्णी
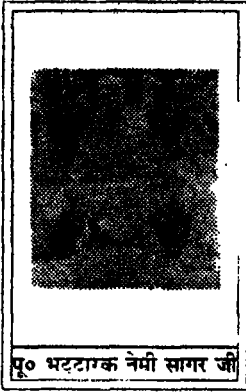
पू० भट्टारक नेमी सागर जी

जिस समय पूज्य दादा देव कुमार जी स्याद्वाद महाविद्यालय काशी के मंत्री थे, उसी समय वहाँ के विद्यार्थी (पूज्य भट्टारक) नेमी सागर जी वर्णी ने अपनी अध्ययन कुशलता से उन्हें बहुत प्रभावित किया था।

कालान्तर में जब दादा साहब अस्वस्थ हुए तो उन्होंने विद्यालय से नेमि सागर वर्णी को शास्त्रपाठ के निमित्त अपने पास बुला लिया । नियमित शास्त्र-पाठ और धर्म चर्चा होने से दादा साहब को बहुत सुकून मिला । कलकत्ता में जब दादा साहब ने परम वीरता पूर्वक अपना समाधिमरण कराया, उस समय श्रवणबेलगोला के ये भावी भट्टारक उनके परम सहयोगी के रूप में उनके साथ रहे।

तब से हमारे परिवार से खास तौर से पूज्य पिता जी बाबू निर्मल कुमार जी और दादी जी पंडिता चंदाबाई से भी उनके शिक्षक के रूप में वे बहुत निकट सम्पर्क में रहे।

1935 ई० के आसपास पिताजी पूरे परिवार के साथ दक्षिण भारत की यात्रा पर निकले थे । श्रवणबेलगोला में भैया प्रबोध कुमार, हमारा, संतोष और सरोज चार भाईयों का यज्ञोपवीत संस्कार उन्होंने बहुत कर्मपूर्वक गाजे-बाजे के साथ, दक्षिण भारत विधि से कराया एवं पूज्य चाचा चक्रेश्वर कुमार जी के ज्येष्ठ पुत्र प्रेम कुमार का कर्णछेदन उत्सव भी उत्साह पूर्वक कराया था। बाद में पिता जी ने उन्हें (भट्टारकजी को) आरा निमंत्रित किया और उनका स्टेशन से राजऋषियों के समान बहुत धूम-धाम एवं बाजे-गाजे के साथ नगर में घुमाकर स्वागत इस प्रकार किया जिसकी स्मृति अभी भी हम संजोये हुए हैं ।

उन्हीं दिनों पिता जी ने श्रवणबेलगोला में पहली जैन धर्मशाला का निर्माण करवाया । पिछले महामस्तकाभिषेक में और इसके पूर्व भी जब हम या परिवार से कोई यात्रार्थ गया उसकी विशेष देख भाल वहाँ होती रही है और वहाँ के पुराने पुजारी कहते हैं कि निर्मल बाबू के द्वारा दिये गये मठ को चाँदी के अनेक पूजा-पात्र विशेष आयोजनों में निकाले जाते हैं ।

भट्टारक नेमी सागर जी के बाद के वृद्ध भट्टारक जी को जब मालूम हुआ कि पहाड़ की यात्रा के सरकार टैक्स के विरोध में मैं सपरिवार सत्याग्रह करके वहीं बैठा हूँ तो उन्होंने सरकारी टैक्स लेना उसी दिन से बन्द करा दिया। पिछले महामस्तकाभिषेक (1996) में नये भट्टारक जी ने मुझे हमारे पैतृक धर्मशाला में ही मेरे अनुरोध पर सपरिवार ठहरने का प्रबंध कराया और दादी जी चंदाबाई द्वारा पूर्व में प्रेषित अनुरोध को स्वीकार किया कि धर्मशाला में पत्थर की पटिया पर निर्माणकर्त्ता - निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार लिखवाना चाहिए । ❖

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद
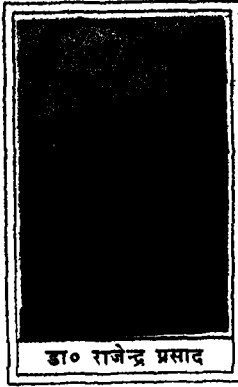
डा० राजेन्द्र प्रसाद

स्वराज्य के लिए, गाँधीजी के सत्याग्रह की लड़ाई में अग्रणी देश के नेता, स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद हमारे परिवार के अभिन्न मित्र और हितैषी थे ।

आरा आने पर बराबर वे देवाश्रम में टिकते थे और हम पटना सदाकत-आश्रम में उतरते और पारिवारिक व्यक्ति के रूप में उनसे मिलते थे । श्री जैन बाला विश्राम तथा पूज्य दादी माँश्री से मिलने वे आश्रम आते और उनके निकट सम्पर्क के कारण, सारा परिवार कांग्रेसी हो गया था । बाला विश्राम में चरखा और खद्दर का बराबर प्रयोग होता रहा । गाँधीजी, कस्तूरबा को लेकर, हमारे मेहमान बाला विश्राम में एक दिन रहे थे। इसी प्रकार जवाहर लालजी, बिनोवा भावे, सभी आश्रम में आए और ठहरे थे ।

कांग्रेस ने जब बिहार में अपनी पहली सरकार बनाई, उस समय चाचा श्री चक्रेश्वर कुमार जी, "विधान परिषद्" के सदस्य, कांग्रेसी सदस्य के रूप में बने । बाद में उन्हें राजेन्द्र बाबू ने जमींदार कन्स्टीच्यूएन्सी से पार्लियामेन्ट के चुनाव के लिए खड़ा किया था ।

मैं उनसे राष्ट्रपतित्व काल में, पहली बार दिल्ली राष्ट्रपति भवन में, जब उनसे मिला तो उन्होंने सारे परिवार का हाल एक-एक कर पूछा था।

दुबारा उनके निमंत्रण पर, मैं राष्ट्रपति भवन के मुगल-गार्डेन में आयोजित शानदार "होली महोत्सव" में उनसे मिला और शानदार उत्सव में भाग लिया ।

तीसरी बार, ऑल इण्डिया न्यूज पेपर एडिटर कांफ्रेंस में, अपने साप्ताहिक शाहाबाद के संपादक के रूप में मुगल-गार्डेन में भोजन-निमंत्रण दिया था । राष्ट्रपति होने के बाद पहली बार आरा आने पर वे बाला विश्राम में भी आए थे।

हमारे घर वाले, उनकी आत्मीयता को कभी भूल नहीं सकते । जब भी पू० राजेन्द्र बाबू को याद करता हूँ तो उनकी पावन स्मृतियाँ मुझे बहुत प्रेरणा देती हैं ।

❖

बाबू जगजीवन राम
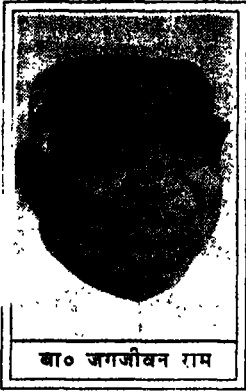
बा० जगजीवन राम

प्रथम हरिजन केन्द्रीय मंत्री एवं हरिजनों के बड़े नेता बाबू जगजीवन राम तो आरा के ही थे। उनकी पू० पिताजी और चाचाजी के अतिरिक्त मुझसे भी घनिष्ठता थी। बराबर मिलना होता था। अनेकों बार कोठी पर वे आए।

केन्द्रीय मंत्री मंडल के सदस्य के रूप में उनके चुने जाने की सूचना, उनको देवाश्रम कोठी पर, संध्या के समय मैंने ही दी थी। उन्होंने समझा कि हम मजाक कर रहे हैं। पर यहीं पर बैठकर जब उन्होंने रेडियो पर समाचार सुन लिया तो उनके मुख मंडल की आभा देखने लायक थी।

उन्होंने ही चाचाजी बा० चक्रेश्वर कुमारजी को प्रथम लाइफ इन्श्योरेंस कॉरपोरेशन के निदेशक पद पर मनोनित कराया था। जिस प्रकार हमारे परिवार ने उन्हें बराबर सहयोग दिया, उसी प्रकार परिवार को उनका बराबर सहयोग मिला।

पू० दादी चन्दा माँश्री तथा चाचीजी ने जब उन्हें पूरी वस्तुस्थिति समझाई तो वे हरिजन मन्दिर प्रवेश बिल से जैन मन्दिरों को अलग करने को राजी हो गये। तभी पू० दादी माँश्री चन्दा पू० चाचा चक्रेश्वर कुमार जी और मैं आचार्य श्री शान्ति सागरजी के समक्ष क्षेत्र पर गए और उन्होंने जो सत्याग्रह रूप अपने भोजन पर अति कष्टप्रद नियम लिये थे, उसे तोड़ दिया। भारतवर्ष के जैनियों में इस समाचार से खुशी की लहर फैल गई थी।

❖

डा० सच्चिदानन्द सिन्हा
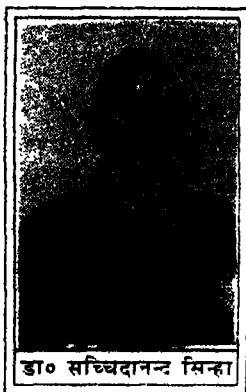
डा० सच्चिदानन्द सिन्हा

डा० सिन्हा भारत संविधान सभा के प्रथम अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध पटना स्थित सिन्हा लाइब्रेरी के संस्थापक, बिहार के इने-गिने सपूतों में थे जो कि अपनी विद्वता के लिए और देशभक्ति के लिए वन्दनीय माने जाते थे । पं० जवाहर लाल नेहरू जब भी पटना आते तो उन्हीं के मेहमान होते थे ।

पिताजी से उनके अत्यन्त प्रिय सम्बन्ध थे । एकबार मैं पिताजी के साथ उनके यहाँ गया। सुबह के समय टेबुल कुर्सी पर अंग्रेजी ड्रेस में बैठे हुए वे अखबार पढ़ रहे थे ।

" आओ निर्मल कुमार, तुने इन्डस्ट्री और व्यापार के क्षेत्र में बिहार को भारी प्रतिष्ठा दी है। तुम अपने देश प्रेम के लिए राजेन्द्र बाबू के उतने ही प्रिय हो, जितने की हमारे । "

उन्हें रोकते हुए और हंसते हुए पिताजी ने कहा, अपनी प्रशंसा सुनने मैं थोड़े ही आया हूँ, यह हमारा द्वितीय पुत्र सुबोध कुमार है। इसे आशीर्वाद दीजिए । कांग्रेस में सक्रिय हो रहा है, मैं इसे राजनीति से दूर रखना चाहता हूँ, इसलिए काम में लगा दिया है।

वे ठठा कर हंसे, बोले- " इसे अभी पढ़ने देते, कांग्रेस की हवा को क्या कोई रोक सकता है । फिर वे हमारी पीठ ठोक कर बोले-बेटे खुश रहो, निर्मल कुमार के बताए रास्ते पर चलते रहो, तुम्हें जीवन में सफलता मिलेगी । "

एक बार उनका पत्र पिताजी के पास आया कि तुम अपने नाम के बाद 'जैन' क्यों लिखते हो । अगर मैं भी अपने नाम के आगे 'हिन्दू' लिखूं तो कैसा लगेगा ?

पिताजी ने तत्काल उन्हें उत्तर लिखा था-यही केवल एक शब्द हमारे नाम के हैं जिसको मैं बहुत आदरणीय मानता हूँ ।

प्रत्युत्तर में उन्होंने अपनी खुशी जताते हुए सन्तोष प्रकट किया । ऐसे थे प्रिय संबंध बिहार के महान् सपूत से पू० पिताजी के ।

❖

पूज्य जिनेन्द्र वर्णी जी
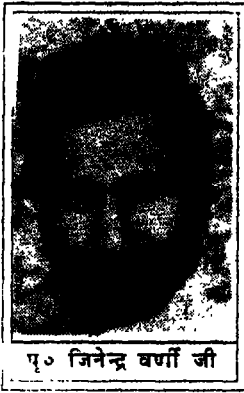
पू० जिनेन्द्र वर्णी जी

अमर तपस्वी कोशकार, पूज्य जिनेन्द्र वर्णी जी से भेंट करने, उनके आशीर्वाद प्राप्त करने मैं अपनी बनारस की यात्राओं में बराबर, गंगा किनारे जैन मन्दिर, भदैनी जाता था।

उन्हें सदा " जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश " के कार्य से लिपटे पाया या अध्ययनी उपदेश देते हुए देखा, सुना ।

कमजोर, दुबली-पतली छोटी काया थी, पर उसमें आभा पर्याप्त थी । दर्शकों को अभिभूत कर देती थी ।

उनके ही कहने पर मैनें उनकी शिष्या निर्मलाजी का आरा जैन बाला विश्राम में शिक्षिका के रूप में नियुक्त किया था ।

उनकी जीवनी पढ़ी थी और देहली में विनोवा भावे की इच्छानुसार उन्होंने जो "श्रमण-सूत्रम् " पुस्तक तैयार की थी, उनके अन्तिम संगीति में मैं दिल्ली जाकर सम्मिलित हुआ था। उनकी प्रतिष्ठा उस समय चरम सीमा पर थी । पर वे उस उत्सव में भी निस्पृह एक किनारे बैठे हुए थे ।

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा छपे जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश के द्वितीय संस्करण का पुन: संपादन करके, वे जब ईसरी जाकर पूज्य आचार्य विद्यासागर जी से समाधि-मरण " दिलाने की विनती कर रहे थे, उस समय मैं भी वहाँ उपस्थित था।

अन्ततोगत्वा, जितने यशोगान के बीच उन्होंने आचार्यश्री की देखरेख में समाधिमरण प्राप्त किया, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता ।

❖

बाबू राम जीवन सरावगी तथा
बाबू छोटे लाल सरावगी -कलकत्ता
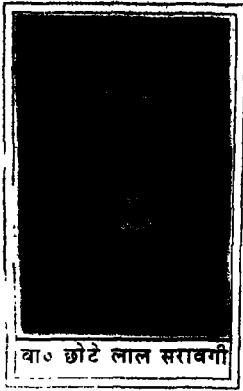
बा० छोटे लाल सरावगी

स्वयं बाबू छोटे लाल जी सरावगी ने मुझे बताया कि वे राजर्षि दादाश्री देवकुमार की कष्टदायक बीमारी (उन्हें कारबंकल हो गया था) में लगभग नित्य मिलने अपने पिताजी के साथ घोड़े-गाड़ी पर बैठकर आया करते थे। पीठ में उन्हें बड़ा घाव था, जिसके कारण लेटे रहना भी कष्ट दायक था, पर दादा साहब को कभी 'उफ' करते उन्होंने नहीं सुना।

पिता श्री बाबू निर्मल कुमार जी छोटे लाल जी को "छोटे" कहकर पुकारते थे और दोनों की प्रगाढ़-मैत्री कलकत्ते में ही हुई, जब दोनों बच्चे थे। फिर तो वही पारिवारिक प्रेम हमारे सारे परिवार और उनके परिवार वालों से ऐसा हुआ कि कुछ वर्ष पूर्व जब मैं कलकत्ते गया तो, उनके ही घर में उनके भाई श्री नन्द लालजी सरावगी के पुत्र शान्ति सरावगी के साथ ही सपरिवार टिका और जब अपने मित्र श्री अन्नत प्रसाद शर्मा जो कि उस समय बंगाल के गवर्नर थे, उनके निमंत्रण पर मैं, राजभवन, दोपहर के खाने पर गया तो, शान्ति की पत्नि आदि लोग भी मेरे साथ राजभवन में भोजन के लिए गए।

जब मैंने श्री सिद्धान्त भवन का "रजत जयन्ती" उत्सव किया, उस समय छोटे लाल जी जिन्हें हम "चाचाजी" कहते हैं, उन्हें स्वागताध्यक्ष निर्वाचित किया था और मैं था स्वागत मंत्री। भारत वर्ष के सुप्रसिद्ध जैन विद्वानों पं० कैलाश चन्द्र जी शास्त्री, श्री ए० एन० उपाध्याय, पं० फूल चन्द्रजी शास्त्री, श्री अगर चन्द्र नाहटा तथा पूज्या दादी चन्दाबाई जी को भवन की ओर से राज्यपाल श्री अनन्तशयनम् अयंगार ने "सिद्धान्ताचार्य" की पदवी से विभूषित किया था। छोटे लाल जी ने कलकत्ते में " वीर शासन जयन्ती उत्सव " सरसेठ हुकुम चन्द जी की अध्यक्षता में आयोजित किया था, जिसमें भारतवर्ष के सभी प्रमुख विद्वान् एवं धनी-मानी लोग एकत्रित हुए थे। पिताजी के साथ मैं भी गया था।

इस उत्सव की पावन स्मृति में छोटे लाला जी ने पूज्या दादी चन्दा माँश्री के कर कमलों से " भगवान महावीर प्रथम देशना स्मारक " का राजगीर के विपुलाचल पर्वत पर शिलान्यास कराया था, जिसे मैंने अपनी देखरेख में पूरा कराकर साहु अशोक कुमार जी द्वारा पंच कल्याणक प्रतिष्ठा उत्कृष्ट रूप में सम्पन्न कराया। वे हमारे परिवार के बहुत निकट मित्र और शुभेच्छु थे। पिताजी दक्षिण भारत की सपरिवार यात्रा में, उन्हें भी सपत्नीक साथ ले गए थे। उनके जैसा व्यक्ति अब असंभव है। सामाजिक धार्मिक एवं धर्म प्रचार के क्षेत्र में उनका नाम सदा याद किया जायेगा। ❖

पूज्य विनोबा भावे

पूज्य विनोबा भावे
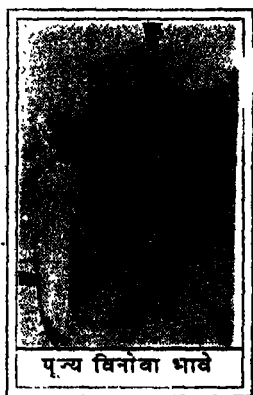
विनोबा जी को, परिवार की ओर से पूज्य चाचा चक्रेश्वर कुमार जी ने पारिवारिक जमीन के प्रमुख सासाराम अंचलीय जमीन्दारियों में स्थित 16000 एकड़ भूभाग को दान-पत्र लिख कर दे दिया था।

उस समय हमारे प्रमुख शिक्षक पंडित प्रद्युम्न मिश्र जिला भूदान समिति के सर्वोपरि कार्यकर्त्ता थे और उन्होंने स्वयं आरा नागरी प्रचारिणी के मंच से विनोबा जी के समक्ष और उपस्थित जन समुदाय के समक्ष उद्‌बोधित करते हुए यह घोषणा की थी और कहा था कि उस समय के विस्तृत शाहाबाद जिला के देवाश्रम परिवार सर्वोपरि भूदानी घोषित किया जाता है।

उस समय तक हमारी विनोवा जी से कोई मुलाकात नहीं थी। उसके बाद हमारे गुरू पद्युम्न मिश्र जी आरा सर्किट हाउस में उनके पास ले गए और हमारा परिचय देते हुए मुझे तथा हमारे सारे परिवार को उनका आशीर्वाद दिलवाया ।

उस समय विनोवा जी ने मुझसे एक वचन लिया था कि मैं पंडित प्रद्युम्न मिश्र पर एक विस्तृत लेख लिखूं और प्रकाशित कराऊँ तथा उसकी एक प्रति उनके पास भी भेजूं ताकि भूदान-आंदोलन के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्त्ताओं में उनका नाम अमर रहे।

इस छोटे से लेख में दिए हुए वचन को पूरा कर रहा हूँ। मैंने इसी पुस्तक में गुरूदेव पंडित प्रद्युम्न मिश्र की जीवनी की पुण्य स्मृतियाँ प्रकाशित की है ।

हमारी आखरी मुलाकात पूज्य विनोवा जी से तब हुई जब उन्हें निर्मंत्रित करके मैंने श्री जैन बाला विश्राम में उन्हें ठहराया था और उनका तथा उनके साथियों का आतिथ्य किया था ।

देश की ऐसी महान विभूति को अपनी स्मृति में संजोकर रखे हूँ ।

आचार्य जे० बी० कृपलानी

आचार्य जे० बी० कृपलानी
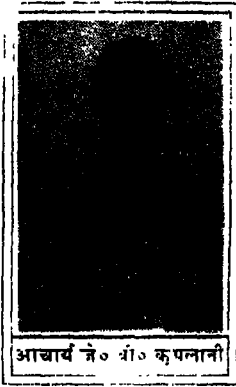
इनके बारे में पिताजी ने मुझे बताया था। जब पिताजी बी. एच. यू. (बानारस हिन्दू विश्वविद्यालय) में पढ़ने के लिए, एक बंगला किराए पर लेकर रहते थे। उस समय आचार्य कृपलानी को उनके संरक्षक-शिक्षक के रूप में पिताजी के सरकारी संरक्षक (दादा बा० देव कुमार जी की अकाल मृत्यु के कारण सरकार ने पिताजी का उम्र कम होने के कारण Court of Wards में लगा दिया था) श्री इमदाद इमान साहेब ने बनारस जाकर, नियुक्त किया था ।

उस समय एक किस्सा पिताजी ने बताया था की कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक बी.एच.यू. (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) में आयोजित की गयी थी, जिसमें गाँधी जी, मोती लाल नेहरू, जवाहर लालजी आदि सभी भाग लेने वाले थे। हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए मालवीय जी, भारत की विदेशी सरकार से भी धन लेते थे, इसलिए उन्हें कलक्टर ने विश्वविद्यालय के परिसर में सदस्यों को ठहरने से मना कर दिया । बड़ी मुश्किल हो गई । यूनिवर्सिटी के बाहर जहाँ-तहाँ नेताओं को ठहराना , वो प्रबंध कृपलानी जी को करना था । उस समय, उन्होंने पिताजी से कहकर, पं० मोतीलाल नेहरू और जवाहर लाल नेहरू को उनके घर में ठहराने का प्रबंध करा दिया था ।

पिताजी ने बताया कि मोतीलाल जी के लिए इलाहाबाद से उनके घर से पूरा सामान ट्रक पर लाया गया था, पर जवाहर लाल जी जमीन पर कम्बल बिछा कर सोने गए तो मोती लाल जी ने, उनसे इसका कारण पूछा, तो जवाहर लाल ने कहा- " पिताजी मैं जेल जाने की तैयारी में, जमीन पर कम्बल बिछा कर सोने की आदत डाल रहा हूँ । "

बहुत बाद, आर्चाय कृपलानी, " श्री जैन बाला विश्राम " में भी आये थे, जहाँ पिताजी ने उनका आत्मीयता से स्वागत किया था ।

❖

सर्वश्री डालमिया एवं साहु परिवार
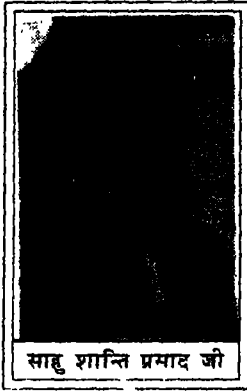
साहु शान्ति प्रसाद जी

सन् 1930 ई० के आसपास बैंक ऑफ बिहार के संस्थापक श्री आर. सी. पंडित, राम कृष्णजी को लेकर आथर ग्राम पहुंचे । पिताजी, चाचाजी ने बिहार राज्य का प्रथम 1000 एकड़ बंजर भूमि के रिहैबिलिटेशन स्कीम, साथ-साथ, उनकी ट्रैक्टरों एवं आधुनिक डीप टयूबवेल एवं मिनी सुगर यूनिट की स्कीम में वहाँ व्यस्त थे । विहार बैंक के मालिक पंडित जी को सब मालूम था । तभी तो वे डालमिया जी की बड़ी चीनी मिल आरा-पटना के बीच बिहटा में खोलने की स्कीम में पू० पिताजी की गारन्टी लेकर तथा एन. के. जैन एवं कंपनी के प्रबंध न में खोलने के लिए डालमिया जी एवं पिताजी को संयुक्त रूप से फाइनेन्स करने का निर्णय लिया था ।

तभी से राम कृष्णजी और हमारे परिवार का घनिष्ठ संबंध कायम हुआ जो कि उनके छोटे भाई जयदयालजी , उनके दामाद साहु शान्ति प्रसाद जी के साथ प्रगाढ़ हो गया । इन सभी को एक साथ बिहटा में कई वर्षों के प्रवास तथा बाद में रोहतास इंडस्ट्रीज, एम. के. जी. सुगर मिल की स्थापना के साथ अब यद्यपि लम्बी छलांग लगाकर डालमिया जी दिल्ली जा बसे और बाद में उनका जयदयालजी (छोटे भाई) तथा साहु शान्ति प्रसाद जी (दामाद) से व्यापारिक संबंध विच्छेद हो गया । मैं जब दिल्ली जाता हूँ, जय दयाल जी तथा उनके सुपुत्र श्री विष्णुहरि डालमिया से मित्रवत् भेंट मुलाकात होती रहती है। विष्णु हरिजी इस समय विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष हैं और प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में सक्रिय हैं ।

पिछली मुलाकात में मैंने जयदयालजी और विष्णु जी को सचित्र जैन रामायण की प्रतियाँ भेंट में दी थी ।

डालमिया जी के भांजे श्री वासुदेव अग्रवाल साथ-साथ बिहटा में पढ़ते खेलते थे ।

साहु परिवार से मित्रता पिताजी को साहु शांति प्रसाद जी के समय से बनी

हुई है। पिताजी की ही प्रेरणा पर राम कृष्णजी डालमिया ने अपनी पुत्री रमा का विवाह, अखबारों में निकाले हुए विज्ञापनों के उत्तर में आए हुए आवेदन में चुनकर किया था।

साहु शांति प्रसाद जी, साहु श्रेयांस प्रसाद जी, साहु अशोक कुमार, दिल्ली (सुपुत्र साहु शांति प्रसाद) तथा साहु शरद कुमार, बम्बई (सुपुत्र साहु श्रेयांस प्रसाद) से हमारे तथा हमारे सुपुत्र अजय कुमार के प्रिय संबंध चले आ रहे हैं।

अब कोई व्यापारिक संबंध नहीं है, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में बहुत निकट प्रिय सम्पर्क चल रहे हैं ।

इन लोगों के साथ की हमलोगों की कहानी, बहुत लम्बी है । अलग लिखी जा सकती है । पर राम कृष्णजी का लघु रूप से आरंभ कर देश का वृहद् इंडस्ट्रीयल एम्पायर करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हुई है । उसी की शाखाएँ प्रति-शाखाओं के रूप में, जयदयालजी का उड़ीसा में वृहद् इन्डस्ट्री कायम करना, शान्ति प्रसाद जी का बैनेट कॉलमन, टाइम्स ऑफ इंडिया तथा रमाजी के संयोग से भारतीय ज्ञानपीठ, पुरस्कार, श्रेयांस प्रसाद जी का इन्डस्ट्रीयल ग्रुप तथा इन दोनों के पुरूषार्थी पुत्रों साहु अशोक कुमार और साहु शरद कुमार का अपने अपने ग्रुप का संवर्धन के साथ जैन समाज और धार्मिक संस्थाओं के प्रति महत्वपूर्ण योगदान सदा स्मरणीय रहेगा ।

चौधरी शराफत हुसेन तथा वजाहत हुसेन

बरतानवी (ब्रिटीश) सरकार का जमाना था । भारत में आजादी की लड़ाई चल रही थी । उस समय आरा के सुप्रसिद्ध हुसेन परिवार के चौधरी शराफत हुसेन आजादी की लड़ाई में गांधीजी को समर्थन देते थे ।

एक बार अब्दुल गफार खाँ साहब आरा आने को थे, उन्हें स्टेशन पर स्वागत करने को भारी भीड़ थी, इनमें आदरणीय शराफत हुसेन जी और मैं अपनी-अपनी मोटर लेकर पहुंचे हुए थे ।

परन्तु, जब हमारे निवेदन पर खाँ साहब ने हुसेन साहब से इजाजत मांगी, उन्होंने सहर्ष खाँ साहब को हमारी मोटर पर ले जाकर बिठाया था और फिर दिनभर वे जहाँ-तहाँ गए । अन्त में, उन्हें कोठी पर लाकर उनका सत्कार किया ।

शराफत हुसेन के छोटे भाई श्री वजाहत हुसेन आई. सी. एस. हमारे परिवार के घनिष्ठ मित्रों में एक थे। उनसे मेरी मुलाकात पहली बार पिताजी के साथ उनके घर हुई जब वे बनारस के कमिश्नर थे और जब रिर्जव बैंक के गर्वनर के रूप में उनकी नियुक्ति की सूचना मिली, पिताजी उन्हें मुबारकवाद देने उनके घर पर गए थे ।

उसके बाद उनसे दूसरी मुलाकात कुछ समय बाद ही बनारस में हुई जब " स्याद्वाद संस्कृत विद्यालय" कि हमारे परिवार की बड़ी धर्मशाला का अगला बड़ा हॉल नीचे नींव तक गंगा में समा जाने से विद्यालय को भारी परेशानी हो रही थी ।

हमारे निवेदन पर उन्होंने तत्काल आदेश देकर गंगा-घाट में समा गए हिस्से से बचे हुए बाकी विशाल बिल्डिंग और मंदिरजी की सुरक्षा के हेतु सरकारी खर्च पर नया घाट भारी खर्च कराकर, पूरा करा दिया था। जब मैं उन्हें धन्यवाद देने गया तो उनकी बेगम ने मुझे एक शीशी तेल दिया कि इसे ले जाकर आरा में उनकी सास को दे दूँ । हंसते हुए वजाहत हुसेन (आई. सी. एस.)जी ने मुझसे कहा- बेटे मैंने अपना काम समझकर ही इसे पूरा कराया था । हमारा इनाम यही है कि रोगन को मेरी भाभी को पहुंचा देना ।

❖

दानवीर बाबू बच्चू लाल जी
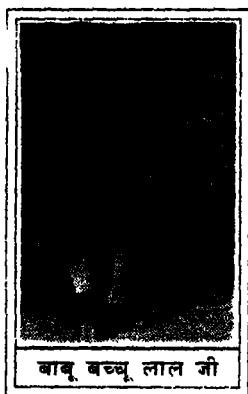
बाबू बच्चू लाल जी

बाबू बच्चू लाल जी, पिताजी के श्रद्धेय मामा जी थे। आरा के कलक्टर ने दादा देव कुमार जी के देहावसान के बाद उनके स्टेट को कोर्ट ऑफ वार्डस'' में लेकर सरकारी मैनेजर के रूप में उन्हें तथा नेऊरा के सुप्रसिद्ध इमदाद इमाम साहब के साथ सम्मिलित रूप में नियुक्त किया था ।

पिताजी जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में आई. ए. की शिक्षा ले रहे थे, 18 वर्ष के हो जाने से कलक्टर ने उन्हें बनारस से बुलवाकर स्टेट का चार्ज दे दिया फिर हमारे बच्चू दादा जी हमारे परिवार के श्रद्धास्पद मुखिया, अपने जीवन के अन्त तक बने रहे । गोरे, लम्बे, शानदार वे आरा जैन समाज के अग्रणी व्यक्ति तो थे ही, उन्होंने अपनी दान की प्रवृति से इन्तहा कीर्ति का अर्जन किया ।

श्री जैन सिद्धान्त भवन के निर्माण के समय अपने घर के सामने सड़क की जमीन उन्होंने भवन को दे दी ।

मृत्यु के पहले उन्होंने अपनी सारी जायदाद को दान पत्र द्वारा इन जायदाद की सारी रकम श्री जैन सिद्धान्त भवन·और श्री जैन बाला विश्राम को दे दिया ।

पू० पिताजी और अपनी जायदाद का ट्रस्टी वे और पू० चाचाजी को बना गए । उनकी दानवीरता के क्या कहने । उनकी कोई औलाद नहीं थी । चाहते तो किसी को गोद ले सकते थे । पर उनके अन्दर का बड़प्पन और दानवीरता का इतिहास सदा स्मरणीय रहना था, सो रहेगा ।

हम सभी परिवार वालों के लिए तो वे सदा परम श्रद्धेय दादा जी थे और उस पद का निर्वाह बिना किसी चूक के सभी सामाजिक कार्यों में होता था । उन्हें सदा हम शादी आदि उत्सवों पर मध्य में बिठाते थे और वे भी नित्य नियम से एक बार अवश्य देवाश्रम कोठी पर आते थे। उनका अपार प्यार और आशीर्वाद हम सभी परिवार वालों को मिला । उनके द्वारा दादा देव कुमार जी की कलकत्ते की बीमारी की पूरी देखभाल तथा उनके बाद कोठी की बड़ी जमींदारी, देवाश्रम कोठी का निर्माण भी जैन बाला विश्राम की उन्नति तथा अपना स्वयं का रहने का बड़ा भवन का भी दान पत्र, कन्या पाठशाला के लिए दे देना, ऐसी दानवीरता

के उदाहरण जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकेगा ।

जब पिताजी 9 वर्ष की आयु में पू० दादाजी की मृत्यु के उपरान्त में बेसहारा हो गए तो उन्होंने दोनों भाइयों को अपने कलेजे से लगाकर उनको पढ़ाया लिखाया, दोनों भाईयों की शादियाँ की और बिहार का योग्य नागरिक और इंडस्ट्रीयलिस्ट बनाया ।

दोनों भाई बाबू निर्मल कुमार और चक्रेश्वर कुमार ने बड़े-बड़े चीनी और अल्युमीनियम के कारखाने लगवाए । दोनों, बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष हुए। देश सेवा के क्षेत्र में कांग्रेस को सदा आर्थिक सहयोग दिया ।

उनके पावन स्मृति के प्रति हम सदा नतमस्तक रहेंगे ।

❖

इमदाद इमाम साहब
अली इमाम एवं हसन इमाम साहब

जब पू० दादाजी बाबू देव कुमार जी का कलकत्ते में असमय देहावसान हो गया, उस समय पिताजी 9 वर्ष के थे ।

आरा के अंग्रेज कलक्टर ने शाहाबाद जिले के एक बड़े जमींदारी स्टेट को कानून के अनुसार " कोर्ट ऑफ वार्ड " में सरकारी देखभाल के लिए तबतक के लिए ले लिया जबतक पिताजी 18 वर्ष के नहीं हो गए ।

कलक्टर ने पिताजी के मामा जी, बाबू बच्चूलाल जैन, जो कि सरकारी मुलाजिम थे, उन्हें तथा नेउरा के इमदाद साहब को स्टेट के संयुक्त प्रबंधक के पद पर नियुक्त कर दिया ।

इमदाद साहब बिहार के चुनिन्दा नामी पढ़े-लिखे मशहूर मुसलमान थे, जिनकी नेकनियती पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता था । तथा बाबू बच्चू लाल जी का क्या कहना । उनके लिए तो पिता जी और चाची जी अपने बेटे के समान थे और इन दोनों की भलाई के लिए उन पर सभी को विश्वास था ।

इमदाद इमाम साहब के अपने दो पुत्रों -अली इमाम और हसन इमाम को विलायत बैरिस्ट्री पढ़ने के लिए, अपनी जायदाद पर कर्ज लेकर भेजा था । इन्होंने पिताजी को बनारस ले जाकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आइ. ए. और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पास रहने का सुप्रबंध किया ही, साथ में विश्वविद्यालय के नामी प्रोफेसर आचार्य जे. बी. कृपलानी को उनका गार्जियन शिक्षक नियुक्त किया । असर यह हुआ कि पिताजी कांग्रेस विचार धारा के होते गए ।

मुझे बच्चू लाल दादाजी तथा नेम सुन्दरी बुआ दादी ने यह तथा अन्य कथाएं इमदाद साहब के बारे में बताई ।

यह पूछने पर कि अपने दोनों बच्चों को विलायत बैरिस्ट्री पढ़ने के लिए अपनी जायदाद गिरवी कर दी, इमदाद साहब ने कहा मेरी असली जायदाद तो हमारे दोनों बच्चे हैं और उनकी बेहतरी के लिए यही करना जायज था । सभी ने उनकी बेबाक कही इस बात की प्रशंसा की ।

बड़े बेटे, अली इमाम बैरिस्टर बनकर भारत लौटने पर इतना आगे बढ़े की वाइसराय की एक्जिक्यूटिव कौंसिल के प्रथम भारतीय सदस्य बनाए गए ।

छोटे, हसन इमाम साहब ने बिहार से उच्चतम बैरिस्टरों में स्थान बनाकर

खूब यश और धन कमाया तहजीब तो इम्तहा थी । जब दिल्ली से स्पेशल ट्रेन से अली इमाम साहब नेउरा अपने वालिद से मिलने आए, तो नेउरा में पिताजी, बच्चू बाबू के अतिरिक्त उनके मित्र इक्ट्ठे हुए थे। ट्रेन नेउरा पहुँचने पर इमाम साहब का स्वागत करने को स्टेशन पर जाने के लिए सभी उठने लगे तो इमदाद इमाम साहब ने कहा- मेरे भाई, आप सभी हमारे दोस्त हैं। हमारा बच्चा आपका भी बच्चा है, आ रहा है तो छोटे इमाम के साथ वह स्टेशन से यहाँ आकर आपको सलाम करेगा और ऐसा ही हुआ । अली इमाम साहब घर पहुंचकर सबको अपना सलाम करते हुए अपने वालिद के चरणों को आकर उन्होंने चूमा ।

मैंने हसन इमाम साहब को उस समय देखा जब वे कोठी पर आये थे और बाबूजी के साथ डालमिया नगर की नींव के उत्सव में साथ-साथ गए । क्या खूबसूरती थी उनके चहरे पर ।

डालमियानगर में फैक्ट्री की नींव देने का प्रोग्राम था, पर किसी कारण मुख्य अतिथि, श्री मदन मोहनमालवीयजी नहीं आ सके तो सेठ राम कृष्ण डालमिया और हसन इमाम साहब के बार-बार कहने पर नींव डालने का कार्य पिताजी ने पूरा किया।

हसन इमाम साहब तो पिताजी के सभी पटना के मुकदमों को देखते थे । एक बार वर्षा में, एक देहाती किसान जूता पहनकर मार्बल पत्थर को गन्दा करने के कारण नौकरों की गालियां सुन रहा था । कोहराम सुनकर हसन इमाम साहब और पिताजी बाहर निकले तो, हसन इमाम साहब ने उस देहाती मुवक्किल से माफी मांगी तथा कहा-इन्हीं जूतों की बदौलत हमारा यह आलीशान महल और मार्बल का फर्श है। वे उसे बाहर से लाकर जबरन उनके गीले कीचड़ भरे जूतों में कालीन पर से जाकर अन्दर ड्राइंग रूप में सोफे पर बिठाया ।

इमदाद साहब के दोनों पुत्र जिनको पढ़ने के लिए उन्होंने जायदाद पर कर्ज लेकर हमलोंगों के स्टेट प्रबंधक के पद को निभाया, उन्हीं के दोनों काबिल बैरिस्टर पुत्रों ने अपने घर का नाम इन्तमहाँ रोशन किया और अनेक जायदाद पटना में भी खरीदी ।

❖

बाबू करोड़ी चन्द जी जैन

बा० करोड़ी चन्द जी

बाबू करोड़ी चन्दजी दादा साहब बाबू देव कुमार जी के साले थे। उनकी बहन श्रीमती अनूपमाला देवी हमारी पूज्या बड़ी दादीजी बहुत धार्मिक प्रवृति की थीं और देवाश्रम परिवार की मुखिया के रूप में अत्यन्त प्रिय और सम्माननीय थीं। उनके अनुशासन की याद अभी मुझे है। पू० दादी चन्दाबाई यद्यपि उनसे छोटी थीं पर एक दूसरे का अत्यन्त आदर करती थीं। वे अत्यन्त रूपवती थीं और दादी चन्दाबाई जी ने भी एक स्थान पर लिखा है कि दादा देवकुमार जी उनसे अत्यधिक प्रेम करते थे।

ये सारे गुण पू० दादी जी ने अपने परिवार से प्राप्त किए।

बाबू करोड़ी चन्द जी ने श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना के उपरान्त से इस संस्था की उन्नति के लिए केवल रूचि ही नहीं बल्कि संस्था के मंत्री के पद पर आसीन होकर दक्षिण भारत की यात्रा कर, बाबू देवकुमार जी द्वारा हस्तलिखित ग्रंथों के भण्डार के संवर्धन के कार्य में अति विशिष्ट योगदान दिया और संवर्धन किया। श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के प्रथम अंक का प्रकाशन इन्हीं के मंत्रित्व काल में हुआ।

तबसे अबतक उनका परिवार और देवाश्रम परिवार प्रेम सूत्र में बंधा हुआ है। उसी परिवार के नेत्रहीन शिक्षित नवयुवक श्री पुनीतचंद जैन के सहयोग से मैंने महिला विद्यापीठ के अन्तर्गत श्री आदिनाथ नेत्रहीन विद्यालय की स्थापना की। इस संस्था के वे प्रधानाध्यापक हैं और अब यह संस्था बिहार प्रदेश की अनुपम संस्था के रूप में प्रख्यात हो चुकी है। भारत सरकार के कल्याण विभाग से अनुदान बराबर अब मिलने लगा है।

नगर के धार्मिक आध्यात्मिक एवं आगत साधु-संतों की परिचर्या में इनके बड़े भाई श्री प्रेमचंदजी, यद्यपि नेत्रविहीन हैं, फिर भी सर्वाधिक सक्रिय हैं कि इन्होंने नेत्रविहीन विद्यालय को अपने परिवार के श्री आदिनाथ धनुपुरा द्वारा स्थान दिया था।

इनके परिवार में चमत्कारी घटना हुई। परम श्रद्धेय-मुनिराज विमल सागरजी के आरा आगम पर जब मुनिश्री को पता चला कि श्री प्रेमचंद्र जी के परिवार में अनेक व्यक्ति नेत्रहीन या क्षीण ज्योति वाले हैं, तो उन्होंने तत्काल इनके श्री आदिनाथ मन्दिर धनुपुरा के मूलनायक प्रतिमा को निरीक्षण कर उन प्रतिमाजी के नेत्र दोष को शुद्ध कराकर रातों-रात पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करा दी। तदुपरान्त जो भी सन्तान अब इस परिवार में हो रही है, उन्हें नेत्र दोष होना बन्द हो गया। ❖

श्री जैनेन्द्र किशोर जैन / श्री देवेन्द्र किशोर जैन
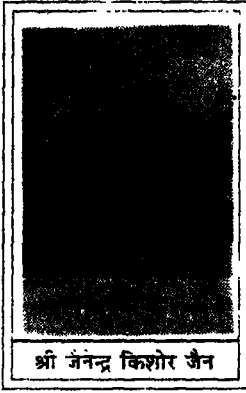
श्री जैनेन्द्र किशोर जैन

श्री जैनेन्द्र किशोर जैन दादा साहब बाबू देवकुमार जी के समय आरा के सक्रीय सामाजिक कार्यकर्त्ता होने के अतिरिक्त आरा रंगमंच नाटक लेखक और निर्देशक के रूप में प्रसिद्ध थे ।

उन्होंने अनेक नाटक लिखे जिसे उनके पुत्र श्री देवेन्द्र किशोर ने अपने सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित कराकर वितरित किया । श्री जैन सिद्धान्त भवन में इसकी प्रति सुरक्षित है।

श्री जैनेन्द्र किशोर जी ने बाबू देवकुमार जी को आदर से, श्री जैन गजट (हिन्दी) के सम्पादन एवं प्रकाशन में बहुत सहयोग तो दिया ही, श्री जैन सिद्धान्त भवन के कार्यकलापों में बहुत सक्रीय रहे।

उनके पुत्र श्री देवेन्द्र किशोर जैन, पिताजी बाबू निर्मल कुमारजी के निकट मित्रों में थे और नित्य संध्या को कोठी देवाश्रम अवश्य आते थे । पू० पिताजी की मृत्यु के उपरांत भी वे उसी प्रकार नित्य हमारे पास अवश्य आते और कुशल पूछ लिया करते थे । वे मृदूभाषी, नाटेकद के, अत्यन्त प्रिय पर कम बोलते थे। उपर्युक्त दोनों पिता-पुत्र का समाज में बहुत सम्मान था ।

श्री देवेन्द्र किशोर जी के ज्येष्ठ तीन पुत्रों क्रमशः श्री नवल किशोर जैन, श्री कमल किशोर जैन और श्री युगल किशोर जैन हमारे मित्र रहे हैं।

युगल जी की ज्येष्ठ पुत्री से हमारे ज्येष्ठ पुत्र का विवाह हुआ है। नवल जी की पुत्री से हमारे भाई अतुलजी के पुत्र ईशान कुमार का विवाह सम्पन्न हुआ है ।

इस प्रकार हमलोगों के बीच पारिवारिक मधुर सम्बन्ध भी स्थापित हुए हैं ।

युगल जी सदा अभी भी, हमारे आरा के सामाजिक कार्यों में बराबर सहयोग देते हैं ।

श्री देवेन्द्र किशोर जी ने हमारे पिताजी के समक्ष एक पोटली अपने सभी जेवरात लाकर दुर्दिनों में दिए, जब कलकत्ते के शेयर बाजार में पिताजी को बहुत घाटा हुआ था। उनका यह एक मात्र अवदान जिसे हम कभी नहीं भूल सकते । यद्यपि पिताजी ने उनके परिवार के गहनों को नहीं लिया, पर देवेन्द्र जी के चरित्र को कभी भुलाया नहीं जा सकता । ❖

श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा

श्री ईश्वरी प्र० वर्मा
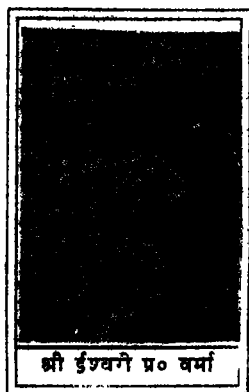
वर्मा जी को भी पू० पिताजी कलकत्ता आर्ट कॉलेज से अवकाश प्राप्त होते ही भैया प्रबोध कुमार जी को कुशल चित्रकार बनाने के धुन में नियुक्त कर आरा ले आए थे । इन्हें बराबर अपने साथ रखा और पू० भैया देखते-देखते कुशल चित्रकार बन गए । मूक-वधिर होने की उनकी हीन भावना बिल्कुल समाप्त हो गई। पिताजी यही चाहते थे।

साथ-साथ वर्मा जी, जो कि पटना-कलम के जाने माने चित्रकार थे, उनका प्रभाव मुझ पर भी पड़ा और गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर के उपरान्त उनसे मैंने चित्रकला की प्रारंभिक शिक्षा ली। बाद में उनके चित्रकार पुत्र महावीर प्रसाद जी को बाला-विश्राम में चित्रकला शिक्षक के रूप में मैंने नियुक्त किया तथा उनके निर्देशन में जैन चित्रकला पर प्रयोग कर अनेक चित्र मैंने बनाए ये सभी चित्र राजगृह के आचार्य महावीर कीर्ति सरस्वती भवन के कला दीर्घा में टंगे हुए हैं। पूज्य भैया के बनाए हुए भी अनेक चित्र वहीं सुशोभित है।

मैंने अपने बनाये प्रयोगात्मक जैन कला चित्रों की फोटों कापियाँ कराकर उनके एलबम बनवाकर 3 प्रतियाँ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थागार में रख दी है।

श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा अब नहीं हैं, उन्हें हम दादाजी कहते थे। उनके बनाए हुए कुछ अनुपम चित्र पटना म्युजियम के कला विभाग में मैंने देखे हैं । उनमें एक अनुपम चित्र हाथी दाँत पर बना हुआ हमारी श्रद्धेया माता जी का भी है, जिसे पिताजी ने बनवाया था । पर वह चित्र वहाँ (म्युजियम) कैसे पहुंच गया, मुझे मालूम नहीं ।

❖

पंडित प्रद्युम्न मिश्र

जन्मजात मूक-वधिर भैया प्रबोध कुमार को शिक्षित करने हेतु बलिया निवासी कलकत्ता मूक वधिर विद्यालय के हिन्दी अध्यापक को पू० पिताजी बाबू निर्मल कुमार जी कलकत्ता से भैया के गार्जियन शिक्षक के रूप में नियुक्त कर आरा ले आए और मिश्र जी ने भईया के साथ-साथ हम सभी भाईयों के गार्जियन शिक्षक के कार्य को संभाला । भैया को 2-4 वर्षों में ही प्रारंभिक रूप में कुछ-कुछ बोलना, लिखना, पढ़ना सिखाया। हमारी परदादी जी (बाबू देव कुमार की माँ) ने शहर भर में मिठाइयाँ बांटी, जब भैया ने उन्हें पहली बार "दादी" कहकर संबोधित किया ।

श्री प्रद्युम्नजी बड़े मास्टर साहब कहे जाने लगे और उन्होंने हम सभी को कांग्रेसी बना दिया । रूई धुनना, सूत कातना और खद्दर पहनना भी शुरू करा दिया । ये गाँधी जी के सभी आन्दोलनों में जेल गए और जेल से बाहर आते ही फिर देवाश्रम, हमारे घर आकर हमारे सभी भाईयों को शिक्षा देने का कार्य शुरू कर देते थे ।

उन्होंने बाद में विनोबा भावे जी के भूदान आन्दोलन का आरा जिले का भार संभाल लिया। मुझे विनोवाजी से मिलवाया । आ०विनोवाजी ने मुझे प्रेरित किया कि मैं प्रद्युम्नजी का विविध आयामी जीवन चरित्र लिखूं आचार्य विनोवा भावे बाला विश्राम में दो दिनों तक रूके और पू० दादी जी के प्रशंसक बन गए ।

प्रद्युम्नजी के कहने पर ही पू० चाचा चक्रेश्वर कुमार जी ने भभुआ स्थित 16000 बीघे से भी अधिक भूमि का दान पत्र लिख कर दे दिया और शाहाबाद का प्रमुख भूदानी बना दिया ।

ऐसे थे पं० प्रद्युम्न मिश्र, हमारे शिक्षक, जिन्हें हम कभी भूल नहीं सकते ।

हमें प्रोत्साहित कर आरा से कांग्रेसी डेलीगेट चुने जाने पर त्रिपुरा कांग्रेस में ले गए। जहां हमारी झोपड़ी में भोजन करने के लिए डा० राजेन्द्र प्रसाद जी, पं० जवाहर लाल नेहरू और श्री जय प्रकाश नारायण को ले आए।

मुझे नगर कांग्रेस का अध्यक्ष तथा राज्य कांग्रेस का सदस्य मनोनीत होने पर बहुत सम्मानित किया । आरा जिला स्कूल में जिला विद्यार्थी सम्मेलन करने एवं सरकारी जिला स्कूल पर कांग्रेसी झण्डा फहराने में मुझे पूरा समर्थन दिया।

पू० चाचा जी को कांग्रेस का टिकट लेकर प्रथम कांग्रेसी शासन के समय बिहार काउंसिल का सदस्य बनाने में पूरी मदद की । बाद में उन्हें केन्द्रीय

एसेम्बली का टिकट मिलने पर उड़ीसा से वोट इक्कट्ठा करने में पूरी दौड़ धूप की । तदुपरान्त उनके छोटे भाई ने उनसे प्रेरणा लेकर इलाहाबाद में प्रथम मूक वधिर स्कूल की स्थापना की । बाद में मैंने भी उनके आदर्श से प्रभावित होकर आरा में जिले के प्रथम मूक-वधिर विद्यालय की स्थापना की है।

पं० प्रद्युम्न ने विनोवा जी के भूदान यज्ञ से प्रभावित होकर डेहरी ऑन सोन में भूदान आश्रम खोला और उसके लिए उन्होंने जीवन दान कर दिया। मैं वहां उनके आश्रम में हमेशा अपने डालमियानगर की यात्रा के दौरान उनसे भेंट करता रहा ।

उन्होंने अपना सारा जीवन देश सेवा में समर्पित कर दिया था । उनके परिवार के सभी पुत्र बन्धु वगैरह देश सेवक थे ।

❖

पू० भट्टारक चारूकीर्ति जी महाराज
मूडबिद्री

पू० भट्टारक जी महाराज

सन् 1996 में जब मैं एस्कोर्टस् अस्पताल में बाई पास हार्ट सर्जरी के उपरांत स्वास्थ लाभ कर रहा था, उस समय एक नर्स ने आकर सूचित किया की मूडबिद्री के पूज्य भट्टारकजी, आपको आशीर्वाद देने आए हैं और उसके तत्काल बाद ही सचमुच अपने सुपरिचित गेरूआ कपड़ों में भव्य मूर्ति भट्टारक जी सिर्फ कमण्डल लिए आ ही गए।

मैंने आदर पूर्वक उन्हें प्रणाम किया । तब तक नर्स कुर्सी लाई और शुद्ध कन्नड भाषा में उनसे विनय पूर्वक कुछ पूछा और नमस्कार कहा।

मैं भव्यमूर्ति परम विद्वान् और पूज्य भट्टारकजी को देखकर आश्चर्य चकित हो गया । मैंने सोचा भी नहीं था कि इतनी दूर से वे आयेंगे।

उन्होंने खड़े होकर संस्कृत में स्तुति पढ़ते हुए मुझे आशीर्वाद दिया । एक लिखा मंत्र दिया । नित्य माला फेरने को कहा ।

फिर कुर्सी पर बैठते हुए बोले-बिल्कुल सोचना मत। बिल्कुल स्वास्थ्य लाभ होना ही है। भगवान का आशीर्वाद देता हूँ । नित्य माला फेरना तुम्हारी पत्नी से नीचे कह आया हूँ । 3/4 हिस्सा वह करेगी और 1/4 तुम । मैं जानता हूँ पूरा तुम नहीं फेर सकोगे।

जितनी देर रहे, बराबर हंसते-बोलते रहे । उतने स्वस्थ और मधुर जैसा कि आरा और पावापुरी में हमारे साथ थे ।

आरा में शान्ति प्रभु के विशाल प्राँगण में उन्होंने अपने भाषणों से कमाल कर दिया था । जैन अजैन छात्रा स्कूल तथा नगर के सभी विद्वानों तक ने स्वीकार किया कि इनकी वाणी में स्वामी विवेकानन्द की विद्वता और भाषण कला का कमाल है ।

कुछ ही दिन बाद सुना कि आचानक रात में उनकी मृत्यु हो गई ।

केन्द्रीय मंत्री ए. पी. शर्मा

अनन्त प्रसाद शर्मा के केन्द्रीय मंत्री कार्यालय में पहुँचते ही ठहरना नहीं पड़ा । हम दोनों साथी एक दूसरे के गले में लिपटे थे ।

हमने बातों में कुछ ऐसा निर्णय लिया जो आशातीत थी पर प्रारब्ध को कौन जानता है। सम्मेद शिखर पर ''रोपवे'' लगवा दो - मेरे दोस्त।

उसी समय शर्मा ने फोन पर ही तत्काल अपने डिपार्टमेन्ट के प्रमुख अधि कारी को बुलाया और कहा-पहले हमारे परम मित्र सुबोध जी को पहचानों फिर बताओ कि बिहार के सर्वमान्य जैनियों के तीर्थ क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर पर यात्रियों को नीचे से उपर पारसनाथ भगवान के दर्शनो को ले जाने और वापस लाने के लिए रोपवे लगाना है, भारत सरकार को इसकी प्रक्रिया कैसे कब शीघ्रातिशीघ्र आरंभ हो सकेगी?

इसी आफिस में मीटिंग हुई, निर्णय हुआ और कुछ माह में ही सारी स्कीम बन गई और एक दिन आरा में श्री ए० पी० शर्मा जी ने मुझे सभी नक्शे, पूरी स्कीम दिखाई और कहा कि टेन्डर निकालकर काम लगवाना बस बाकी है। भारत सरकार सारा व्यय करेगी ।

परन्तु बात, सारी स्कीम, सारी मेहनत व्यर्थ हो गई जब, भरतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटि के तत्कालीन अध्यक्ष साहू जी ने यह सूचित करते हुए समाप्त कर दिया कि श्वेतांबर के नेता श्री कस्तुर भाई लाल मई स्कीम को अनुचित तथा अस्वीकार कर दिया है- क्योंकि जैन समाज तीर्थराज की पैदल यात्रा करने में विश्वास और आस्था रखता है । यानि डोली पर कन्धों पर जा सकता है, रोपवे पर नहीं मित्र श्री ए० पी० शर्मा की सारी मेहनत बेकार हो गयी । बाद में बंगाल के राज्यपाल भी हुए । मैं अपनी कलकत्ता ट्रीप में राज भवन जाकर उनसे मिला था। क्या खातिरदारी उन्होंने की थी, अभी तक नहीं भूला हूँ । वे भी जब आरा आते थे तो कोठी पर अपने काफिले के साथ जरूर पहुँचते थे ।

❖

डॉ० जगदीश चंद्र जैन
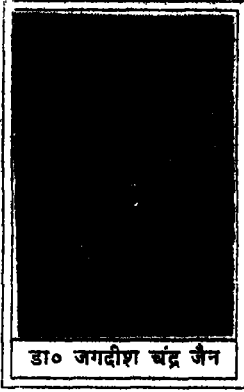
डा० जगदीश चंद्र जैन

भारत सरकार द्वारा इस वर्ष 1998 में सचित्र स्पेशल पोस्टेज स्टैम्प और फर्स्ट-डे-कवर निकाल कर डॉ० जगदीश चंद्र जैन नाम देश में उछाल कर न्यायपूर्ण ही कार्य किया है।

जगदीश चन्द्र जी 1935 में हमारे शिक्षक, बिहटा चीनी मिल के दिनों साथ रहते थे ।

तब से बराबर उनसे हमारा सम्पर्क घनिष्ठ बना रहा । मैं कई बार उनके घर, शिवाजी पार्क, बम्बई गया, उसके पूर्व वे सपरिवार जैन धर्मशाला में रहते थे, उस समय भी । बाद में वे वैशाली इन्स्टीच्यूट के डाइरेक्टर होकर बिहार आए ।

विद्वता में वे अद्‌भुत थे । देश-विदेश अनेक स्थानों पर वे अपने अध्ययन और अध्यापन को लेकर जहाँ तहाँ जाते-आते रहे । गाँधी जी की जघन्य हत्या के सिलसिले में वे एक महत्वपूर्ण गवाह भी थे ।

देर से ही सही पर भारत सरकार ने बिल्कुल उचित निर्णय लेकर उनका सम्मान किया है ।

सत्याग्रह के दिनों में कुछ बरतानवी (ब्रिटिश) शासकों का हमारे परिवार के प्रति सद्भाव

1. मि० अन्डोर्ज आई. सी. एस. जानते थे कि हमारा परिवार छिपे छिपे कांग्रेस के लिए डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० अनुग्रह नारायण को आर्थिक सहयोग देता रहता है, पर जब वे आरा के कलक्टर थे, पिताजी को बुलाकर तीन बन्दूकें और रिवाल्वर परिवार वालों को लाइसेंस यह कहकर दिए, मैं तुम्हारा कद्र करता हूँ, तुम जिले के बड़े जमीन्दार हो, परोपकारी हो, तुम्हारे पास तो फायर आर्म्स होने ही चाहिए।

2. सन् 1942 के आन्दोलन में मुझ पर कांग्रेस का साथ देने के लिए गिरफ्तारी का आदेश जिला कलक्टर को देते ही आरा के सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस और एस. डी. ओ. ने पिताजी को कन्फिडेन्सियल सूचना दी कि सुबोध कुमार को तत्काल अन्डर ग्राउण्ड कर दीजिए, हम लोग एक घन्टे में गिरफ्तार करने आ रहे हैं।

3. मैं दार्जिलिंग की पहाड़ियों में छिपा रहा पर वहाँ भी एक एंग्लों इंडियन सार्जेन्ट मेजर को कलक्टर ने भेजा। वहाँ वह मेरा मेहमान रहा। सार्जेन्ट ने मुझे गिरफ्तार नहीं किया हाँ हमारी नई " डॉज मोटर कार " जप्त करके ले गया। जिसे औने-पौने में कलक्टर ने नीलाम कर दिया।

4. 1935 ई० में मैं आरा जिला स्कूल का मैट्रिक का विद्यार्थी था। स्कूल के मुस्लिम लीडर हेडमास्टर ने साजिश करके मुझे स्कूल से रिस्टिकेट कर दिया। ऑफिसियल इंक्वायरी कमीशन स्कूल में बैठा जिसके अध्यक्ष आरा के अंग्रेज कलक्टर थे। चार्ज काँग्रेसी झंडा स्कूल में फहराने के कारण हिन्दू मुस्लिम छात्रों के बीच घोर मारपीट स्कूल के हाते में कराया और हेडमास्टर को जान से मारने की साजिश की। मिस्टर प्रीडों अंग्रेज कलक्टर ने 2 घंटे तक हमसे जिरह की और कई लोगों की गवाहियाँ करवाई, अन्त में निर्दोश घोषित कर मुझे मुक्त कर दिया। मैंने इम्तहान दिया और पास कर गया। बाद में नगर में अफवाह फैली की वह पू० पिता जी का मित्र था।

जो भी हो पर पिताजी, चाचाजी, श्री जैन सिद्धान्त भवन तथा श्री जैन बाला विश्राम के सभी प्रशंसक थे और इसका प्रभाव तो बहुत था ही, ब्रिटिश भारतीय सिविल सर्विस के अफसरों पर।

सभी देखते थे कि देश के सभी बड़े नेता हमारे मेहमान रहते हैं। हम कट्टर जैन हैं- हिंसा तो कर ही नहीं सकते।